सारंगी

2

हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

© NCERT not to be republished

0222 – सारंगी
कक्षा 2 के लिए हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक

ISBN 978-93-5292-438-7

प्रथम संस्करण
जून 2023 जयेष्ठ 1945

पुनर्मुद्रण
मार्च 2024 चैत्र 1946

PD 400T SU

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2023

₹ 65.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग , नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित तथा अमित प्रिंटिंग प्रैस, डी–12 एवं 13, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट–ए, मथुरा (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फ़ोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशन की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन. सी. ई. आर. टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नई दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708

108, 100 फ़ीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III स्टेज
बेंगलुरु 560 085 फ़ोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पानीहटी
कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781 021 फ़ोन : 0361-2676869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य संपादक	:	*श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	*अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक (प्रभारी)	:	*अमिताभ कुमार*
संपादन सहायक	:	*ऋषिपाल सिंह*
सहायक उत्पादन अधिकारी	:	*सुनील कुमार*

आवरण, चित्रांकन एवं लेआउट
ग्रीन ट्री डिजाइनिंग स्टूडियो प्रा. लि.

© NCERT not to be republished

आमुख

भारत में बच्चों के सबसे प्रारंभिक वर्षों में उनके सर्वांगीण विकास को पोषित करने की एक समृद्ध परंपरा रही है। ये परंपराएँ परिवार, रिश्तेदार, समुदाय, समाज एवं देखभाल व सीखने के औपचारिक संस्थानों के लिए पूरक की भूमिका निभाती हैं। बच्चे के जीवन के पहले आठ वर्षों में, पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचरित संस्कारों के विकास को समाहित करते इस समग्र दृष्टिकोण का उनके विकास, स्वास्थ्य, व्यवहार और उत्तरवर्ती वर्षों में संज्ञानात्मक क्षमताओं के प्रत्येक पक्ष पर आजीवन एक महत्वपूर्ण व सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

बच्चों के जीवनपर्यंत विकास में प्रारंभिक वर्षों के महत्व को ध्यान में रखते हुए, *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* (एन.ई.पी. 2020) ने 5 + 3 + 3 + 4 पाठ्यचर्या एवं शिक्षाशास्त्रीय संरचना की परिकल्पना की है जो पहले पाँच वर्षों (3–8 आयु वर्ग) पर समुचित ध्यान देती है, जिसे आधारभूत स्तर की संज्ञा दी गई है। कक्षा 1 व 2 भी आधारभूत स्तर का एक अभिन्न अंग हैं। तीन से छह वर्ष के बच्चों के समग्र विकास की आधारशिला के प्रथम चरण 'बालवाटिका' से आगे बढ़ते हुए व्यक्ति का आजीवन सीखना, सामाजिक एवं भावनात्मक व्यवहार और समग्र स्वास्थ्य इसी महत्वपूर्ण आधारभूत स्तर के अंतराल में प्राप्त अनुभवों पर निर्भर करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति इस स्तर के लिए एक विशिष्ट राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा की संस्तुति करती है, जो न केवल आधारभूत स्तर पर उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करने में, अपितु विद्यालयी शिक्षा के अगले चरणों में इसकी गतिशीलता सुनिश्चित करने के लिए भी संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था का मार्ग प्रशस्त करने में सहायक होगी। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के अंतर्गत उल्लिखित सिद्धांतों और उद्देश्यों, तंत्रिका विज्ञान एवं प्रारंभिक बाल्यकाल शिक्षा सहित विभिन्न विषयों के अनुसंधान, व्यावहारिक अनुभव व संचरित ज्ञान तथा राष्ट्र की आकांक्षाओं व लक्ष्यों के आधार पर, आधारभूत स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एफ.एस.) का विकास किया गया जिसका विमोचन 20 अक्तूबर 2022 को किया गया था। तत्पश्चात एन.सी.एफ.-एफ.एस. के पाठ्यचर्या संबंधी उपागम के अनुरूप पाठ्यपुस्तकों की संरचना की गई। ये पाठ्यपुस्तकें कक्षा में सीखने और परिवार तथा समुदाय में सार्थक अधिगम-संसाधनों के साथ सीखने को महत्व देते हुए बच्चों के व्यावहारिक जीवन से जुड़ने का प्रयास करती हैं।

आधारभूत स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा *तैत्तिरीय उपनिषद्* में वर्णित 'पंचकोश विकास' (मानव व्यक्तित्व के पाँच कोशों का विकास) की आधारभूत अवधारणा से संबद्ध है। एन.सी.एफ.-एफ.एस. सीखने के पाँच आयामों, जैसे— शारीरिक एवं गत्यात्मक, समाज-संवेगात्मक, भाषा एवं साक्षरता,

not to be republished © NCERT

संस्कृति तथा सौंदर्यबोध को पंचकोश की भारतीय परंपरा के साथ जोड़ती है। ये पाँच कोश इस प्रकार से हैं— अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश और आनंदमय कोश। इसके अतिरिक्त, यह घर पर अर्जित बच्चों के अनुभवजन्य ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण को एकीकृत करने पर भी ध्यान केंद्रित करता है जिन्हें विद्यालय परिसर में विकसित किया जाएगा।

आधारभूत स्तर की पाठ्यचर्या, जिसमें कक्षा 1 और 2 भी समाहित हैं, सीखने के खेल आधारित उपागम को समुचित रूप से व्याख्यायित करती है। इस दृष्टिकोण के अनुसार पाठ्यपुस्तकें सीखने की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंश हैं, तथापि यह समझना भी आवश्यक है कि पाठ्यपुस्तकें अनेक शिक्षाशास्त्रीय उपकरणों एवं पद्धतियों, जिनमें गतिविधियाँ, खिलौने, बातचीत आदि भी समाहित हैं, में से केवल एक उपकरण है। यह पुस्तकों से सीखने की प्रचलित प्रणाली से अधिक सुखद खेल आधारित एवं दक्षता आधारित अधिगम प्रणाली की ओर उन्मुख करती है जहाँ बच्चे का किसी कार्य को स्वयं करते हुए सीखना महत्वपूर्ण हो जाता है। अत: यह पाठ्यपुस्तक जो आपके हाथ में है, इस आयु वर्ग के बच्चों के लिए खेल आधारित शिक्षाशास्त्रीय उपागम को प्रोत्साहित करने वाले एक उपकरण के रूप में देखी जानी चाहिए।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक दक्षता आधारित सामग्री को सरल, रोचक और आकर्षक रूप में प्रस्तुत करने का एक प्रयास है। इस पाठ्यपुस्तक को समावेशी एवं प्रगतिशील बनाने के लिए पाठों और चित्रों की प्रस्तुति के माध्यम से अनेक रूढ़ियों को तोड़ा गया है। परंपरा, संस्कृति, भाषा-प्रयोग तथा भारतीयता समेत स्थानीय संदर्भों की बच्चों के सर्वांगीण विकास में महती भूमिका इस पुस्तक में परिलक्षित होती है। इस पाठ्यपुस्तक को बच्चों के लिए आकर्षक एवं आनंददायी बनाने का प्रयास किया गया है। पुस्तक में कला और शिल्प का बेजोड़ संयोजन है जिससे बच्चे गतिविधियों में अंतर्निहित सौंदर्यबोध की सराहना कर सकते हैं। यह पाठ्यपुस्तक बच्चों को स्वयं से संबंधित अवधारणाओं को अपने संदर्भों में समझने की स्थितिजन्य जागरूकता प्रदान करती है। यद्यपि इनमें विषय-वस्तु का बोझ कम है, तथापि ये पाठ्यपुस्तकें सारगर्भित हैं। इस पाठ्यपुस्तक में खिलौनों और खेलों के माध्यम से सीखने की अलग-अलग युक्तियों के साथ-साथ अन्य गतिविधियाँ और प्रश्न, जो बच्चों में तार्किक चिंतन और समस्या को सुलझाने की योग्यता विकसित करने के लिए प्रेरित करते हैं, को भी सम्मिलित किया गया है। इसके अतिरिक्त, पाठ्यपुस्तकों में ऐसी पर्याप्त विषय सामग्री और गतिविधियाँ भी हैं जो बच्चों में पर्यावरण के प्रति आवश्यक संवेदनशीलता विकसित करने में सहायक हैं। साथ ही ये पाठ्यपुस्तकें हमारे राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों को *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* की संस्तुतियों के अनुरूप उनके द्वारा विकसित किए जाने वाले संस्करणों में स्थानीय परिदृश्य के साथ-साथ अन्य तत्वों के समायोजन/अनुकूलन की संभावना भी उपलब्ध कराती हैं।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, इस पाठ्यक्रम और शिक्षण-अधिगम सामग्री विकसित करने के लिए गठित समिति द्वारा किए गए कठोर परिश्रम की सराहना करती है। मैं समिति की अध्यक्षा प्रो. शशि कला वंजारी तथा अन्य सभी सदस्यों को समय पर और इतने उत्कृष्ट रूप

© NCERT not to be republished

से इस कार्य को संपन्न करने के लिए साधुवाद देता हूँ। मैं उन सभी संस्थानों और संगठनों का भी आभारी हूँ, जिन्होंने इस कार्य को संभव बनाने में उदारतापूर्वक सहायता प्रदान की है। मैं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के लिए गठित राष्ट्रीय संचालन समिति के अध्यक्ष डॉ. के. कस्तूरीरंगन व इसके सदस्यों तथा मैंडेट समूह के अध्यक्ष प्रो. मंजुल भार्गव व अन्य सदस्यों के साथ ही समीक्षा समिति के सदस्यों को भी उनके समयोचित मार्गदर्शन एवं मूल्यवान सुझावों के लिए विशेष रूप से धन्यवाद देता हूँ।

एक संस्था के रूप में भारत की विद्यालयी शिक्षा में सुधार और इसके लिए विकसित अधिगम तथा शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता को निरंतर समुन्नत करने के लिए प्रतिबद्ध राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् इन पाठ्यपुस्तकों को और अधिक परिष्कृत करने के लिए अपने समस्त हितधारकों से महत्वपूर्ण टिप्पणियों और सुझावों की अपेक्षा करती है।

प्रोफेसर दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

27 जनवरी 2023
नई दिल्ली

© NCERT not to be republished

© NCERT
not to be republished

पाठ्यपुस्तक के बारे में

प्रिय शिक्षक साथियो,

यह प्रसन्नता का विषय है कि कक्षा 2 की हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक *सारंगी* भाग 2 आपके हाथ में है। *सारंगी* भाग 2 का निर्माण करते हुए मुख्य रूप से *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के दिशा-निर्देशों को ध्यान में रखा गया है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के आलोक में विकसित *बुनियादी स्तर* की पाठ्यचर्या की अनुशंसाओं को भी इस पाठ्यपुस्तक में समाहित किया गया है। आशा है कि *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* की अनुशंसाओं के अनुसार यह पाठ्यपुस्तक राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने तथा न्यायपूर्ण समाज को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। इस नीति में बच्चों की शिक्षा में भाषा और साक्षरता विकास को बहुत महत्व दिया गया है। माना जाता है कि भाषा और साक्षरता की ठोस नींव अन्य विषयों को भी दक्षतापूर्वक सीखने में सहायक होती है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 बुनियादी स्तर* (फाउंडेशनल स्टेज) पर बच्चों में भाषा के विकास के साथ-साथ सतत सीखने की कला, समस्या-समाधान, तार्किक और रचनात्मक चिंतन के विकास पर भी बहुत बल देती है। इस स्तर पर भाषा के साथ-साथ अन्य विषयों और गतिविधियों में भारतीय परंपरा, सांस्कृतिक मूल्य, राष्ट्रप्रेम, चरित्र-निर्माण, नैतिकता, करुणा, जेंडर संवेदनशीलता और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता को भी समेकित रूप में सम्मिलित करने की अनुशंसा करती है।

आप जानते हैं कि शिक्षण प्रक्रिया में पाठ्यपुस्तक केवल एक माध्यम है, बच्चों में उन अनंत क्षमताओं को विकसित करने का, जिनके बीज उनमें पहले से ही विद्यमान हैं। आप सभी से यह आग्रह है कि पाठ्यपुस्तक का उपयोग करते हुए और स्वतंत्र रूप से भी बच्चों को कक्षा-कक्ष के इर्द-गिर्द फैली अनंत प्रकृति से अवगत कराएँ, उन्हें खुद खोज-बीन करके सीखने के लिए प्रोत्साहित करें, उन्हें अपनी बात कहने के अवसर दें, सही-गलत का निर्णय न लेते हुए बच्चों के साथ एक संवाद में शामिल हों।

कक्षा 2 की हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक का निर्माण करते समय निम्न बातों का ध्यान रखा गया है—

1. पढ़ने-लिखने की शुरुआत के लिए बच्चों के जीवन से जुड़ी बातों को आधार बनाया गया है जिससे यह प्रक्रिया सहज और अर्थपूर्ण हो।

2. भाषा हमारे जीवन का अभिन्न अंग है जो संप्रेषण के साथ-साथ सोचने, समझने, प्रश्न पूछने आदि में सहायक है। रोचक बात यह भी है कि जितना अधिक भाषा का प्रयोग विभिन्न कार्यों के लिए होता है, उतनी ही तेज़ी से हमारी भाषा का विकास भी होता है। अत: इस पुस्तक में बातचीत करने, सुनकर कुछ करने, कहानी और कविताओं का आनंद लेने, नए शब्दों की पहचान के साथ खेलने, कला एवं संगीत से जुड़ी गतिविधियों में भाग लेने के अनेक अवसर अलग-अलग संदर्भों में और बार-बार दिए गए हैं।

3. इस पुस्तक में पाँच ऐसे संदर्भों को चुना गया है जो बच्चों के जीवन से जुड़े हैं— परिवार, रंग ही रंग, हरी-भरी धरती, मित्रता और आकाश।

4. सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि कक्षा में बच्चों के संदर्भों की वस्तुओं / घटनाओं / व्यक्तियों के साथ इस पुस्तक में दी गई पठन सामग्री को जोड़ा जाए। इस हेतु सुझाव भी दिए गए हैं।

5. प्रत्येक पाठ में लगभग सभी दक्षताओं का ध्यान रखा गया है। बच्चों के दृष्टिकोण से पाठों को रोचक बनाने के लिए कार्यों में विविधता लाने का प्रयास किया गया है। मुख्यत: पाठ्यचर्या के लक्ष्य एवं दक्षताओं को ध्यान में रखते हुए इन पाठों का चुनाव एवं सृजन किया गया है।

बुनियादी स्तर (फाउंडेशनल स्टेज) के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2022) के अनुसार भाषा सीखने-सिखाने के लिए भाषा-शिक्षण के चारों स्तंभों पर कार्य करना महत्वपूर्ण है। ये चार स्तंभ हैं— मौखिक भाषा का विकास, शब्द पहचान, पढ़ना और लिखना।

मौखिक भाषा का विकास— बेहतर ढंग से सुनकर समझना, मौखिक शब्दावली का विकास और साथियों व जानकार अन्य लोगों (जैसे — बड़े विद्यार्थी, शिक्षक, माता-पिता) के साथ बातचीत और चर्चा का उपयोग सीखने के लिए करना।

शब्द पहचान— इसमें प्रिंट जागरूकता और ध्वनि जागरूकता, प्रतीकों और ध्वनि का संबंध, लिखित शब्द पहचानना और शब्दों को लिखना शामिल है।

पढ़ना— लिखित सामग्री से अर्थ का निर्माण करना और इसके विषय में आलोचनात्मक/ समीक्षात्मक ढंग से चिंतन करना।

लिखना— तार्किक और व्यवस्थित तरीके से विचारों या सूचनाओं की प्रस्तुति के साथ-साथ शब्दों को सही ढंग से लिखने की क्षमता।

इस पुस्तक में प्रत्येक विषय के इर्द-गिर्द चुनी गई पठन सामग्री में इन चार स्तंभों को निम्न प्रकार से बाँटा गया है—

मौखिक भाषा का विकास

पुस्तक में अलग-अलग भाग हैं, जैसे— 'चित्र और बातचीत', 'कविता', 'आओ कुछ बनाएँ', 'खेल-खेल में' और 'खोजें-जानें'। इन सभी का प्रमुख उद्देश्य बच्चों में मौखिक भाषा का विकास करना है। इसके साथ-साथ बच्चे मिलकर कुछ बनाते समय एक-दूसरे के विचारों को सुनेंगे, खोजें-जानें क्रियाकलापों के दौरान अपने परिवार एवं समुदाय के लोगों के साथ बातचीत कर कुछ समझने का प्रयास करेंगे आदि। उदाहरण के लिए, 'परिवार' (इकाई 1) के चित्र को देखकर बच्चे आपस में अपने-अपने अनुभवों को साझा करेंगे, अनुमान लगाएँगे, तर्क करेंगे आदि।

2024-25

© NCERT not to be republished

मौखिक भाषा के विकास का एक महत्वपूर्ण आयाम है, बच्चों को बिना किसी अवरोध के बोलने के अवसर प्रदान करना। इसके लिए भाषा शिक्षण के दौरान आवश्यक है कि हम बच्चों की भाषा और उनके पूर्व अनुभव को स्वीकार करें और उन्हें अपनी बात अपनी भाषा में कहने के लिए प्रोत्साहित करें। बातचीत के अंतर्गत दी गई गतिविधियों का एक और महत्वपूर्ण पहलू है, बहुभाषिकता। अर्थपूर्ण सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में आवश्यक है कि बच्चे अपनी भाषा में खुलकर अपने विचार रख सकें तथा अपनी भाषा का प्रयोग करते हुए ही लक्षित भाषा को सीखें। कक्षा की हर गतिविधि में इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है।

शब्दों को पहचानना एवं गढ़ना

कक्षा 1 में बच्चों ने अक्षर और ध्वनि का अंतर-संबंध समझते हुए शब्दों को गढ़ना सीख लिया है। ऐसा हो सकता है कि कुछ बच्चों को कुछ अक्षर पहचानने में कठिनाई हो। इस स्थिति में कक्षा 2 में दिए गए पाठों से सरल शब्दों से पहली, दूसरी, अंतिम ध्वनि का अभ्यास करवाया जा सकता है। इसी के साथ शब्द-पहेलियाँ भी दी जाएँ, तो बच्चों को सीखने में आनंद आएगा। इस बात को ध्यान में रखते हुए प्रथम इकाई ‘परिवार’ में इन दोनों अभ्यासों को सम्मिलित किया गया है। कक्षा की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए ऐसे और कार्य नियमित रूप से करवाए जा सकते हैं। कक्षा 2 में संयुक्ताक्षर जैसे कि ‘क्ष’, ‘त्र’, ‘ज्ञ’ और ‘श्र’ पर भी कुछ अभ्यास दिए गए हैं। साथ ही साथ अनुस्वार, चंद्रबिंदु वाले शब्दों को भी सम्मिलित किया गया है।

पढ़ना

‘सुनें कहानी’, ‘मिलकर पढ़िए’ और ‘कविता’ आदि भागों में बच्चों को पढ़ने की विविध दक्षताओं को विकसित करने के अवसर हैं, जैसे— मिलकर पढ़ते समय बच्चे शिक्षक के साथ मिलकर और बाद में अपने मित्रों के साथ मिलकर पढ़ेंगे। पढ़ते समय कहानी के चित्रों को देखकर अनुमान लगाना, फिर कहानी सुनकर बातचीत करना, शब्दों को चित्र रूप में समझना, कुछ प्रश्नों के उत्तर देना आदि से बच्चे ‘पढ़ना माने अर्थ गढ़ना’ संकल्पना को आत्मसात कर पाएँगे। उदाहरण के लिए, ‘माला की चाँदी की पायल’ पाठ में प्रश्न दिया गया है कि ‘पायल उतारने के अतिरिक्त माला और क्या कर सकती थी?’ इस प्रश्न का उत्तर सोचते हुए बच्चे पाठ पढ़ने के साथ अपना अर्थ भी गढ़ सकते हैं।

लिखना

हम सभी जानते हैं कि लिखने की शुरुआत चित्रों से होती है और फिर चित्रों के साथ बच्चे शब्द और धीरे-धीरे वाक्य लिखना आरंभ करते हैं। यहाँ प्रयास किया गया है कि बच्चे अपने अनुभवों और विचारों को चित्रों के माध्यम से बताएँ और फिर उन पर कुछ शब्द शिक्षक की सहायता से लिखें। अन्य भाग, जैसे— ‘कविता’, ‘सुनें कहानी’ और ‘मिलकर पढ़िए’ आदि में भी लिखने के अवसर हैं— यहाँ लिपि को समझने और लिखने पर भी बल दिया गया है।

© NCERT not to be republished

बच्चों में इन सभी दक्षताओं के विकास के लिए यह आवश्यक है कि इन चारों स्तंभों पर नियमित रूप से कार्य हो। अत: इस पाठ्यपुस्तक में पाँच संदर्भों के इर्द-गिर्द पढ़ने, लिखने, शब्द पहचानने और बातचीत के विविध आयामों को सम्मिलित किया गया है। आइए, इन आयामों के बारे में सविस्तार चर्चा करें।

सृजनशील शिक्षक दी गई पठन-पाठन सामग्री को अत्यंत रोचक और प्रभावी तरीके से बच्चों के साथ मिलकर रच सकते हैं। यहाँ बस कुछ सुझाव हैं। हमें आशा है कि आप अपनी कक्षा में विविधता लाएँगे, बच्चों के संदर्भों के आधार पर शब्दों का खेल, खेल गीत, कविताएँ और कहानियाँ शामिल करेंगे। विविध संसाधनों की सहायता से कक्षा को और भी रोचक बनाएँगे।

बातचीत

इस पुस्तक में लिए गए पाँचों संदर्भों में बातचीत की ढेर सारी संभावनाएँ हैं। उदाहरण के लिए 'रंग-ही -रंग' में आप बच्चों से नीचे दिए गए प्रश्नों से बातचीत शुरू कर सकते हैं— (जैसे-जैसे बच्चों के उत्तर आएँगे, उस तरह से बातचीत को आगे बढ़ाया जा सकता है।)

आपका सबसे मनपसंद रंग कौन-सा है? क्यों? 'नीले' रंग का नाम सुनने पर आपको किन-किन वस्तुओं के नाम याद आते हैं? हमारे इर्द-गिर्द कौन-कौन से रंग हैं? अगर सारे रंग गायब हो जाएँ तो कैसा लगेगा? अगर केवल एक ही रंग हो तो दुनिया कैसी होगी?

बातचीत की यह गतिविधि हर दिन करवाई जा सकती है। एक दिन में सभी बच्चों को अवसर नहीं मिल पाएगा, अतः प्रतिदिन यह गतिविधि कक्षा में करवाएँ। समय-सारिणी में समूह समय (वृत्त समय) के लिए जगह है। उस समय इस तरह की बातचीत को जगह दी जा सकती है।

सुनें कहानी

इसके अंतर्गत दी गई कहानियों को शिक्षक बच्चों को एक से अधिक बार पढ़कर सुनाएँ। कुछ तरीके इस प्रकार हो सकते हैं—

कहानी पढ़कर सुनाने से पूर्व बच्चों से कहानी के चित्र देखकर कहानी गढ़ने को कहिए। यह कार्य आप बच्चों के छोटे समूह बनाकर करवा सकते हैं। कहानी पढ़ते समय एक या दो प्रश्न बीच में बच्चों से पूछें, जैसे 'आपको क्या लगता है कि कहानी में आगे क्या होगा?' आदि। कहानी के बाद दिए गए 'बातचीत के लिए' प्रश्नों पर बच्चों से बातचीत कीजिए। यहाँ कोई उत्तर सही या गलत नहीं है, बल्कि प्रयास यह रहे कि बच्चे अपने मन की बात या उन्हें जो समझ में आया वह निःसंकोच कह सकें।

बातचीत के दौरान जो शब्द कहानी और बातचीत में बार-बार आ रहे हैं, उन शब्दों को बच्चों से बोर्ड पर लिखने के लिए कहिए, अन्य बच्चों को पढ़ने के लिए कहिए। कक्षा 2 में बच्चों से अपेक्षा है कि वे एक शब्द लिखने के साथ-साथ वाक्य पूरा करने से लेकर कुछ वाक्यों को अपने आप लिखना सीख जाएँगे। प्रत्येक इकाई में रिक्त स्थान की पूर्ति करने से लेकर प्रश्नों के उत्तर कॉपी में लिखवाने तक का अभ्यास सम्मिलित है।

© NCERT not to be republished

मिलकर पढ़िए

इस हिस्से में उन कहानियों का चुनाव किया गया है, जिनमें दोहराव है। दोहराव वाक्यों के स्तर पर है। कहानी के कथानक में भी दोहराव है। आपने यह देखा होगा कि दोहराव में बच्चों को आनंद आता है। दोहराव से बच्चों को अनुमान लगाने में भी सुविधा होती है। इन कहानियों को पढ़ने से पूर्व चित्र दिखाकर बच्चों से बातचीत कीजिए। फिर उँगली रखते हुए बच्चों के साथ मिलकर कहानी पढ़िए। जिन शब्दों का दोहराव है, उन्हें बोर्ड पर लिख दीजिए। उनके चित्र बन पाएँ तो अवश्य बनाइए। फिर, कहानी को पुन: पढ़िए और दूसरी बार पढ़ते समय दोहराव वाले वाक्यों पर बच्चों को अनुमान लगाने को कहिए। कुछ दिनों बाद, छोटे समूह में बच्चों को मिलकर पढ़ने के लिए कहिए। उनका अवलोकन कीजिए। उन्हें जहाँ-जहाँ सहायता की आवश्यकता है, उन शब्दों को नोट कर लीजिए। अगली कक्षा में इन शब्दों को आप 'शब्दों का खेल' में शामिल करके इन पर गतिविधियाँ करवा सकते हैं। इन सभी कार्यों का उद्देश्य यह है कि बच्चे दी गई पठन सामग्री को धीरे-धीरे पढ़ना सीख जाएँ। हमें याद रखना होगा कि हर बच्चे के सीखने का तरीका और गति अलग-अलग होती है। हम उन पर किसी भी प्रकार का दबाव बिल्कुल भी न डालें। हाँ, उन्हें सार्थक अवसर अवश्य प्रदान करें और उनका उत्साहवर्धन करें। इस पुस्तक में 'मिलकर पढ़ने' के कई अवसर हैं— ऐसा इसीलिए क्योंकि इन अवसरों से ही बच्चे पढ़ना सीखते हैं। आप भी पुस्तकालय से स्तर के अनुकूल पुस्तकें बच्चों को दें।

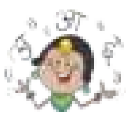

शब्दों का खेल

कक्षा 1 की तरह ही कक्षा 2 की इकाई 1 में ध्वनि और अक्षरों पर कार्य दिए गए हैं। यहाँ से आगे बढ़ते हुए उलट-पुलट कर दिए गए अक्षरों से सार्थक शब्द बनाना, शब्दों को सही क्रम में लिखकर वाक्य बनाना आदि की गतिविधियाँ दी गई हैं। दी गई कहानी को पूरा करना या चित्र के आधार पर कहानी या कुछ वाक्य लिखना बच्चों से अपेक्षित है। इसके लिए महत्वपूर्ण है कि उन्हें ऐसे अवसर बार-बार दिए जाएँ।

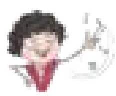

आनंदमयी कविता

बच्चे हाव-भाव के साथ, अभिनय करते हुए कविताओं को गाएँ, जैसा कि हम अपनी कक्षाओं में हमेशा से ही करते आ रहे हैं। कविताओं को चार्ट पेपर पर बड़े अक्षरों में लिख दें। फिर गाते समय बच्चे इन्हें देखकर, शब्दों पर उँगली रखकर भी गा सकते हैं। प्राथमिक स्तर पर कविताओं का आनंद लेना अति आवश्यक है। इसके सहारे ही कविता शिक्षण-अधिगम के रास्ते पर प्रसन्नतापूर्वक आगे बढ़ा जा सकता है। उसके साथ-साथ कविताओं पर चर्चा करना, नई कविताएँ गढ़ना, कविताओं में आए शब्दों के साथ कार्य करना, कविता की पंक्तियों को आगे बढ़ाना आदि के अवसर भी दिए गए हैं।

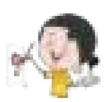

चित्रकारी और लेखन

बच्चे चित्रों द्वारा स्वयं के विचारों और भावनाओं को व्यक्त करते हैं। इन चित्रों में हमें बच्चों की अवलोकन क्षमता, विचार करने के कौशलों के कई प्रमाण मिलते हैं। इसी आशा से लिखना सीखने

© NCERT not to be republished

की प्रक्रिया में चित्रों का महत्वपूर्ण योगदान है। इसीलिए कक्षा 1 और 2 की पुस्तकों में 'चित्रकारी और लेखन' को सम्मिलित किया गया है। प्रत्येक गतिविधि संदर्भ आधारित है, उस पर कहानी या कविताएँ बच्चे पढ़ चुके हैं, बातचीत कर चुके हैं। उसके बाद उन्हें चित्रकारी और लेखन का कार्य दिया गया है। बच्चों से आप ऐसे भी किसी कविता या कहानी या अपने मन से चित्र बनाने के लिए कह सकते हैं। बच्चों को वाक्य लिखने के लिए प्रोत्साहित कीजिए। प्रयास यह हो कि वे अपने विचारों की अभिव्यक्ति करें। अपनी बातों को लिखने का प्रयास करें। बच्चों के छोटे समूह में भी ये गतिविधियाँ आप करवा सकते हैं। बच्चे एक-दूसरे से भी बहुत कुछ सीखते हैं।

खोजें-जानें

भाषा शिक्षण को बच्चों के संदर्भ से जोड़ने, संदर्भ से सीखने के अवसर प्रदान करने के लिए इन गतिविधियों को शामिल किया गया है। इनसे बच्चों में अपने समुदाय की समझ बढ़ेगी। अपने घर और आस-पड़ोस का भी वे महत्व समझेंगे।

आओ कुछ बनाएँ

इन गतिविधियों का उद्देश्य है कि बच्चे 'जटिल कार्य के लिए मौखिक निर्देशों को समझें और उसी कार्य के लिए दूसरों को स्पष्ट मौखिक निर्देश भी दे सकें।' इस कार्य में कला और भाषा के एकीकरण का प्रयास किया गया है।

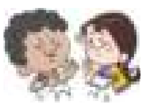

खेल-खेल में

यहाँ पर खेल गीत गाना, खेलना, अभिनय करना आदि सम्मिलित किए गए हैं। खेल-खेल में निर्भीक अभिव्यक्ति कर पाने के अवसर देने से बच्चों की झिझक समाप्त होती है। वे स्वयं के अनुभव को प्रसन्नता से सबके साथ साझा करने लगते हैं। शायद सीखने-सिखाने में यह सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव है।

इस पुस्तक में कुछ अन्य रोचक गतिविधियाँ भी दी गई हैं, जैसे— 'झटपट कहिए', 'आओ बूझें पहेली' आदि। शिक्षक/शिक्षिकाएँ अपने स्तर पर भी इस प्रकार की कुछ और सामग्री खोजें, स्वयं तैयार करें और उपयोग में लाएँ। इन सब के साथ-साथ एक सतत चलने वाला आवश्यक कार्य यह है कि पाठ्यपुस्तक की प्रत्येक इकाई पर कार्य करते हुए शिक्षक/शिक्षिकाएँ स्वयं और बच्चों की सहायता से कुछ अधिगम-शिक्षण सामग्री (एल.टी.एम.) बनाते रहें और उन्हें कक्षा की दीवार पर लगाएँ या अन्य उपयुक्त तरीके से बच्चों के लिए उपलब्ध रखें और उनका उपयोग भी शिक्षण प्रक्रिया में करें। प्रत्येक इकाई में नई सामग्री की आवश्यकता होगी। उपलब्ध सामग्री में निश्चित रूप से कुछ पुस्तकें भी होनी चाहिए और नियमित रूप से बच्चे पुस्तकों के साथ काम करें, समय-सारिणी में इसकी जगह हो।

हमें पूरा विश्वास है कि हमारे शिक्षक/शिक्षिकाएँ इस पाठ्यपुस्तक की सामग्री का इसमें दिए उद्देश्यों और निर्देशों को ध्यान में रखते हुए रचनात्मक उपयोग करेंगे जिससे शिक्षण प्रभावी होगा और बच्चे आनंद के साथ भाषा सीखेंगे।

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

परामर्श

दिनेश प्रसाद सकलानी, *निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

मार्गदर्शन

शशिकला वंजारी, *पूर्व कुलपति*, एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय, मुंबई, महाराष्ट्र
अध्यक्ष, पाठ्यक्रम एवं अधिगम-शिक्षण सामग्री विकास समिति
सुनीति सनवाल, *आचार्य* एवं *अध्यक्ष*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
सदस्य समन्वयक, पाठ्यक्रम एवं अधिगम-शिक्षण सामग्री विकास समिति

सहयोग

कविता बिष्ट, *मुख्याध्यापिका*, केंद्रीय विद्यालय, रा.शै.अ.प्र.प. परिसर, नई दिल्ली
चमन लाल गुप्त, *आचार्य* एवं *पूर्व अध्यक्ष*, हिंदी विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला, हिमाचल प्रदेश
चोन्हास ओराव, *प्रभारी प्रधानाचार्य*, राजकीय माध्यमिक विद्यालय, जुरिआ, लोहरदागा, झारखंड
नम्रता दत्त, *प्रधानाचार्य* (सेवानिवृत्त), *संकुल प्रमुख*, गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश
नरेंद्र सिंह निहार, *पी.जी.टी* (हिंदी), राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सी ब्लॉक, संगम विहार, दिल्ली
निशा बुटोलिया, *सहायक आचार्य*, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलुरु
नीलकंठ कुमार, *सहायक आचार्य* (हिंदी), सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
पटेल राकेश कुमार चंद्रकांत, हेड *टीचर*, नवा नदीसर प्राथमिक शाला, ब्लॉक गोधरा, पंचमहल, गुजरात
प्रिया यादव, *जूनियर प्रोजेक्ट फैलो*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
बिनय पटनायक, *शिक्षा विशेषज्ञ*, झारखंड
याचना गुप्ता, *वरिष्ठ परामर्शदाता*, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
यासमीन अशरफ, *वरिष्ठ परामर्शदाता*, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
रमेश कुमार, *सह आचार्य*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
विजय कुमार चावला, *पी.जी.टी.* (हिंदी), रा.मा.स.व.मा. विद्यालय, ग्योंग, जिला कैथल, हरियाणा
विनोद 'प्रसून', *हिंदी विभागाध्यक्ष*, दिल्ली पब्लिक स्कूल, ग्रेटर नोएडा

© NCERT not to be republished

सुमन कुमार सिंह, *मुख्य अध्यापक*, उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय, कौड़िया बसंती, भगवानपुर हाट, सिवान, बिहार
सैयद मतीन अहमद, *आचार्य*, एस.सी.ई.आर.टी., तेलंगाना

समीक्षा समिति

के.वी. श्रीदेवी, *सहायक आचार्य*, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
गजानन लोंढे, *कार्यकारी निदेशक*, संवित रिसर्च फाउंडेशन, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलुरु
ज्योत्स्ना तिवारी, *अध्यक्ष* एवं *आचार्य*, जेंडर अध्ययन विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
भरतभाई धोकई, *निदेशक*, कच्छ कल्याण संघ, समर्थ भारत, कच्छ, गुजरात
भारती कौशिक, *सह आचार्य*, सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
मंजुल भार्गव, *सदस्य*, राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा के लिए गठित राष्ट्रीय संचालन समिति एवं *अध्यक्ष*, मैंडेट ग्रुप
रंजना अरोड़ा, *आचार्य* एवं *अध्यक्ष*, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
शशिकला वंजारी, *पूर्व कुलपति*, एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय, मुंबई, महाराष्ट्र
अध्यक्ष, पाठ्यक्रम एवं अधिगम-शिक्षण सामग्री विकास समिति
सी.वी. शिमरे, *आचार्य*, गणित एवं विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
सुनीति सनवाल, *आचार्य* एवं *अध्यक्ष*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

सदस्य समन्वयक

नीलकंठ कुमार, *सहायक आचार्य* (हिंदी), सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
उषा शर्मा, *आचार्य*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

© NCERT not to be republished

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, के. कस्तूरीरंगन, *अध्यक्ष*, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के लिए गठित राष्ट्रीय संचालन समिति व समिति के सभी सदस्यों; मंजुल भार्गव, *सदस्य*, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के लिए गठित राष्ट्रीय संचालन समित और *अध्यक्ष*, मैंडेट ग्रुप व इस समूह के सभी सदस्यों; दिव्यांशु दवे, सेंटर फॉर इनर एक्सीलेंस के *संस्थापक निदेशक*, *पूर्व महानिदेशक* और *कुलपति* (प्रभारी) बाल विश्वविद्यालय, गांधी नगर, गुजरात के तथा श्रीधर श्रीवास्तव, *संयुक्त निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प. के प्रति इस पुस्तक की समीक्षा में बहुमूल्य योगदान के लिए आभार व्यक्त करती है। परिषद् अमरेन्द्र प्रसाद बेहेरा, *संयुक्त निदेशक*, सी.आई.ई.टी. रा.शै.अ.प्र.प. के प्रति भी आभार व्यक्त करती है, जिन्होंने हर स्तर पर पाठ्यपुस्तक निर्माण की प्रक्रिया को गति प्रदान की।

इस पुस्तक में रचनाओं को सम्मिलित करने की स्वीकृति देने के लिए परिषद सभी रचनाकारों व परिजनों एवं प्रकाशकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है। रचनाओं के प्रकाशनार्थ अनुमति देने के लिए शशि सबलोक (नीमा की दादी, तालाब), दिविक रमेश (घर), प्रकाशक, तूलिका प्रकाशन, चेन्नई (ऐनी बेसंट द्वारा रचित माला की चाँदी की पायल, *काम* पुस्तक से 'नर्तक' एवं 'माली', *श्यामपट्ट* पुस्तक से 'फूल'), अनुभव राज (माँ), गीता धर्मराजन (थाथू और मैं, कथा प्रकाशन), प्रकाशक, एकलव्य प्रकाशन, भोपाल (चींटा, पोषम पा भई पोषम पा), नरेश सक्सेना (टिल्लू जी), दिवाकर भार्गव (नटखट दिवाकर), इंदु हरिकुमार (तीन दोस्त), देविका रंगाचारी (दुनिया रंग-बिरंगी), बालस्वरूप राही (कौन), समीरा जिया कुरेशी (बैंगनी जोजो), दीपा बालसावर (बीज), सत्यनारायण लाल (किसान), प्रकाशक, भारत ज्ञान-विज्ञान समिति (स्नेहलता शुक्ला द्वारा 'मूली' रचना के लिए), प्रकाशक, इकतारा (बरसात और मेंढक, जगदीश जोशी द्वारा रचित शेर और चूहे की दोस्ती), आकांक्षा द्विवेदी (सोहनलाल द्विवेदी जी की रचना 'उठो उठो!' के लिए), मीरा भार्गव (खेल सन्ध्या), श्याम सुशील, दिल्ली (हाथी साइकिल चला रहा था), आस्तिक सिन्हा (डरो मत), एस.सी.ई.आर.टी., उत्तर प्रदेश (चार दिशाएँ), आकिको हायाशी (मूल रचनाकार) एवं मंजुला माथुर (हिंदी अनुवाद — चंदा मामा, सीबीटी प्रकाशन), राजेश जोशी (गिरे ताल में चंदा मामा), मोहम्मद साजिद खान (चाँद की रोटी), मनोज कुमार (सबसे बड़ा छाता) एवं प्रकाशक: रूम टू रीड इंडिया ट्रस्ट, आनंदवर्धन शर्मा (श्रीप्रसाद जी की रचनाएँ 'बात ज़रा-सी', 'टिक-टिक', 'काली-भूरी', 'देखो ऊपर उड़ा जा रहा', 'बादल'), प्रकाशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली (फिर फुर्र!) एवं बच्चों की सुरक्षा से संबंधित सामग्री के लिए अर्पण के प्रति परिषद आभारी है।

पुस्तकों के विकास के विभिन्न चरणों में सहयोग के लिए साकेत, *वरिष्ठ परामर्शदाता*, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; ऋचा प्रसाद, *वरिष्ठ परामर्शदाता*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; तरुण कुमार नोंगिया, *ग्राफ़िक डिज़ाइनर* (संविदा), राष्ट्रीय

© NCERT not to be republished

साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; मोहम्मद आतिर, *ग्राफ़िक डिज़ाइनर* (संविदा), राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; दिनेश वशिष्ट, संपादक (संविदा) और मोहन, *सहायक संपादक* (संविदा), प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; प्रियंका, *डी.टी.पी ऑपरेटर* (संविदा), प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; गिरीश, *डी.टी.पी ऑपरेटर* (संविदा), प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; आयाज़, *डी.टी.पी ऑपरेटर* (संविदा), राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ; उपासना, *डी.टी.पी ऑपरेटर* (संविदा), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; पूजा साहा, *अर्द्ध पेशेवर सहायक* (*एस. पी.ए.*), प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; सपना, *टाइपिस्ट* (संविदा), प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; जितेंद्र कुमार, *टाइपिस्ट* (संविदा), राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; चंचल, *टाइपिस्ट* (संविदा), प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; अभिनव प्रकाश, *एस.आर.ए.* (संविदा), प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; ज्योति तिवारी, *जे.पी.एफ.* (संविदा), राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; के प्रति परिषद् आभारी है।

परिषद् विशेष रूप से जीवंत और रचनात्मकता को बढ़ावा देने वाले चित्रांकन के लिए पद्मश्री दुर्गा बाई, *लोकचित्रकार* (गोंड शैली, मध्य प्रदेश) तथा ग्रीन टी डिज़ाइनिंग स्टूडियो प्रा. लिमिटेड, नई दिल्ली का आभार प्रकट करती है जिनके अथक परिश्रम से यह पुस्तक इस रूप में आ सकी है।

इस पुस्तक को प्रकाशन हेतु अंतिम रूप देने के लिए परिषद् प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प. तथा इस पुस्तक के संपादन के लिए कहकशा, *सहायक संपादक* (संविदा), पवन कुमार बरियार, *इंचार्ज*, डी.टी.पी. प्रकोष्ठ एवं उपासना और नरेश कुमार *डी.टी.पी. ऑपरेटर* (संविदा) के प्रयासों की सराहना करती है।

© NCERT not to be republished

कहाँ क्या है?

आमुख *iii*
पाठ्यपुस्तक के बारे में *vii*

इकाई 1: परिवार

1.	नीमा की दादी	2
2.	घर	7
3.	माला की चाँदी की पायल	9
4.	माँ	14
5.	थाथू और मैं	16
6.	चींटा	20
7.	टिल्लू जी	23
*	नटखट दिवाकर	25

* *तारांकित पाठ केवल पढ़ने के लिए हैं।*

© NCERT not to be republished

इकाई 2: रंग ही रंग

8. तीन दोस्त 27

9. दुनिया रंग-बिरंगी 34

10. कौन 36

11. बैंगनी जोजो 40

12. तोसिया का सपना 46

इकाई 3: हरी-भरी धरती

13. तालाब 54

14. बीज 60

15 किसान 62

16. मूली 67

17. बरसात और मेंढक 70

* उठो उठो 75

इकाई 4: मित्रता

18.	शेर और चूहे की दोस्ती	77
19.	आउट	87
*	खेल सन्ध्या	93
20.	छुपन-छुपाई	96
21.	हाथी साइकिल चला रहा था	103
*	डरो मत!	106

इकाई 5: आकाश

22.	चार दिशाएँ	109
23	चंदा मामा	111
24.	गिरे ताल में चंदा मामा	114
25.	सबसे बड़ा छाता	116
26.	बादल	122
*	फिर फुर्र!	130

इकाई 1: परिवार

चित्र और बातचीत

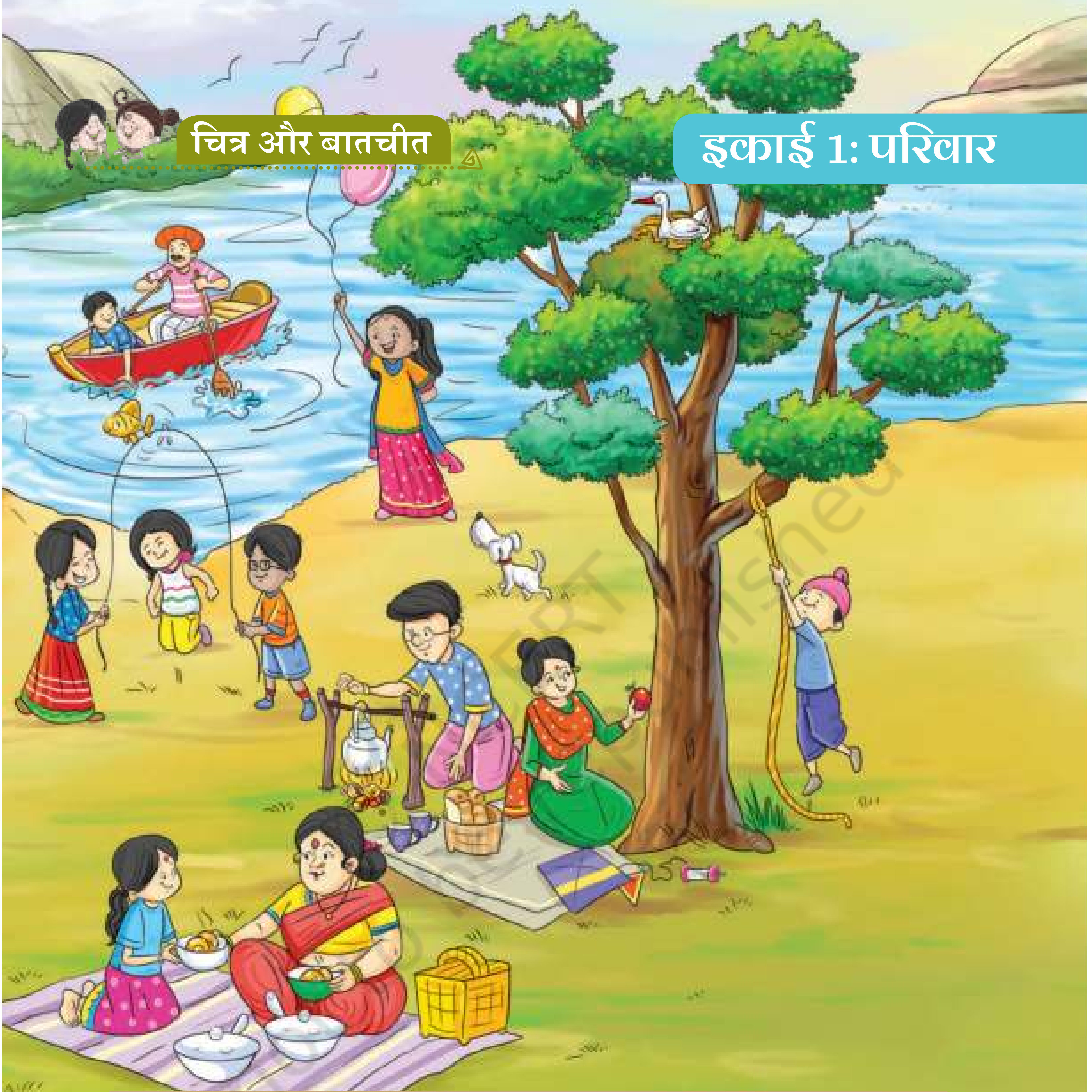

शिक्षण-संकेत – छोटे समूह में बैठकर चित्र को देखिए और आप जो देख रहे हैं, अपने मित्रों के साथ साझा कीजिए। ये सारे लोग यहाँ क्यों आए होंगे? यह जगह उन्होंने क्यों चुनी होगी? आप कहाँ जाना पसंद करेंगे? किनके साथ जाना चाहते हैं? चित्र में एक बच्ची क्यों रो रही है? क्या कोई उसकी मदद कर रहा है? कुल कितने परिवार इस जगह पर आए हैं? यह सप्ताह का कौन-सा दिन हो सकता है? शाम होते-होते इन सभी लोगों की गतिविधियों में क्या-क्या बदलाव आपको दिखाई देंगे? शिक्षक इन सभी प्रश्नों का उपयोग कर बच्चों के साथ विस्तृत चर्चा करें। बच्चों को अपनी भाषा में मन की बात कहने के लिए प्रोत्साहित कीजिए एवं उपयुक्त अवसर प्रदान कीजिए।

1

सुनें कहानी!

नीमा की दादी

नीमा दोपहर में दो बजे स्कूल से लौटती है। इस समय घर पर सिर्फ़ दादी होती हैं। वे कहीं नहीं आती-जाती हैं।

कभी बैठे-बैठे सब्ज़ी काट रही होती हैं।

उनके घुटनों में दर्द रहता है। इसलिए कभी वे अपने घुटनों में तेल मल रही होती हैं। उन्हें नीमा का बहुत इंतज़ार होता है।

© NCERT not to be republished

नीमा रोज़ खाना खाते-खाते स्कूल की बातें सुनाती है। दादी भी उससे खूब बातें करती हैं। शाम को नीमा खेलने जाती है। एक दिन नीमा खेलने के लिए जाने लगी तो दादी बोलीं, "नीमा, थोड़ी देर बैठ जा।"

"क्यों", नीमा पलटकर बोली।

"मेरा समय नहीं कटता", दादी बोलीं।

नीमा रुकी। फिर दौड़कर दादी की चप्पलें ले आई और बोली, "दादी आप भी मेरे साथ खेलने चलिए। खेलने में समय बहुत जल्दी कटता है। मैं पाँच बजे खेलने जाती हूँ पर दस मिनट में ही छह बज जाते हैं।"

दादी ज़ोर से हँसी। फिर वे दोनों खेल के मैदान की ओर चल पड़े।

— *शशि सबलोक*

© NCERT not to be republished

बातचीत के लिए

1. नीमा की दादी घर पर ही क्यों रहती हैं?
2. मैदान में जाकर दादी ने क्या किया होगा?
3. नीमा कहती है, "मैं पाँच बजे खेलने जाती हूँ पर दस मिनट में ही छह बज जाते हैं।" क्या आपके साथ भी ऐसा होता है?
4. आप स्कूल से घर जाकर अपना समय कैसे बिताते हैं?

नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

1. इस कहानी में कौन-कौन हैं?

   इस कहानी में .... और .... हैं।

2. नीमा स्कूल की बातें अपनी दादी को बताती है। आप स्कूल की बातें किसे बताते हैं?

   मैं अपनी स्कूल की बातें .... को बताती हूँ / बताता हूँ।

3. इस कहानी में नीमा और दादी हैं। 'न' और 'द' से शुरू होने वाले कुछ शब्दों की सूची बनाइए–

'न' वाले शब्द	'द' वाले शब्द
....	....
....	....
....	....

शिक्षण-संकेत – बच्चे 'दी', 'दे', 'दो', 'नी', 'ने' आदि से शुरू होने वाले अपनी भाषा के शब्द भी बता सकते हैं। उन्हें स्वीकार कीजिए और बोर्ड पर लिखिए।

© NCERT not to be republished

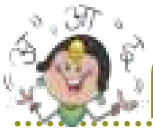

शब्दों का खेल

1. नीचे कुछ वर्ण और कुछ मात्राएँ दी गई हैं। इन्हें जोड़कर अपने शब्द बनाइए और अपनी कॉपी में लिखिए –

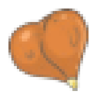
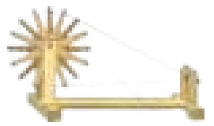

ल	ज	ब	प	ा	आ
र	म	स	घ	ि	इ
त	ख	च	न	ी	ई

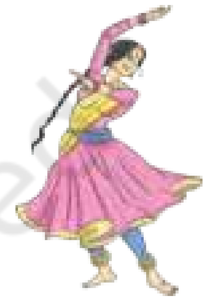

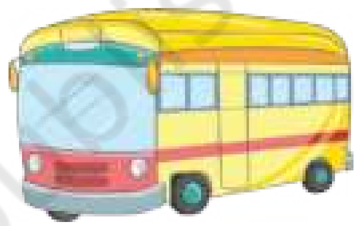

2. कुछ अक्षर छूट गए हैं। उन्हें लिखिए –

शिक्षण-संकेत – शब्दों का खेल 1 – यह कार्य बच्चों को छोटे समूह में मिलकर करने को कहिए। इसी तरह से सभी वर्णों और मात्राओं की पहेलियाँ बच्चों को नियमित रूप से करने के लिए दीजिए।

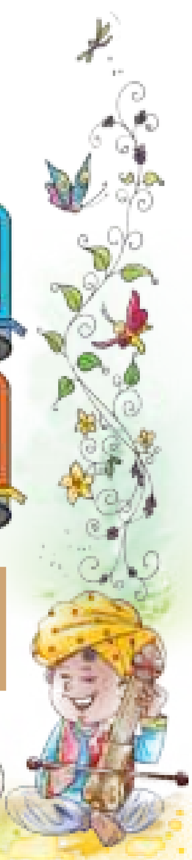

© NCERT not to be republished

3. कहानी में 'इंतज़ार' शब्द आया है।
अक्षर के ऊपर लगने वाली बिंदी को अनुस्वार कहते हैं। 'इतज़ार' में जैसे ही 'इ' के ऊपर बिंदी लगाई 'इंतज़ार' हो गया। आइए, ऐसे ही कुछ अन्य शब्दों को देखते हैं –

अक्षर समूह	अनुस्वार लगाने पर बना शब्द	चित्र
शख	शंख	
पतग	पतंग	
बदर	....	
मदिर	....	
अगूर	....	

© NCERT not to be republished

2

आनंदमयी कविता

घर

पापा, क्यों अच्छा लगता है
अपना प्यारा-प्यारा घर?
घूम-घाम लें, खेल-खाल लें
नहीं भूलता लेकिन घर।

नहीं आपको लगता पापा
है माँ की गोदी-सा घर।
प्यारी-प्यारी ममतावाला
सुंदर-सुंदर न्यारा घर।

थककर जब वापस आते हैं
कैसे बिछ-बिछ जाता घर।
खिला-पिला आराम दिलाकर
नई ताज़गी देता घर।

— *दिविक रमेश*

© NCERT not to be republished

बातचीत के लिए

1. आपको अपने घर में सबसे अधिक क्या अच्छा लगता है और क्यों?
2. आपको कब-कब घर की याद आती है?
3. घर को माँ की गोदी-सा क्यों कहा गया है?
4. कोई ऐसी घटना सुनाइए जब पूरे परिवार ने साथ मिलकर घर का कोई काम किया हो।

खोजें-जानें

1. 'घर' कविता अपने परिवार के किसी सदस्य को सुनाइए। घर या परिवार पर उनसे कोई अन्य कविता या कहानी सुनाने के लिए कहिए।
2. अपने परिवार के लोगों से बात करके पता कीजिए और लिखिए –

परिवार के लोग	आप किस नाम से बुलाते हैं?
आपकी माँ की बहन	
आपकी माँ के भाई	
आपके पिताजी की बहन	
आपके पिताजी के भाई	

शिक्षण-संकेत – हो सकता है कि सभी बच्चे यह कार्य करके ना ला पाएँ। जो भी बच्चे ला पाएँ, उन्हें उनका कार्य कक्षा में साझा करने को कहिए ताकि सभी बच्चे उसका आनंद ले सकें। बच्चों द्वारा अपनी-अपनी मातृभाषा में लिखे गए शब्दों को स्वीकार कीजिए और कक्षा में बहुभाषिकता की भावना को प्रोत्साहित कीजिए।

© NCERT not to be republished

3

मिलकर पढ़िए

माला की चाँदी की पायल

हुश्श्श्!

माला बिल्ली को डराती।

हेएए!

वह अपनी नानी को डराती।

धप्प!

वह अपने छोटे भाई को डराती।

भऊऊ!

वह डाकिए को डराती।

© NCERT not to be republished

एक दिन माला की माँ ने उसे
एक छोटी-सी डिब्बी दी।
"माला, यह तुम्हारे लिए है,"
वे बोलीं।

माला ने जल्दी से डिब्बी खोली जिसमें
उसे मिली – नीले कागज़ में लिपटी,
प्यारी-सी चाँदी की पायल!

उन्हें पहनकर, वह पूरे घर में घूमने लगी।
छिक-छिक-छम
छोटे-छोटे घुँघरू झनकते।
छिक-छिक-छम
अब माला जहाँ भी जाती, सब जान जाते।

छिक-छिक-छम
माला की हुश्श्श! से पहले बिल्ली
कूद गई।

© NCERT not to be republished

छिक-छिक-छम
माला की हेएए! से पहले नानी
पलट गईं।

छिक-छिक-छम
माला की धप्प! से पहले छोटा भाई
बाहर भाग गया।

छिक-छिक-छम
माला की भऊऊ! से पहले डाकिया
निकल गया।

छिक-छिक-छम
अब माला किसी को डरा नहीं पाती।
तो ऐसे में माला ने क्या किया?
उसने अपनी चाँदी की पायल उतार दी।

— *ऐनी बेसंट*

© NCERT not to be republished

बातचीत के लिए

1. माला सभी को क्यों डराती होगी?
2. माला से सभी क्यों डर जाते होंगे?
3. पायल उतारने के अतिरिक्त माला और क्या कर सकती थी?
4. माँ ने माला को पायल क्यों दी होगी?

लिखिए

1. माला की माँ ने उसे क्या दिया?

माला की माँ ने उसे .... दीं।

2. माला ने पायल क्यों उतार दीं? सही उत्तर चुनिए –

(i) पायल माला को चुभ रही थी।

(ii) पायल से सभी को माला के आने का पता चल जाता था।

(iii) पायल की आवाज़ से सभी को बहुत मज़ा आता था।

(iv) एक पायल खो गई थी और बस एक ही पायल रह गई थी।

3. इन ध्वनियों को सुनिए और उन्हें शब्दों में लिखने का प्रयास कीजिए –

घंटी की ध्वनि

पायल की ध्वनि

शंख की ध्वनि

डमरू की ध्वनि

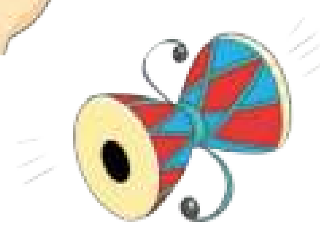

© NCERT not to be republished

4. माला किस-किस को डरा रही थी?

....

....

5. विराम-चिह्न का सही प्रयोग करते हुए नीचे दिए गए वाक्यों को अपनी कॉपी में लिखिए –

क्या माला को नई पायल मिली

माला पायल पहनकर पूरे घर में घूमने लगी

आओ बूझें पहेली

माला की चाँदी की पायल खो गई है। अक्षरों को जोड़कर 'माला की चाँदी की पायल' बनाइए। रेखा खींचकर शब्दों को जोड़िए –

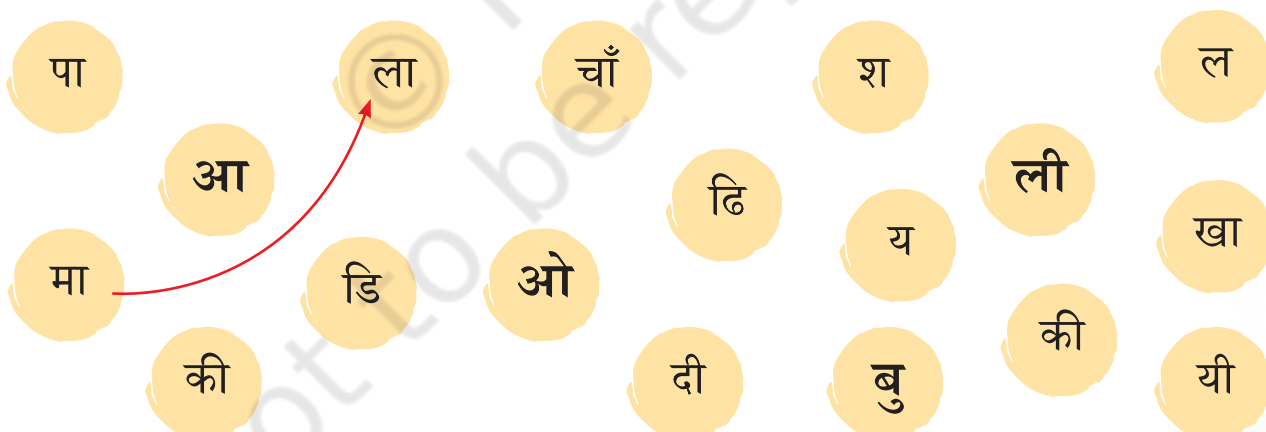

© NCERT not to be republished

शिक्षण-संकेत – बच्चों के साथ विराम-चिह्न, जैसे—पूर्ण विराम और प्रश्नवाचक चिह्न पर चर्चा कीजिए।

4

आनंदमयी कविता

माँ

माँ तुम कितनी भोली-भाली
कितनी प्यारी-प्यारी हो
दिल से सच्ची मिसरी जैसी
सारे जग से न्यारी हो।

मेरे मन में जोश तुम्हीं से
तुमसे ही प्रकाश
मुझमें साहस तुमसे आता
तुमसे ही विश्वास।

—अनुभव राज

© NCERT not to be republished

शब्दों का खेल

चंद्रबिंदु का कमाल

'मा' के ऊपर चंद्रबिंदु लगाने से 'माँ' हो गया। आइए, कुछ और शब्द देखते हैं।

1. नीचे दिए गए चित्रों को देखिए, शब्दों को पढ़िए और उन्हें लिखने का प्रयास कीजिए–

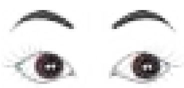 आँख	..........आँख..........	....
बाँस	....	....
दाँत	....	....
बाँसुरी	....	....
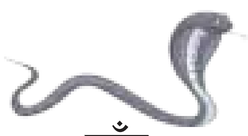 साँप	....	....

2. 'माँ' कविता में से कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। उनका प्रयोग करते हुए अपने परिवार के सदस्यों के लिए दो-चार पंक्तियाँ लिखिए–

भोली-भाली, प्यारी-प्यारी, दिल से सच्ची, जग से न्यारी

> शिक्षण-संकेत – बच्चों से बातचीत कीजिए, कुछ उदाहरण उन्हें दीजिए तथा अपने मन से दो-चार पंक्तियाँ लिखने के लिए उन्हें प्रोत्साहित कीजिए।। बच्चे अपने भाई, पिताजी, मित्र आदि के लिए भी ये पंक्तियाँ लिख सकते हैं। बच्चों को अपनी भाषा में मन की बात कहने के लिए प्रोत्साहित कीजिए एवं उपयुक्त अवसर प्रदान कीजिए।

© NCERT not to be republished

5

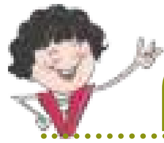

सुनें कहानी!

थाथू और मैं

मैं अपने दादाजी के साथ रहती हूँ।
उन्हें मैं 'थाथा' कहती हूँ।
लेकिन जब उन पर बहुत प्यार आता
है, तो मैं उन्हें 'थाथू' बुलाती हूँ।

कभी-कभी थाथू मुझे सिनेमा दिखाने बाहर ले जाते हैं।
मैं उनकी गोदी में बैठकर हॉर्न बजाती हूँ – पॉम! पॉम! रास्ते की सब बकरियाँ
और गायें दूर हट जाती हैं।

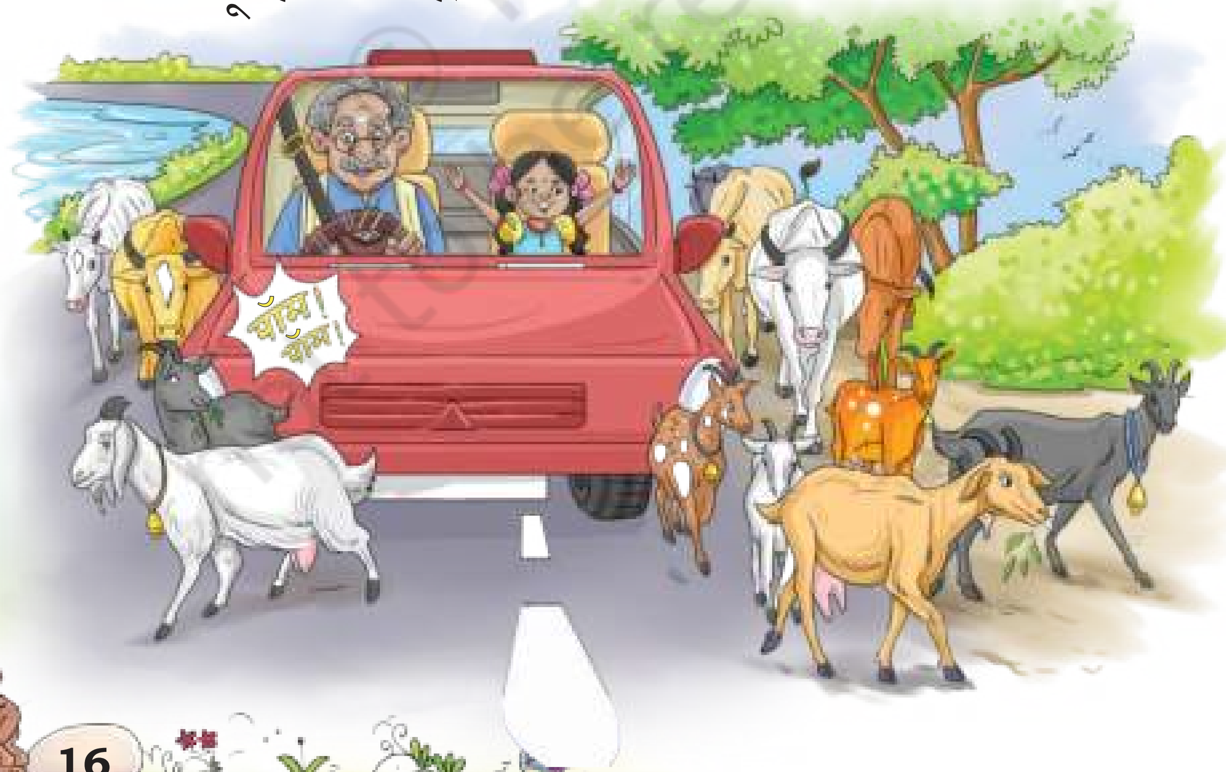

“थाथू क्यों न हम चाँद पर चलें?” मैं पूछती हूँ। वे सिर हिलाकर हँस देते हैं। थाथा के दाँत नहीं हैं। जब वे हँसते हैं तो एक गुलाबी-सी दीवार दिखाई देती है...और फिर... एक गुलाबी-सी गुफा।

जब बारिश होती है, तो थाथा खिड़की के बाहर इशारा करते हैं और कहते हैं, “देखो! बरसात हो रही है। चलो! बाहर चलें।”
थाथू और मैं हमेशा कुछ अलग करते हैं। हम समुद्र तट पर जाते हैं। ऊँची-नीची लहरें मेरे चारों तरफ़ उठती-गिरती हैं।

चाँद हमारे साथ-साथ चलता है और हवाएँ सीटी बजाती हैं।
मछलियाँ थाथू और मुझे ढूँढ़ती हुई आती हैं। मेरी उँगलियाँ कुतरती हैं और मुझे खेलने को बुलाती हैं।

© NCERT not to be republished

हम दौड़ लगाते हैं और
कलाबाज़ियाँ खाते हैं।
जब अँधेरा हो जाता है, तो मैं
थाथू का हाथ पकड़ लेती हूँ।
उनके साथ मैं कूदती-फाँदती
घर आ जाती हूँ। और फिर
थाथू अपनी मनपसंद किताब
पढ़ने बैठ जाते हैं।

"थाथू, यह कोई जादुई किताब है?"
मैं पूछती हूँ। थाथू मुस्कुराते हैं।
"क्या मैं भी जादूगर बनूँगी?" मैं फिर
पूछती हूँ, "आपकी तरह?" वे कहते
हैं, "अब सो जाओ।"
उनकी गोद में सिर रखकर, मैं सो
जाती हूँ।
मुझे अपने थाथू से बेहद प्यार है। मैं
प्रार्थना करती हूँ... कि एक दिन, मैं
भी उनके जैसी बनूँ।

—गीता धर्मराजन

© NCERT not to be republished

बातचीत के लिए

इस कहानी के आधार पर कुछ प्रश्न बनाइए और अपने मित्रों से पूछिए।

शब्दों का खेल

1. **सही जगह पर चंद्रबिंदु लगाकर अपनी कॉपी में लिखिए–**

(क) ऊची-नीची लहरें मेरे चारों तरफ़ उठती-गिरती हैं।

(ख) “थाथू क्यों न हम चाद पर चलें?”

(ग) मेरी उगलिया कुतरती हैं।

(घ) उनके साथ मैं कूदती-फादती घर आ जाती हूँ।

2. **नीचे दिए गए शब्द उलट-पलट हो गए हैं। शब्दों को सही क्रम में लगाकर वाक्य अपनी कॉपी में लिखिए–**

(क) साथ के रहती हूँ मैं दादाजी।

(ख) तट समुद्र जाते हम पर हैं।

(ग) हैं थाथू मुस्कुराते।

(घ) हूँ मैं कहती ‘थाथा’ उन्हें।

झटपट कहिए

1. फूफा के फुग्गा पर फिर
मिला फलाहारी
फाफड़ा।

2. भैया भाभी को भायी
भागलपुर की भारी भरकम भेंट।

© NCERT not to be republished

6

खेल गीत

चींटा

चींटा-चींटा दूध ला,
दूध लाकर दही जमा,
बढ़िया-बढ़िया दही जमा,
खट्टा-मीठा दही जमा।

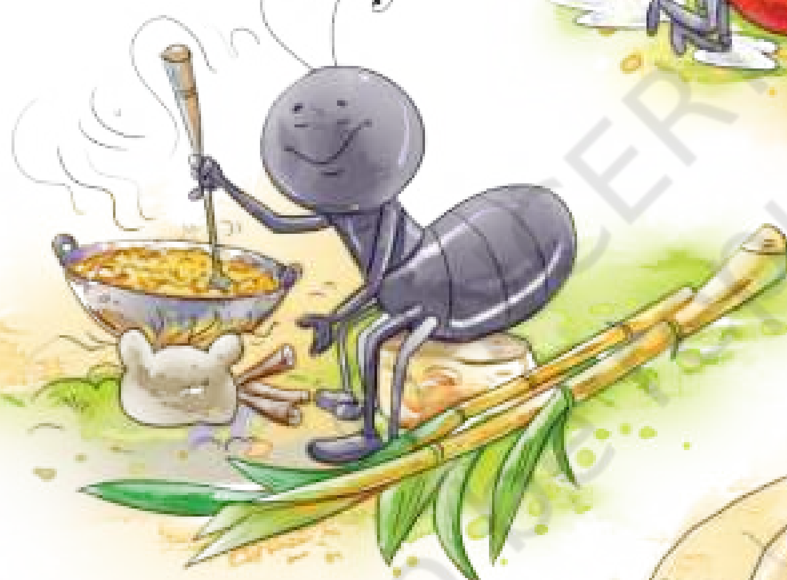

चींटा-चींटा गन्ना ला,
गन्ना लाकर शक्कर बना,
चींटी भूखी आएगी,
झटपट वो खा जाएगी।

चींटा-चींटा शक्कर ला,
शक्कर लाकर शरबत बना,
चींटी प्यासी आएगी,
झटपट वो पी जाएगी।

चींटा-चींटा घर बना,
चींटी धूप से आएगी,
देख के खुश हो जाएगी,
झट-से वो रुक जाएगी।

चींटा-चींटा बाज़ार जा,
शक्कर ला, चावल ला,
रोटी ला, पानी ला,
झटपट जा, झटपट आ।

चींटी जब घर आएगी,
देख के खुश हो जाएगी,
तेरे ही गुण गाएगी,
तेरे ही गुण गाएगी।

— साभार, एकलव्य

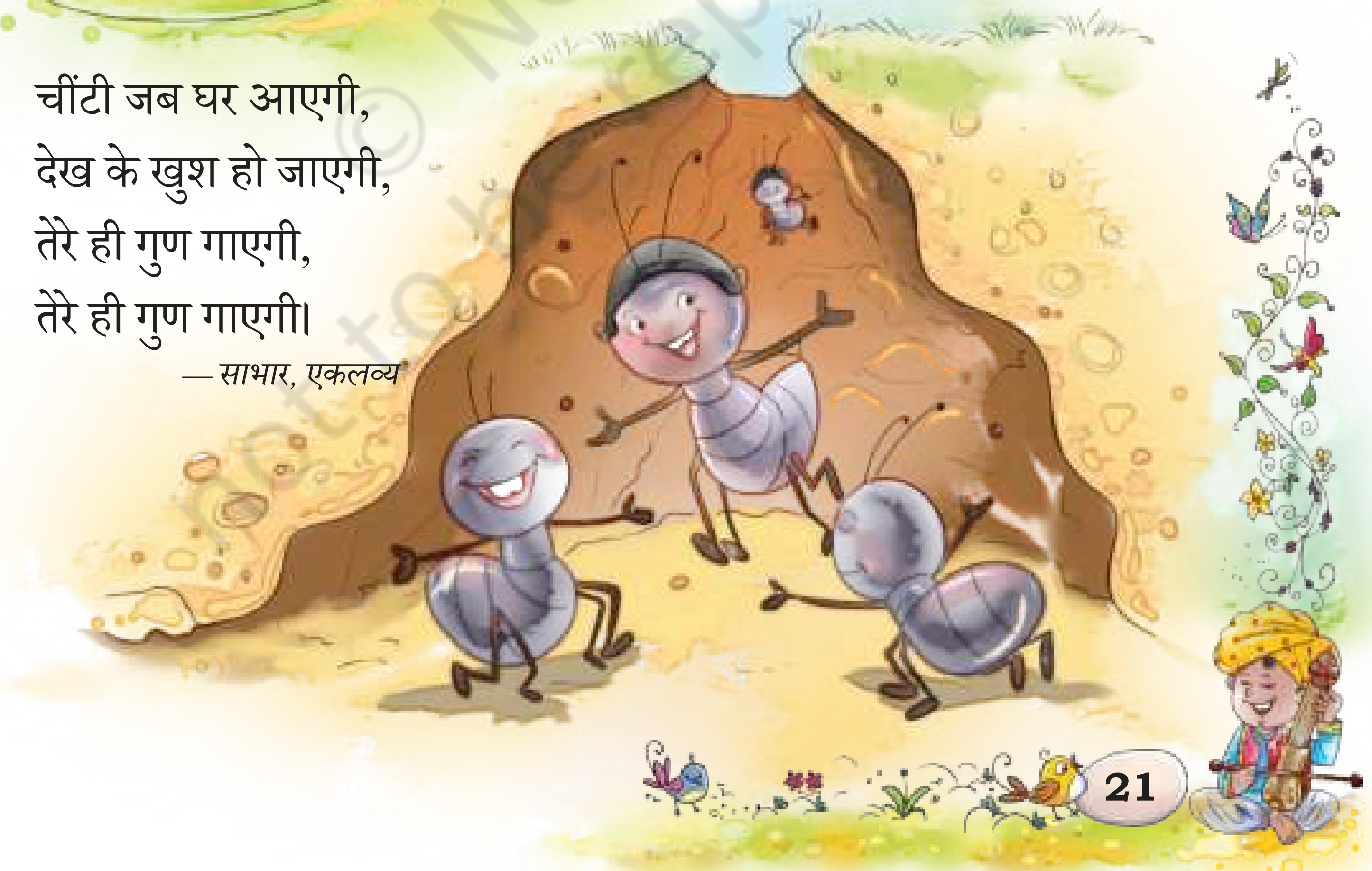

© NCERT not to be republished

चित्रकारी

कविता में चींटे को कुछ काम करने के लिए कहा गया है। वे क्या-क्या काम हैं? चित्रों की सहायता से बताइए और कुछ वाक्य भी लिखिए–

चींटे को दूध लाना है।

आइए, कुछ बनाएँ

परिवार के सदस्य या अपने किसी मित्र के लिए 'धन्यवाद कार्ड' बनाइए। इस धन्यवाद कार्ड पर आप लिख सकते हैं कि आप यह धन्यवाद कार्ड उन्हें क्यों देना चाह रहे हैं।

© NCERT not to be republished

7

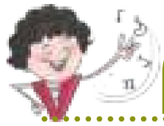

खेल गीत

टिल्लू जी

टिल्लू जी स्कूल गए,
बस्ता घर पर भूल गए।

रस्ते भर थे डरे-डरे,
पहुँचे गेट पर अरे अरे।

छुट्टी का नोटिस चिपका,
देख खुशी से फूल गए।

दोनों बाँहें माँ के,
डाल गले में झूल गए।

— *नरेश सक्सेना*

पढ़िए, समझिए और मिलाइए

मित्रों/सहेलियों को देखकर

शिक्षक को देखकर

मैं खुश होता/होती हूँ

माँ को देखकर

.... को देखकर

.... को देखकर

शब्दों का खेल

पढ़िए, समझिए और लिखिए –

अं →	गूर	अंगूर
अं →	जीर	....
अं →	डा	....
अं →	दर	....
अं →	बर	....

© NCERT not to be republished

मिलकर पढ़िए

नटखट दिवाकर

दिवाकर पाँच वर्ष का नटखट लड़का है। सारे दिन ठिठोली करता है और सबको हँसाता है।

उसे गणित सीखने की बहुत लगन है। उसकी बड़ी बहिन मीना उसे संख्याओं को जोड़ना सिखाती है और दिवाकर ध्यान से सीखता है।

दिवाकर कहता है, "एक और दो, तीन!" मीना कहती है, "सपेरा बजाता बीन!" दिवाकर कहता है, "तीन और चार, सात!" मीना कहती है, "लाओ कलम दवात!"

दिवाकर दौड़कर कलम दवात ले आता है और मीना उसे संख्याओं के जोड़ लिखना सिखाती है। $1 + 2 = 3$ $3 + 4 = 7$

आज इतवार का दिन है। दादाजी ने आज कुल्फ़ी बनाने के लिए बहुत सारा दूध मँगाया था। दादी ने सवेरे 9 बजे कढ़ाई में दूध उबालने के लिए रख दिया। दूध को कभी माँ और कभी चाचाजी थोड़ी-थोड़ी देर में चमचे से चलाते रहे।

10 बजे तक दूध गाढ़ा हो गया और माँ ने उसे ठंडा होने के लिए रख दिया। दिवाकर बड़ी उत्सुकता से सब देख रहा था।

11 बजे चाचाजी बाज़ार से बरफ़ ले आए और उसे कूटकर मटके में भर दिया। उसमें नमक भी मिला दिया। दादी और माँ ने गाढ़े दूध में चीनी, केसर तथा पिस्ते और बदाम काट कर डाले। फिर कुल्फ़ी के तिकोनों में दूध भरकर मटके में डाल दिए।

तब तक 1 बज गया था। दिवाकर ने दादाजी से पूछा, "दादाजी, कुल्फ़ी कब तक बनेगी?" दादाजी ने कहा, "बेटा, 5 बजे तक बनेगी।"

दिवाकर मीना के साथ खेलने चला गया। कुछ देर बाद दिवाकर ने दादाजी के पास जाकर पूछा, "दादाजी, क्या बजा है?" दादाजी ने अपने कमरे में लगे घंटे की ओर देखकर कहा, "बेटा, 2 बजे हैं।" दिवाकर बेचैनी से 5 बजने की प्रतीक्षा करता रहा।

कुछ समय बाद वह फिर दादाजी के पास गया और पूछा, "दादाजी, अब क्या बजा है?" दादाजी ने फिर घंटे की ओर देखा और बोले, "बेटा, 3 बजे हैं।"

दिवाकर ने भोलेपन से खुश होकर कहा, "दादाजी, 2 और 3, 5 होते हैं— तो अब 5 बज गए। इसलिए कुल्फ़ी खा सकते हैं!"

दादाजी हँस पड़े। उन्हें दिवाकर की कुशाग्र बुद्धि पर बहुत आनंद आया।

—मालती देवी

शिक्षण-संकेत – यह पाठ पढ़ने के आनंद को बनाए रखने के उद्देश्य से लगाया गया है।

८

मिलकर पढ़िए

तीन दोस्त

बात पुरानी है।
तब बस तीन ही रंग थे।
लाल, पीला और नीला!

लाल रहता था हर लज़ीज़ वस्तु में,
जैसे टमाटर, सेब, चेरी और आलूबुखारे।

पीले ने बनाया था सूरज को चमकदार
जो मुस्कुराकर देता था रोशनी लगातार।

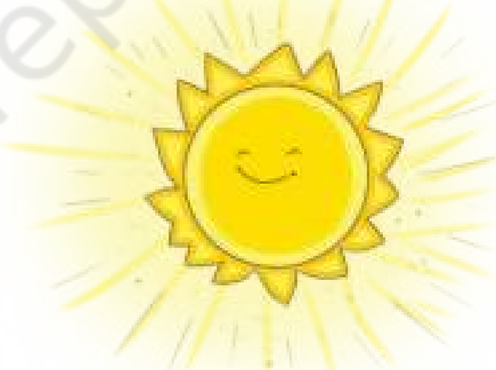

आसमान भी नीला था और समुंदर भी।
पेड़ों से टपकती बारिश भी नीली ही थी।

© NCERT not to be republished

तीनों पक्के दोस्त थे।

एक दिन उन्होंने कहा, “हमें और दोस्त चाहिए। चलो नए दोस्त बनाएँ।” और वे निकल पड़े दोस्तों की तलाश में।

और देखो क्या हुआ!

लाल और पीला साथ चले
तो एक नया दोस्त मिला — नारंगी।

पीले और नीले ने हाथ मिलाया
तो एक नया दोस्त मिला — हरा।

लाल और नीले के पास आते ही
एक नया दोस्त मिला — बैंगनी।

और इस तरह उन्होंने दुनिया को बना दिया दोस्ताना और रंगीन।

—इंदु हरिकुमार

© NCERT not to be republished

बातचीत के लिए

1. क्या रंगों की तरह आप भी अपने मित्रों के साथ मिलजुल कर रहते हैं?
2. आप अपने रूठे मित्रों को कैसे मनाते हैं?
3. क्या आसमान हमेशा नीला दिखाई देता है? क्या सूरज हमेशा पीला होता है? क्या पत्ते हमेशा हरे होते हैं? अपने अनुभवों के आधार पर बताइए।
4. आप नए मित्र कैसे बनाते हैं?

नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी कॉपी में लिखिए –

1. कहानी में आए रंगों के नाम लिखिए।
2. वाक्य पूरा करें – तीनों रंग पक्के दोस्त थे, फिर भी उन्होंने नए दोस्त बनाए, क्योंकि
   ....
   ....
3. विद्यालय में नारंगी, हरी और बैंगनी रंग की वस्तुओं को खोजिए। उनके नाम भी लिखिए –

नारंगी वस्तुओं के नाम	हरी वस्तुओं के नाम	बैंगनी वस्तुओं के नाम
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....

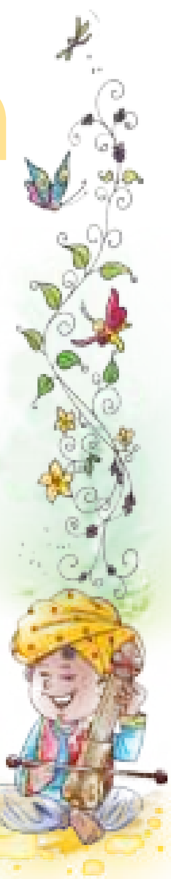

© NCERT not to be republished

आइए, कुछ बनाएँ

1. मेज़ पर अखबार बिछा दीजिए।
2. अलग-अलग ग्लास/कप में तीन रंगों को पानी में घोलिए — लाल, पीला और नीला।
3. ड्रॉपर की सहायता से रंग की बूँदों को अखबार पर छिड़किए।
4. अलग-अलग रंगों की बूँदों को एक-दूसरे के ऊपर और आस-पास छिड़किए तथा नए रंग बनाइए। आप रंग की बूँदों से डिज़ाइन भी बना सकते हैं।
5. सभी रंगों को मिलाकर देखिए। कौन-सा रंग बना?

शब्दों का खेल

रंगों के नाम लिखिए —

'आ' की मात्रा वाले रंग	बिना 'आ' की मात्रा वाले रंग
....	....
....	....

शिक्षण-संकेत – आप फूड कलरिंग या स्याही का इस्तेमाल कर सकते हैं। गतिविधि के बाद बच्चों को सारा सामान सही जगह पर रखने के लिए कहिए और उनके साथ कक्षा को साफ़ कीजिए।

© NCERT not to be republished

चित्रकारी और लेखन

अपनी पसंद के रंग के बारे में सोचिए। वह रंग आपको किन वस्तुओं की याद दिलाता है? उनके चित्र बनाइए। कुछ वाक्य भी लिखिए–

© NCERT not to be republished

चित्र और बातचीत

प्रकृति के रंग

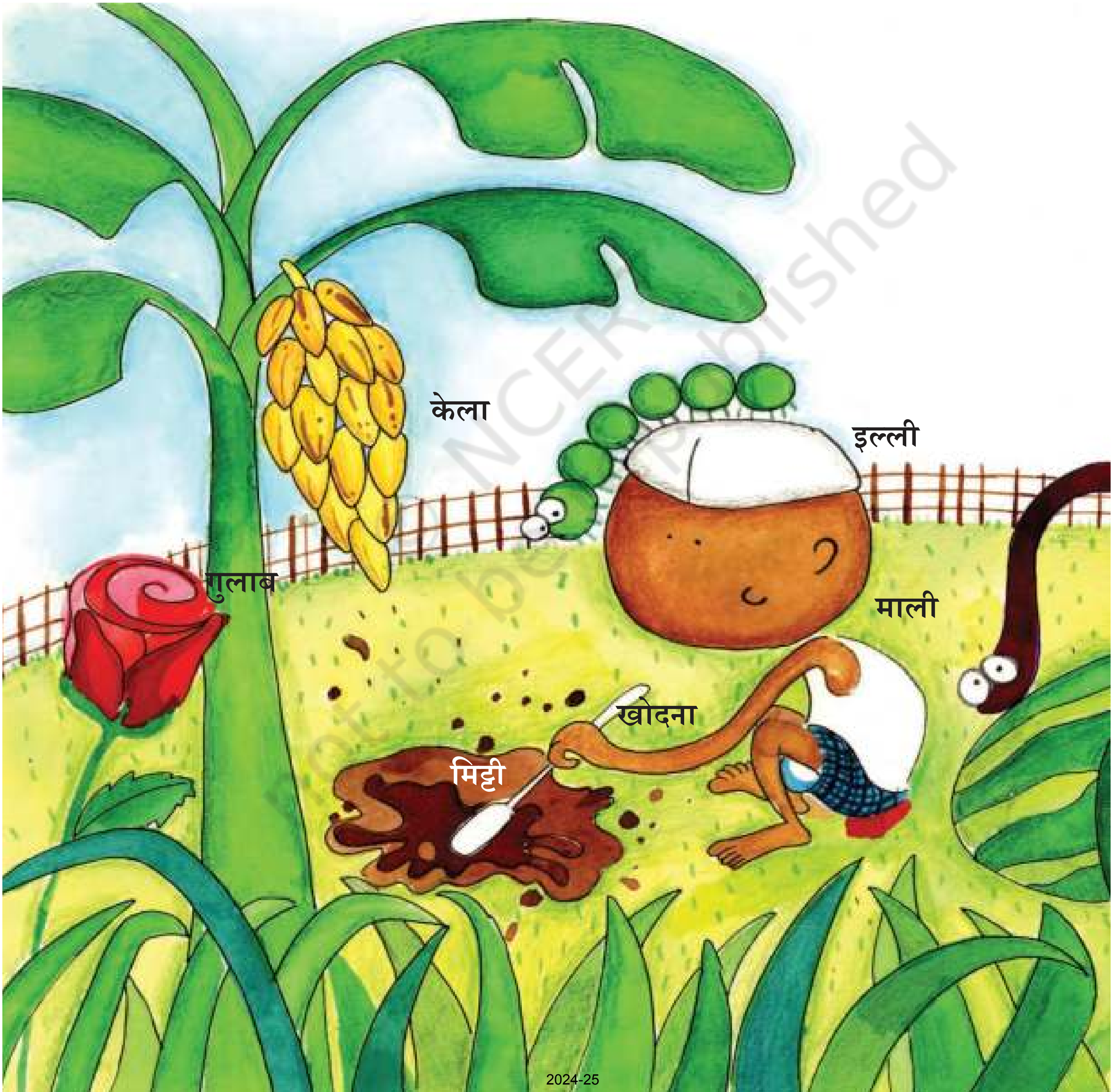

NCERT not to be republished

शिक्षण-संकेत

1. चित्र में दिए गए शब्दों से अपनी कहानी बनाइए। कक्षा में सुनाइए।
2. अपने मित्रों के साथ मिलकर चित्र से जुड़े हुए कुछ वाक्य अपनी कॉपी में लिखिए।
3. बच्चों को अपनी भाषा में मन की बात कहने के लिए प्रोत्साहित कीजिए एवं उपयुक्त अवसर प्रदान कीजिए।

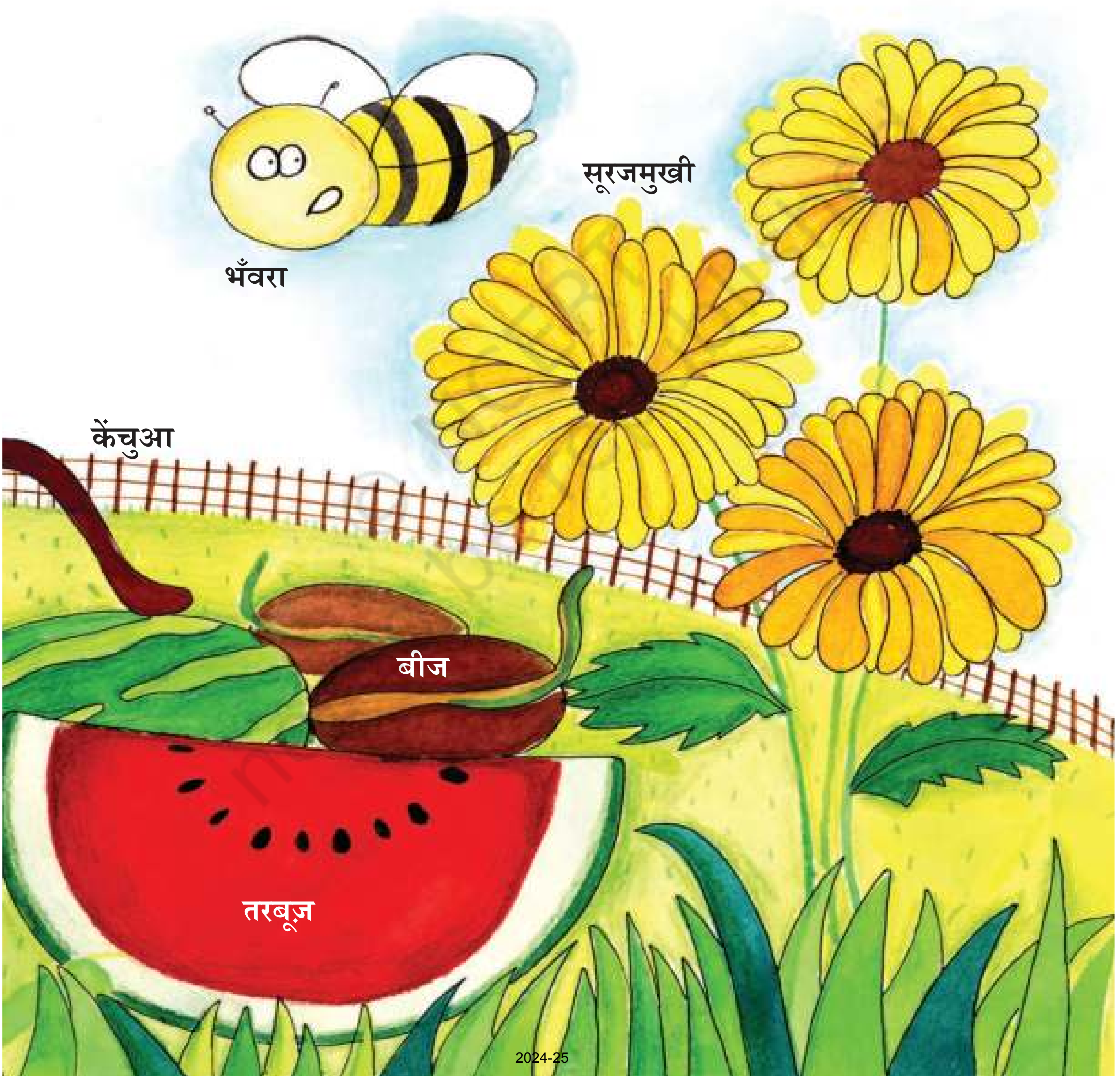

9

आनंदमयी कविता

दुनिया रंग-बिरंगी

नीला! जैसे खुला आकाश है,
सागर का नीला पानी है,
मोर के सुंदर पंख हैं,
और पेड़ पर बैठे पंछी हैं।

पीला! जैसे चमचमाता सूरज है,
पका आम और केला है,
सब्ज़ियों में नींबू है,
और सूरजमुखी का फूल है।

लाल! जैसे फलों में सेब है,
खुशबूदार फूल गुलाब है,
चेरी और लाल टमाटर है,
और मेरी नाक पर फुंसी है।

हरा! जैसे हरी-हरी ये घास है,
मीठे-मीठे मटर हैं,
पालक और बंदगोभी है,
और पेड़ के हरे-हरे पत्ते हैं।

— देविका रंगाचारी

© NCERT not to be republished

सोचिए और लिखिए

1. अपनी पसंद के रंग पर कविता लिखिए, जैसे 'दुनिया रंग-बिरंगी' को लिखा गया है –

....

....

....

....

2. कविता में नीले रंग के कुछ उदाहरण आए हैं, जैसे– खुला आकाश। कविता में आए उदाहरणों से अलग आप अपने अनुभव से नीले और पीले रंग के कुछ उदाहरण लिखिए –

....

....

शब्दों का खेल

बेमेल शब्द को ढूँढ़कर लिखिए –

1.	चूहा	बिल्ली	कुत्ता	मछली	....
2.	दरवाज़ा	खिड़की	छत	पेड़	....
3.	चादर	घर	तकिया	गद्दी	....
4.	साइकिल	कार	रास्ता	रेल	....
5.	दूध	पानी	लड्डू	छाछ	....

© NCERT not to be republished

10

आनंदमयी कविता

कौन

अगर न होता चाँद, रात में,
हमको दिशा दिखाता कौन?
अगर न होता सूरज, दिन को,
सोने-सा चमकाता कौन?

अगर न होती निर्मल नदियाँ,
जग की प्यास बुझाता कौन?

अगर न होते पर्वत, मीठे,
झरने भला बहाता कौन?

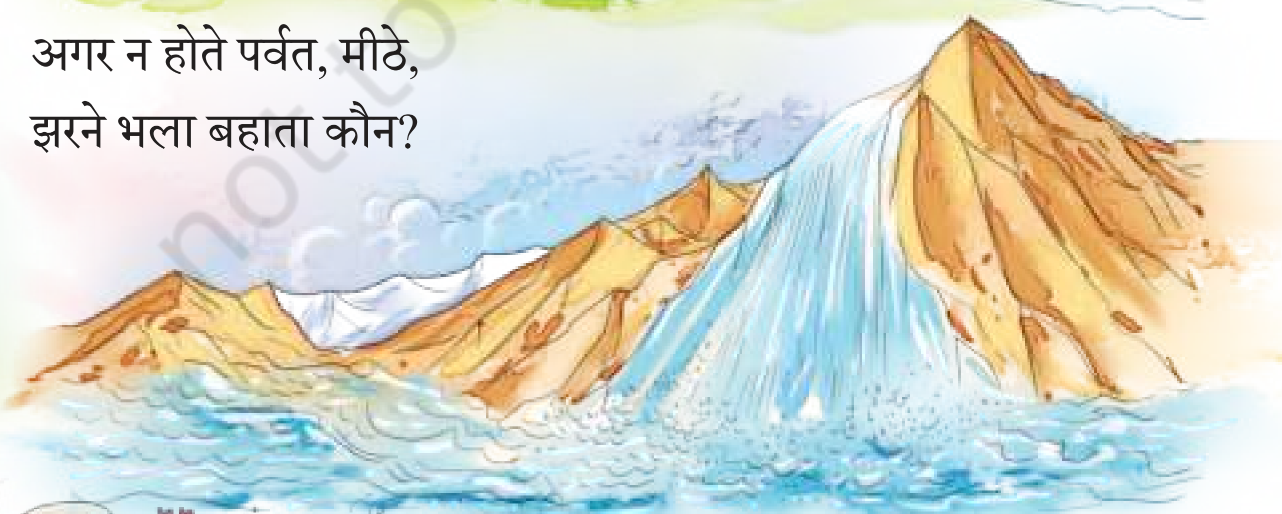

© NCERT not to be republished

अगर न होते पेड़ भला फिर,
हरियाली फैलाता कौन?
अगर न होते फूल बताओ,
खिल-खिल कर मुसकाता कौन?

अगर न होते बादल, नभ में,
इंद्रधनुष रच पाता कौन?
अगर न होते हम तो बोलो,
ये सब प्रश्न उठाता कौन?

—बालस्वरूप राही

बातचीत के लिए

1. अगर चाँद और सूरज न होते तो क्या होता?
2. क्या आपने इंद्रधनुष देखा है?
3. इंद्रधनुष कब बनता है? पता कीजिए।
4. आपने इंद्रधनुष में कौन-कौन से रंग देखे हैं?

सोचिए और लिखिए

1. इन शब्दों से प्रश्न बनाइए –

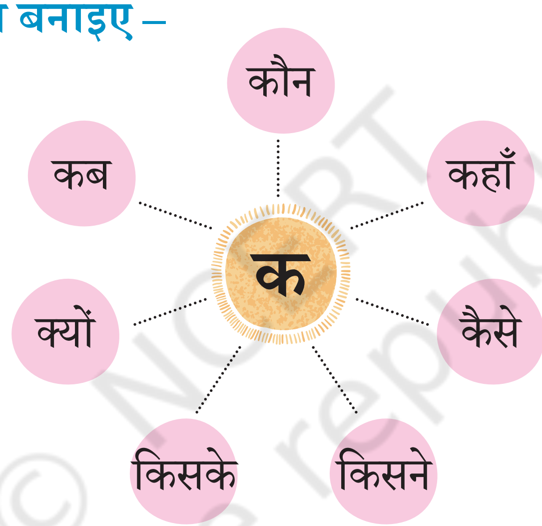

2. कविता के आधार पर नीचे दिए गए वाक्यों को पूरा कीजिए –

(i) अगर पेड़ न होते तो ....

(ii) अगर नदियाँ न होतीं तो ....

(iii) अगर पर्वत न होते तो ....

(iv) अगर फूल न होते तो ....

इसी तरह के कुछ और वाक्य बनाइए और अपनी कॉपी में लिखिए।

© NCERT not to be republished

आइए, कुछ बनाएँ

1. इंद्रधनुष बनाइए और रंग भरिए।

2. हर रंग के सामने अपने बारे में कुछ लिखिए –

लाल — मेरी उम्र .... साल है।

नारंगी — मेरे घर में .... लोग रहते हैं।

पीला — मैं .... में रहता/रहती हूँ।

हरा — मुझे .... खाना बहुत पसंद है।

नीला — मेरा मनपसंद रंग .... है।

जामुनी — मुझे .... बहुत पसंद हैं। (जानवर का नाम)

बैंगनी — मैं .... बनना चाहता/चाहती हूँ।

खोजें-जानें

अपने परिवार के दो सदस्यों को चुनिए और उनसे कुछ ऐसे प्रश्न पूछिए जो आप हमेशा पूछना चाहते हैं। प्रश्नों को पहले ही लिख लीजिए, जैसे— आप भाई-बहन से पूछ सकते हैं कि उनका मनपसंद खेल कौन-सा है। माँ से पूछ सकते हैं कि वे बचपन में क्या नटखटी करती थीं और पिताजी से पूछ सकते हैं कि उन्हें छुट्टी पर कहाँ जाना पसंद है। कक्षा में आकर मित्रों को अपनी बातचीत सुनाइए और उनकी बातचीत भी ध्यान से सुनिए।

© NCERT not to be republished

11

मिलकर पढ़िए

बैंगनी जोजो

जोजो एक सफ़ेद कुत्ता था।

वह एक पेड़ के नीचे सो रहा था।

"घर्र्र्र्र! स्स्स्स! घर्र्र्र्र! स्स्स्स!"

वह जग गया।

"भौं भौं! किसने दिए मुझे बैंगनी धब्बे?"

उसने देखा एक बादल को, आकाश में धीरे-धीरे चलते हुए।

"बादल, बादल, क्या तुमने दिए मुझे बैंगनी धब्बे?"

"नहीं," बादल बोला। "मैं तो सफ़ेद हूँ।"

बादल हट गया।

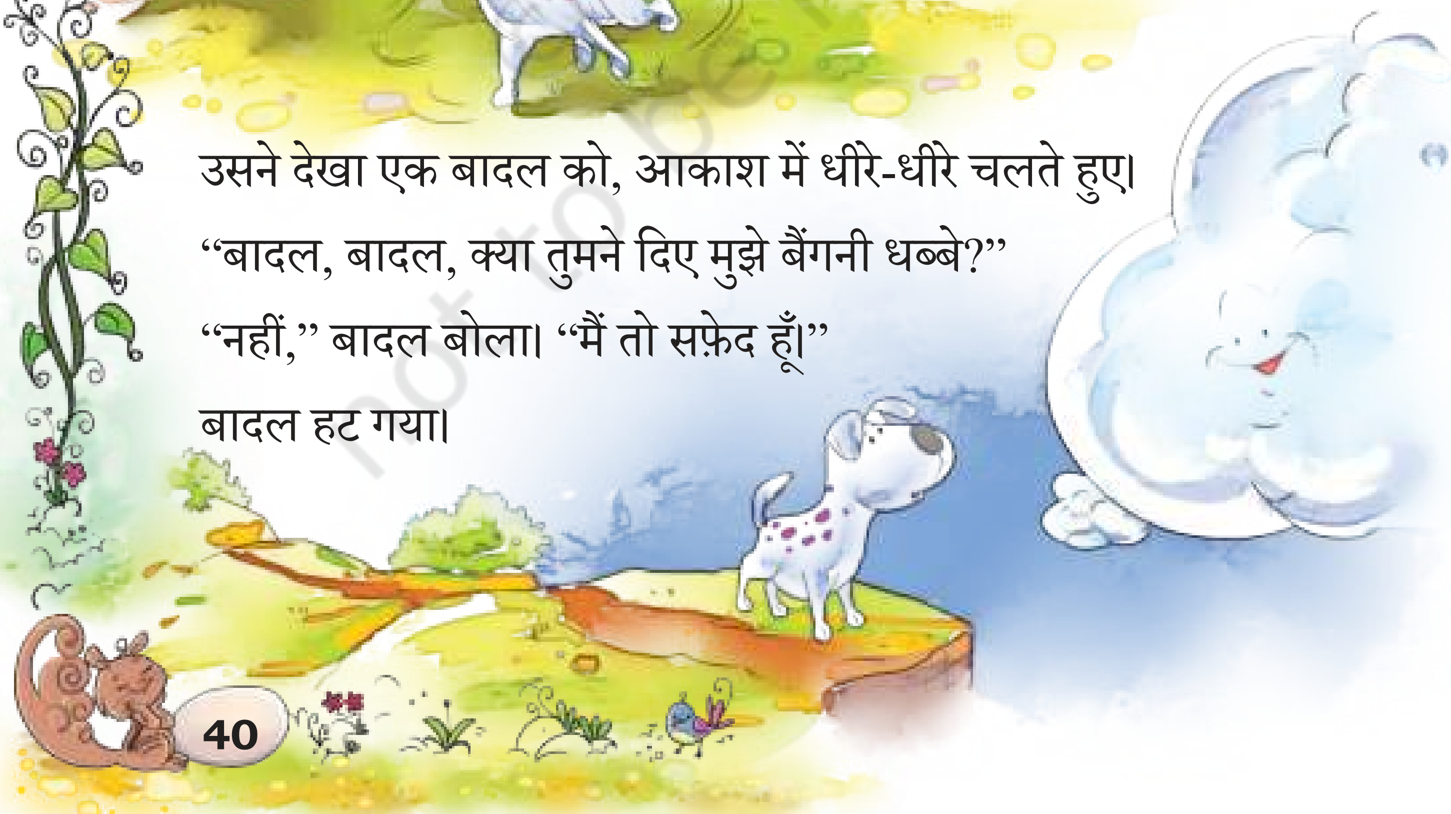

NCERT not to be republished

जोजो ने ऊपर सूरज को देखा।

“सूरज, सूरज, क्या तुमने मुझे दिए बैंगनी धब्बे?”

“नहीं,” सूरज बोला। “मैं तो पीला हूँ।”

“कौए, कौए, क्या तुमने दिए मुझे बैंगनी धब्बे?”

“नहीं,” कौआ बोला। “मैं तो काला हूँ।”

“गुब्बारे, गुब्बारे, क्या तुमने दिए मुझे बैंगनी धब्बे?”

“नहीं,” गुब्बारा बोला। “मैं तो लाल हूँ।”

© NCERT not to be republished

“घास, घास, क्या तुमने दिए मुझे बैंगनी धब्बे?”

“नहीं,” घास बोली। “मैं तो हरी हूँ।”

बेचारा जोजो!

“ऊँ, ऊँ, ऊँ! किसने दिए मुझे बैंगनी धब्बे?”

टप! टप! टप!

“आहा! तो वह जामुन का पेड़ था!”

—*समीरा ज़ीया कुरेशी*

© NCERT not to be republished

सोचिए और लिखिए

1. कहानी में जोजो किस-किस के पास गया। क्रम में लिखिए और चित्र बनाइए –

1

जोजो पहले ....

....

2

फिर वह ....

....

3

उसके बाद वह ....

....

4

अंत में वह ....

....

© NCERT not to be republished

2. कहानी में आए इन शब्दों को पढ़िए और वाक्य बनाकर अपनी कॉपी में लिखिए –

(i) भौं भौं (ii) ऊँ, ऊँ, ऊँ! (iii) टप! टप! टप!

चित्रकारी और लेखन

चित्रों में रंग भरिए। जोजो अगर इन जानवरों के पास जाता तो क्या बातचीत होती? लिखिए–

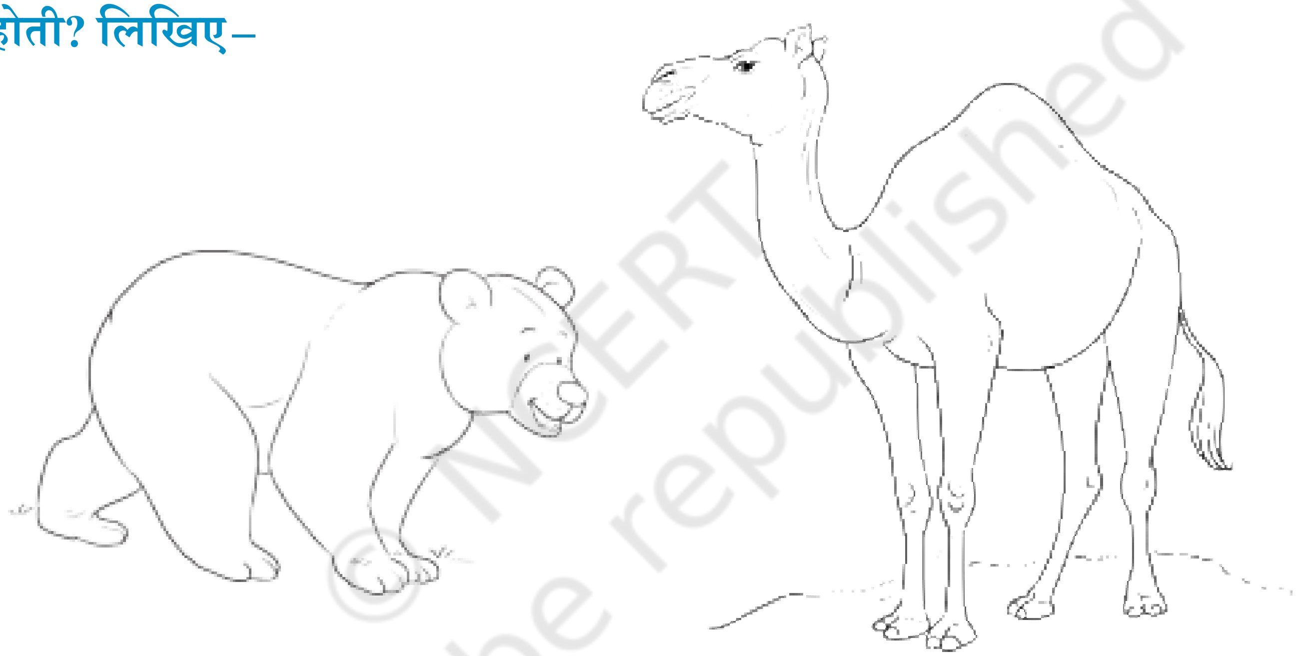

© NCERT not to be republished

जोजो – ....

....

भालू – ....

....

जोजो – ....

....

ऊँट – ....

....

2024-25

पहेली

नीचे दी गई शब्द-पहेली में रंगों के नाम पर घेरा लगाइए –

दा	ता	नी	सा	ह	ती	स
ची	गु	ला	बी	त	फे	स
ना	छ	का	त	द	द	ला
रं	पाँ	च	रा	गु	पी	ल
गी	स	ह	द	ला	ए	पी
तु	ना	ती	न	नी	का	ह

रंग भरिए

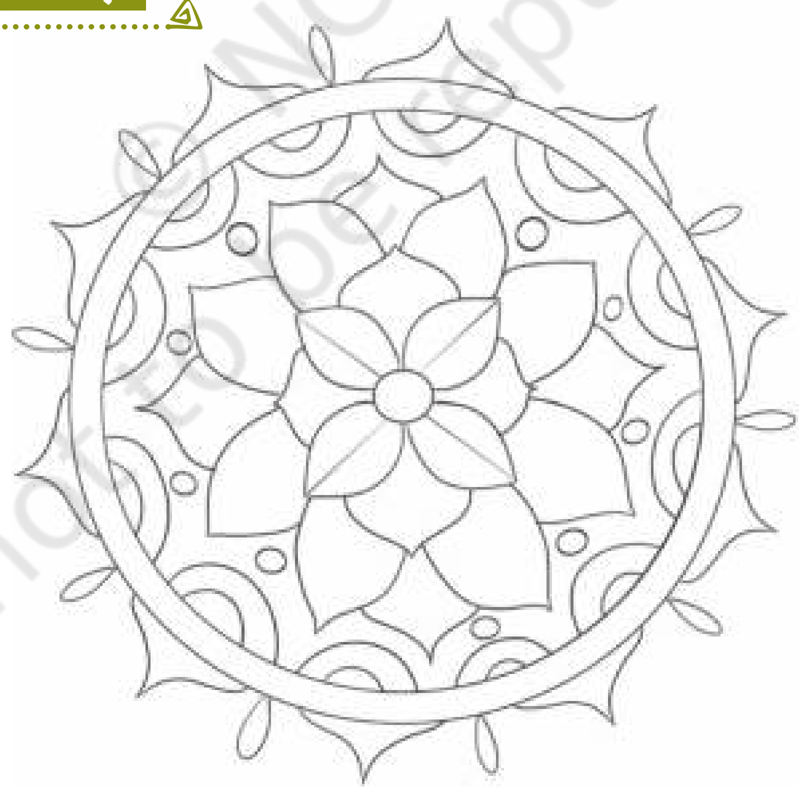

© NCERT not to be republished

12

सुनें कहानी

तोसिया का सपना

एक दिन तोसिया ने सपना देखा। तोसिया बहुत सपने देखती है। वह उठकर सपनों के बारे में बात भी करती है। तोसिया को सपना आया कि दुनिया के सारे रंग उड़ गए हैं। कहीं कोई रंग नहीं बचा। उसने देखा कि सब कुछ सफ़ेद-सफ़ेद हो गया है।

तोसिया उठी और सपने को याद करने लगी। वह एकदम से घबरा गई। तोसिया सोचने लगी कि क्या सचमुच रंग गायब हो गए हैं।

तोसिया रसोई में गई। वहाँ बहुत सारे रंग-बिरंगे मसाले रखे हुए थे। लाल मिर्च, जीरा, हल्दी, धनिया, मेथी।

तोसिया उठकर बाहर बगीचे में गई। वहाँ रंग-बिरंगे फूल खिले हुए थे। गेंदा, चमेली, सदाबहार, गुलाब, सूरजमुखी। तोसिया ने देखा कि उसके कपड़ों में रंग हैं। मम्मी-पापा के कपड़ों में भी रंग हैं। घर में भी खूब सारे रंग दिख रहे थे।

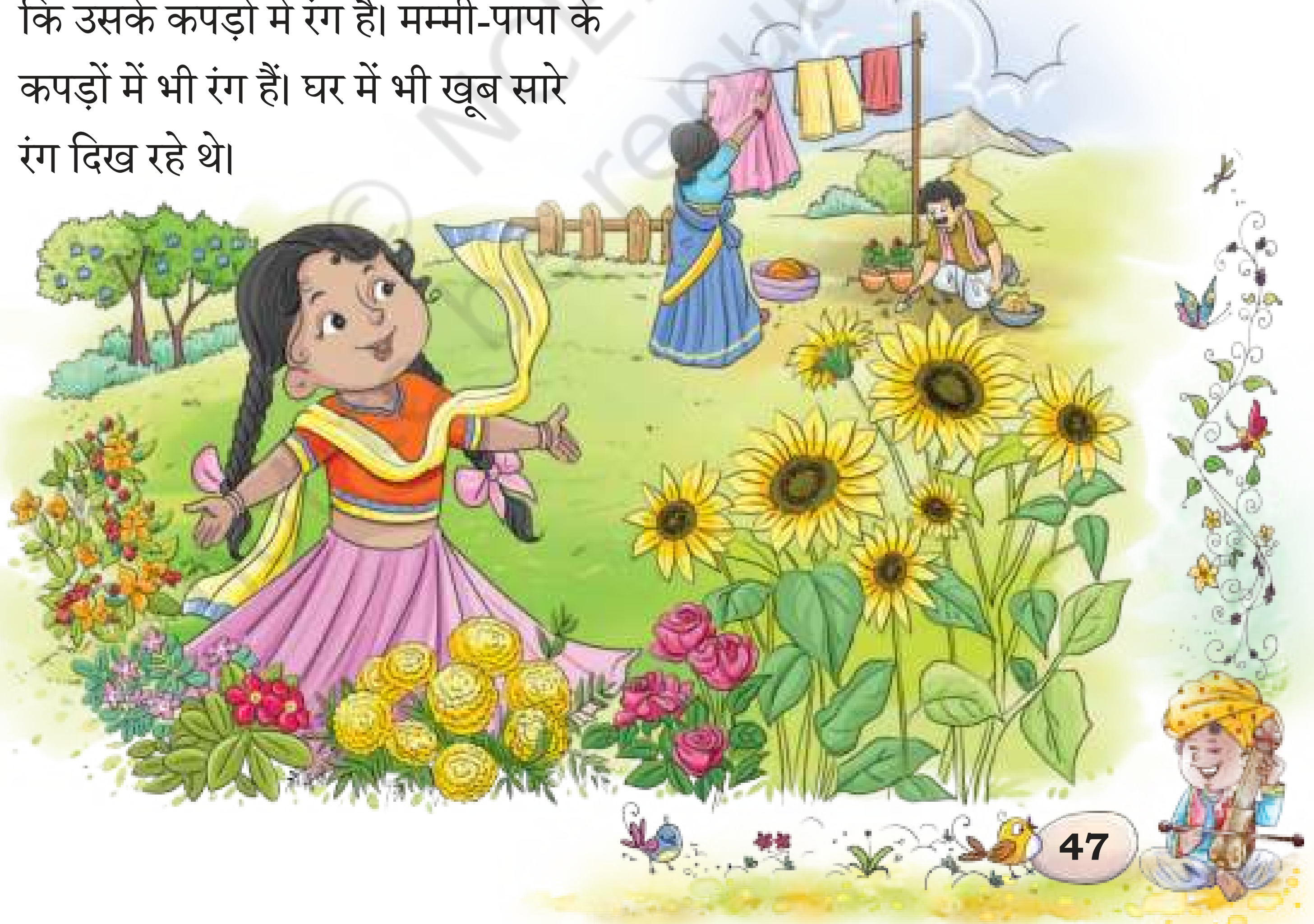

© NCERT not to be republished

तोसिया मम्मी के साथ बाज़ार चल पड़ी। वहाँ खूब सारी रंग-बिरंगी सब्ज़ियाँ थीं। गाजर, बैंगन, टमाटर, सेम, मटर। बाज़ार में पतंग की दुकान भी थी। दुकान में खूब सारी रंग-बिरंगी पतंगें थीं। काली, पीली, नीली, हरी, नारंगी। मम्मी चुन्नी की दुकान पर गईं। वहाँ खूब सारी रंग-बिरंगी चुन्नियाँ थीं। गुलाबी, बैंगनी, फिरोज़ी, आसमानी, भूरी। बाज़ार में गुब्बारेवाला खड़ा हुआ था। उसके पास खूब सारे रंग-बिरंगे गुब्बारे थे। नीले, पीले, हरे, लाल, गुलाबी। तोसिया ने खूब सारे रंग देखे। वह खुश हो गई कि रंग गायब नहीं हुए हैं। वह रंगों को गिनने लगी।

तोसिया घर आकर दोपहर को सो गई। उसने उठकर देखा कि नानी की सहेलियाँ आई हुई हैं। उन सबके बाल सफ़ेद-सफ़ेद हैं। तोसिया को एक बात याद आई। वह रात को नानी के साथ सोई थी। इसलिए सपने में सब सफ़ेद-सफ़ेद दिखा होगा। तोसिया नानी के बालों को गौर से देखने लगी। वह नानी के बालों को छू-छूकर देखने लगी। तोसिया सोचने लगी कि नानी के बाल सफ़ेद क्यों हैं। उसने नानी से

पूछा कि उनके बालों का रंग कहाँ गया। नानी बोलीं कि पहले उनके बाल भी काले थे। फिर उनके बालों का रंग तोसिया के बालों में चला आया।

—बरखा क्रमिक पुस्तकमाला, एन.सी.ई.आर.टी.

बातचीत के लिए

1. क्या आप कभी कोई सपना देखकर खुशी या डर से उठे हैं?
2. अपने सपनों के बारे में बातचीत कीजिए।
3. इस कहानी में कौन-कौन से रंग हैं?
4. संसार में रंग ना हों तो कैसा लगेगा?

खोजें-जानें

कहानी का क्रम खोजिए। फिर उसे पढ़कर सुनाइए–

( ) तोसिया ने नानी से उनके सफ़ेद बालों के बारे में पूछा।

( ) तोसिया बाज़ार गई जहाँ रंगीन पतंगें, चुन्नियाँ और गुब्बारे थे।

( ) तोसिया बगीचे में गई जहाँ तरह-तरह के रंग-बिरंगे फूल थे।

( ) तोसिया ने सपना देखा कि सब कुछ सफ़ेद हो गया है।

( ) तोसिया ने रसोई में रंगीन मसाले देखे।

( ) तोसिया घर आकर दोपहर को सो गई।

शब्दों का खेल

1. रंगों में छुपे शब्द खोजिए और लिखिए –

गुलाबी में गुलाब

आसमानी में ....

बैंगनी में ....

सिंदूरी में ....

© NCERT not to be republished

2. रसोई में रंग –

तोसिया ने रसोई में रंग ही रंग देखे। मिर्च .... रंग की। काली मिर्च .... रंग की। हल्दी .... रंग की। सरसों .... रंग की। धनिया पत्ती .... रंग की और मेथीदाना .... रंग का।

आइए कुछ बनाएँ

नीचे दिए गए चित्रों को देखकर सुंदर-सी कंदील बनाइए –

(हमें चाहिए— रंगीन पेपर, कैंची, गोंद)

1.

2.

3.
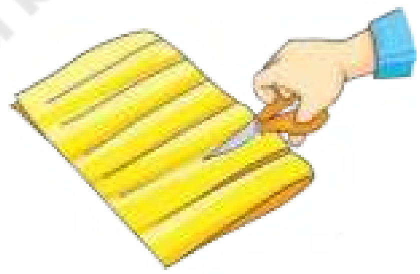

4.
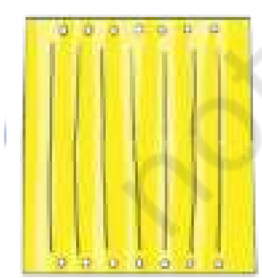

5.

6.
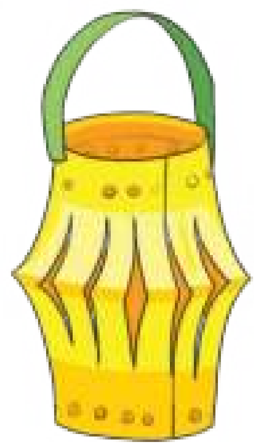

© NCERT not to be republished

इकाई 3: हरी-भरी धरती

चित्र और बातचीत

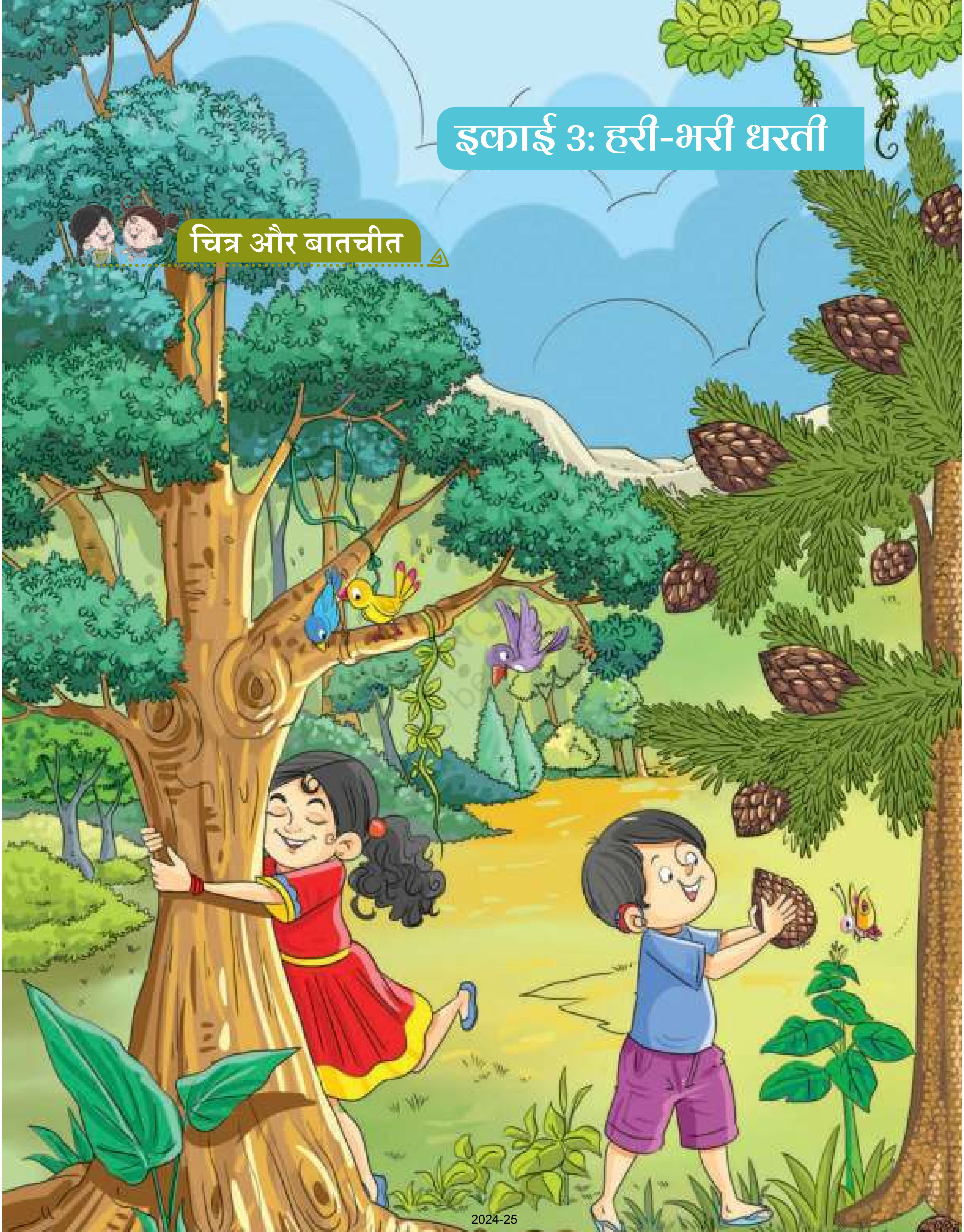

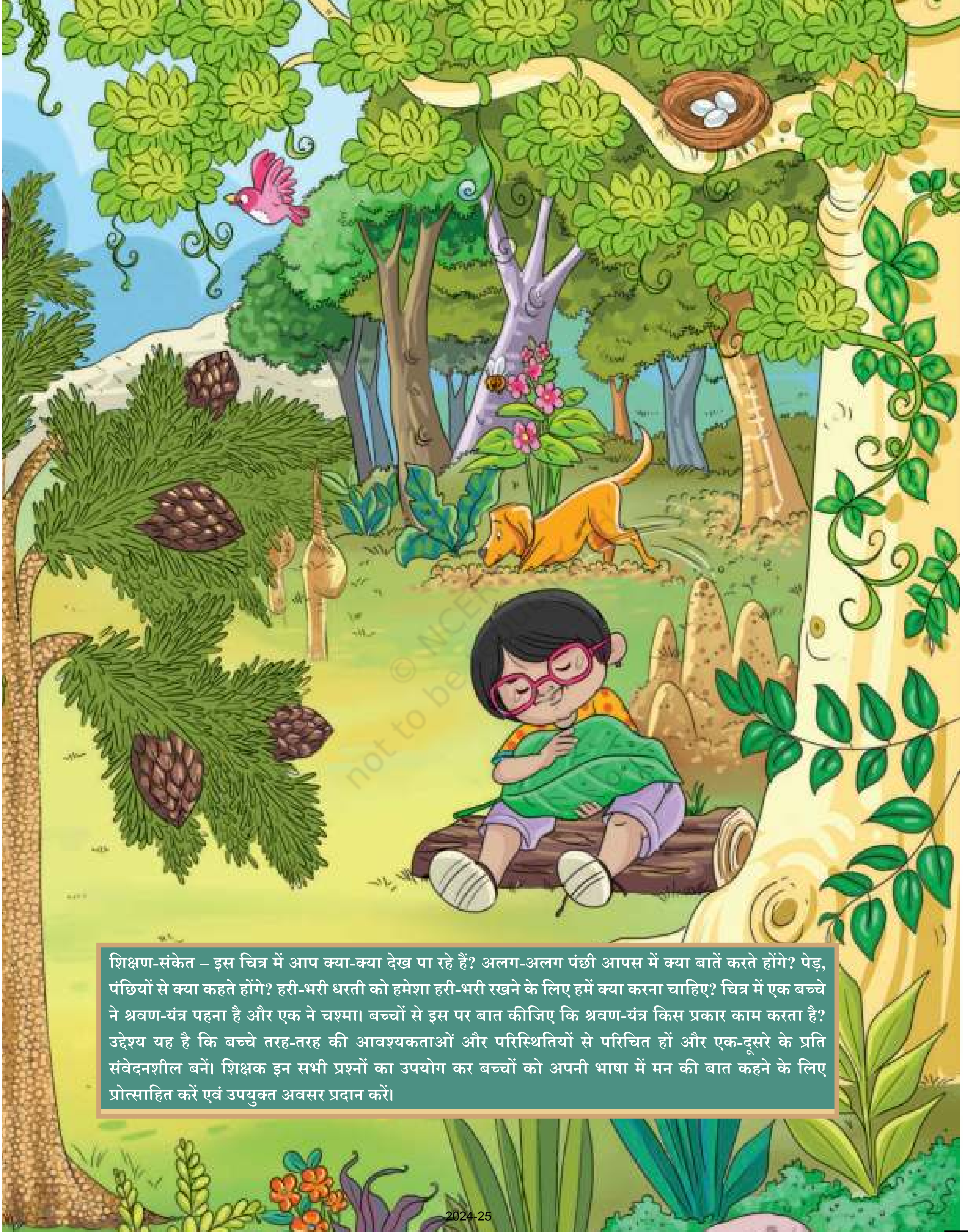

शिक्षण-संकेत – इस चित्र में आप क्या-क्या देख पा रहे हैं? अलग-अलग पंछी आपस में क्या बातें करते होंगे? पेड़, पंछियों से क्या कहते होंगे? हरी-भरी धरती को हमेशा हरी-भरी रखने के लिए हमें क्या करना चाहिए? चित्र में एक बच्चे ने श्रवण-यंत्र पहना है और एक ने चश्मा। बच्चों से इस पर बात कीजिए कि श्रवण-यंत्र किस प्रकार काम करता है? उद्देश्य यह है कि बच्चे तरह-तरह की आवश्यकताओं और परिस्थितियों से परिचित हों और एक-दूसरे के प्रति संवेदनशील बनें। शिक्षक इन सभी प्रश्नों का उपयोग कर बच्चों को अपनी भाषा में मन की बात कहने के लिए प्रोत्साहित करें एवं उपयुक्त अवसर प्रदान करें।

13

सुनें कहानी!

तालाब

इस तालाब का नाम छोटा तालाब है। यहाँ तुम्हें कई लोग दिखेंगे — केंचुए, साँप, केकड़े, मेंढक, कनखजूरे, दो कछुए और उनके साथ बच्चे...।

मछलियाँ पता नहीं कितनी होंगी! मच्छर जैसे कई उड़ाकू तुम्हें वहाँ मिलेंगे। तितलियाँ, गिलहरियाँ, चींटियाँ। कभी-कभी छिपकलियाँ और गिरगिट भी इधर चले आते हैं।

तालाब के किनारे एक पेड़ है। इस पर मकड़ियों के जाले हैं। और चिड़ियाँ! उनका तो पूछो ही मत — कौए, मैना, तोते, किंगफ़िशर, फ़ाख्ता...।

© NCERT not to be republished

आजकल सर्दियों के दिन हैं। मैं रोज़ इस तालाब को देखने आती हूँ। यहाँ इन दिनों सारस आए हुए हैं। छोटे तालाब पर खूब चहल-पहल है। थोड़े दिनों बाद सारस चले जाएँगे। तब तालाब को इन सबकी कितनी याद आएगी!

—शशि सबलोक

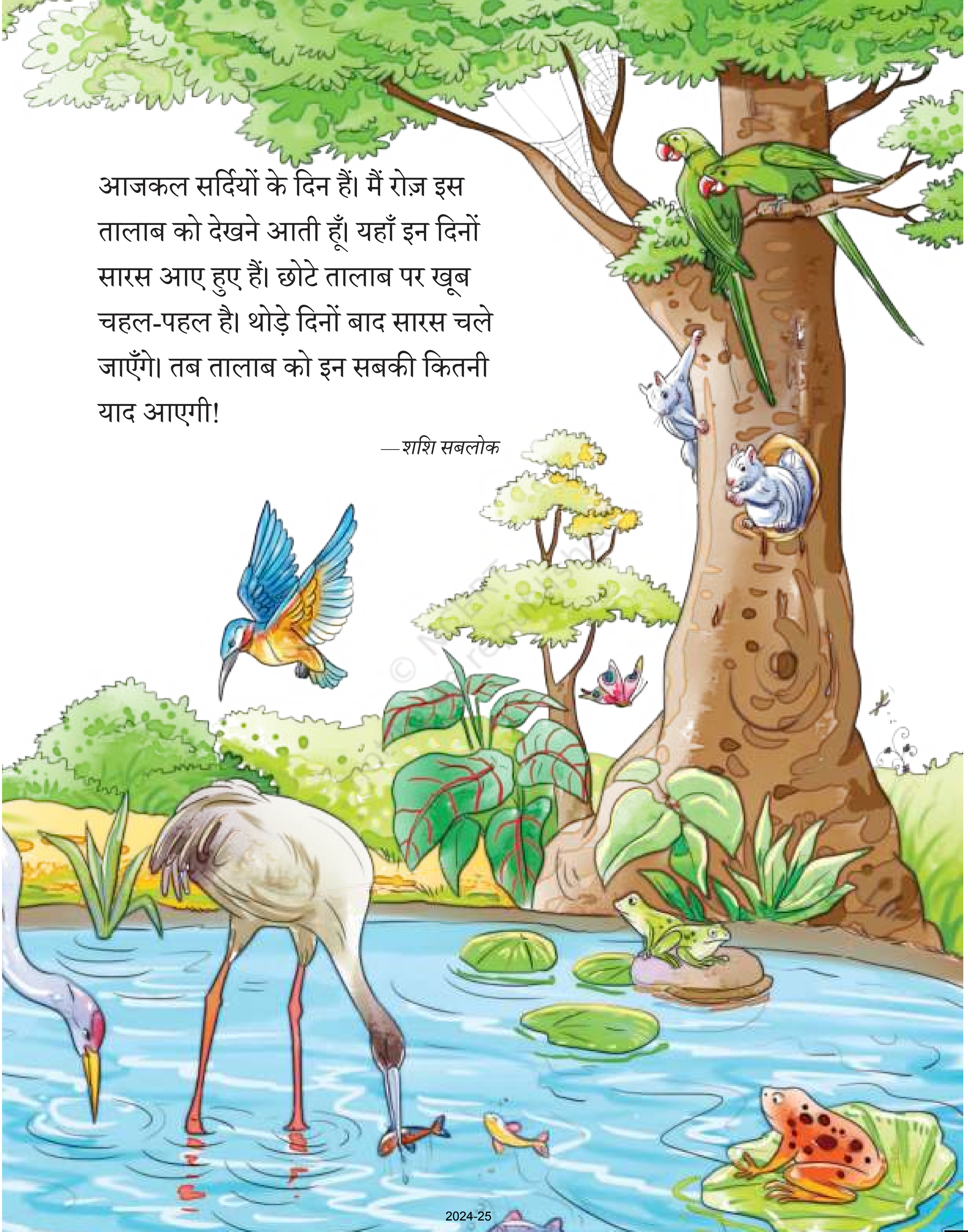

क्या आप जानते हैं?

1. फ़ाख्ता पक्षी दिखने में कबूतर जैसा होता है। इसे इंग्लिश में **स्पॉटेड डव** कहते हैं। चित्र देखकर बताइए कि इसे स्पॉटेड डव क्यों कहते होंगे?
2. किंगफिशर की चोंच लम्बी होती है। किंगफिशर मछलियाँ खाना पसंद करते हैं।

फ़ाख्ता

किंगफिशर

बातचीत के लिए

1. इस तालाब को छोटा तालाब क्यों कहते होंगे?
2. इस तालाब में कौन-कौन से जीव हैं?
3. तालाब के पास इतने सारे जीव क्यों रहते होंगे?
4. तालाब को किनकी याद आएगी? और क्यों?
5. कहानी के इस वाक्य में 'उड़ाकू' का अर्थ क्या हो सकता है?

मच्छर जैसे कई उड़ाकू तुम्हें वहाँ मिलेंगे।

नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी कॉपी में लिखिए –

1. सही या गलत पर घेरा लगाइए और कारण भी बताइए –
   (i) ये सारस हमेशा उसी छोटे तालाब के पास रहेंगे। सही / गलत
   (ii) यह कहानी गर्मियों में लिखी गई है। सही / गलत
2. आप तालाब के पास होते तो क्या करते? लिखिए –

....

....

© NCERT not to be republished

3. 'क्ष' अक्षर की पहचान कीजिए और 'क्ष' से बनने वाले शब्दों को पहचान करके दोबारा लिखिए –

क्ष

शब्द	ट्रेस करिए	खुद लिखिए
पक्षी	पक्षी	....
अक्षर	अक्षर	....
कक्षा	कक्षा	....
शिक्षा	शिक्षा	....

पहेली

चिड़िया को उसके घोंसले तक पहुँचने में उसकी सहायता कीजिए –

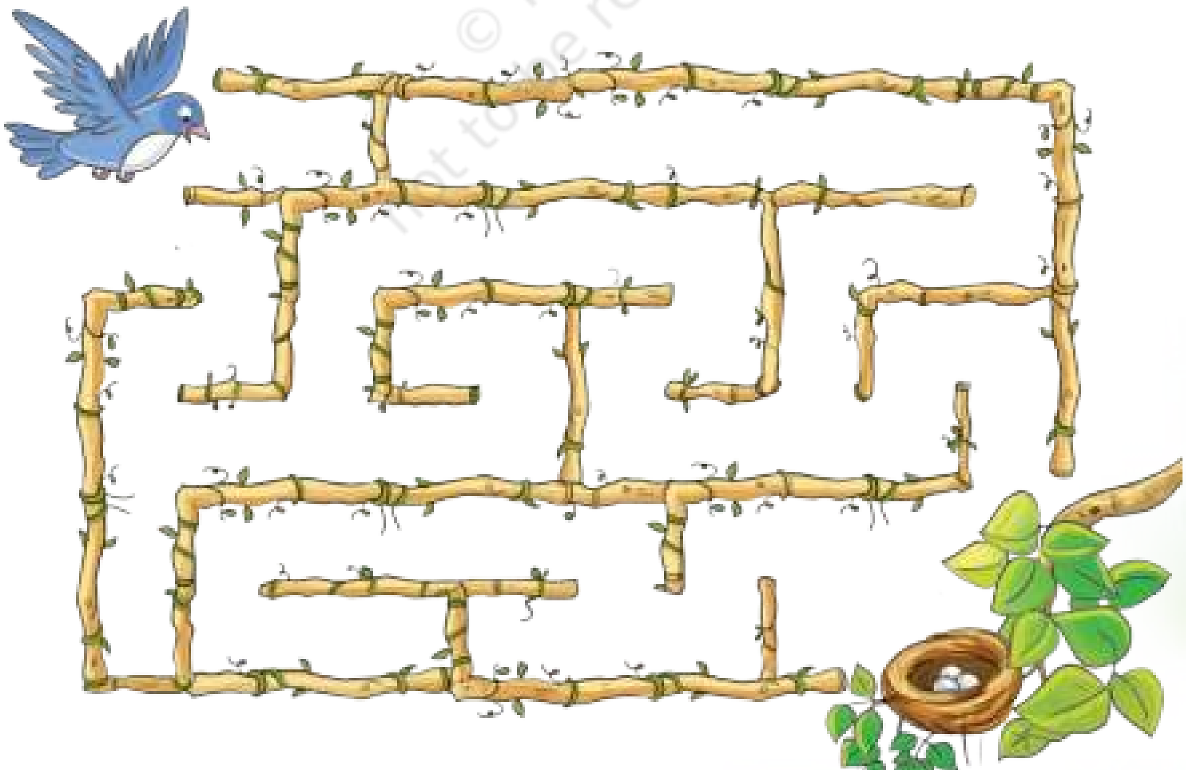

© NCERT not to be republished

शब्दों का खेल

जीवों के नाम को उनके चित्र से रेखा खींचकर जोड़िए –

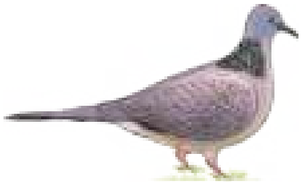

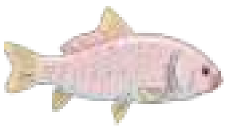

केंचुआ

सारस

साँप

कछुआ

मैना

कौआ

फ़ाख्ता

किंगफिशर

मछली

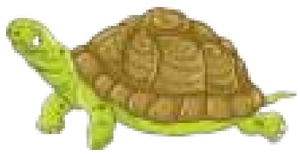

© NCERT not to be republished

खोजें-जानें

क्या आपके घर के पास कोई तालाब, नदी, झरना आदि है? क्या वह साफ़-सुथरा और खुश है? उसे साफ़-सुथरा और खुश करने के लिए हम क्या कर सकते हैं?

चित्र और बातचीत

फूलों की दुनिया

शिक्षण-संकेत – बच्चों के साथ रंग-बिरंगे फूलों के बारे में बातचीत करें। बातचीत के कुछ बिंदु इस प्रकार हो सकते हैं— आपने फूल कहाँ-कहाँ देखे हैं? आपके आस-पास कौन-कौन से फूल खिलते हैं? आपको कौन-सा फूल सबसे सुंदर लगता है और क्यों? फूलों के रंग, उनकी खुशबू, उनके खिलने का समय और महीना, फूलों को न तोड़ना आदि बिंदु भी बातचीत में सम्मिलित किए जा सकते हैं।

14

मिलकर पढ़िए

बीज

मुझे एक बीज मिला।
मैंने उसको गमले में डाला।
मैंने उसे पानी दिया और बहुत सारी धूप।
क्या यह पेड़ है?
क्या यह झाड़ी है?
क्या इसमें फूल होंगे?
क्या इसमें फल होंगे?
क्या यह लम्बा ऊँचा होगा?
क्या यह छोटा ही रहेगा?
मुझे नहीं पता।
कोई फ़र्क नहीं पड़ता!

—दीपा बलसावर

खोजें-जानें

किसी पुराने बर्तन या गमले में काले चनों को बोएँ। कुछ ही दिनों बाद चनों से हरे-भरे, छोटे-छोटे डंठल और पत्ते उगने लगेंगे। देखें, उन्हें उगने में कितना समय लगता है और कितना पानी और धूप।

© NCERT not to be republished

बातचीत के लिए

1. बीज कहाँ मिला होगा?
2. पेड़ और झाड़ी में कोई फ़र्क होता है क्या?
3. कहानी में क्यों कहा गया है कि 'कोई फ़र्क नहीं पड़ता'?
4. क्या आपने कभी बीज बोया है? या किसी और को बीज बोते देखा है?
5. बीज बोने के लिए .... , ... , और .... की आवश्यकता पड़ती है।
6. बीज में .... 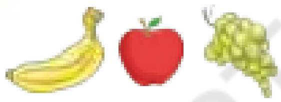 भी लग सकते हैं और .... भी।

रंग भरिए

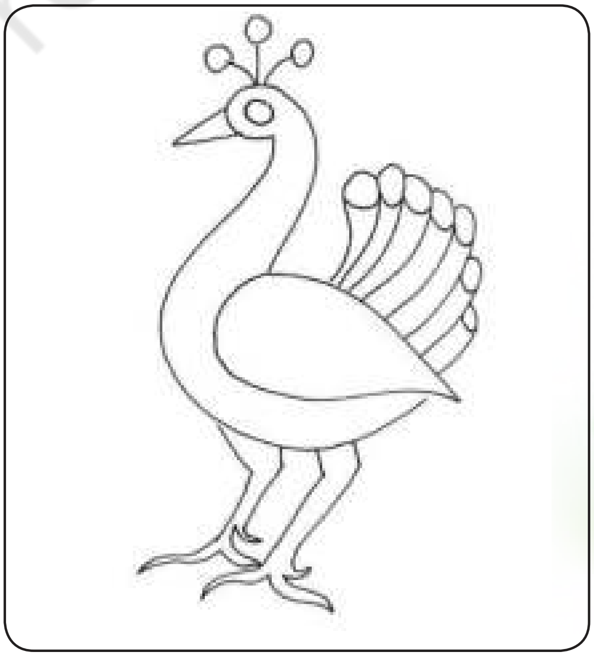

© NCERT not to be republished

15

आनंदमयी कविता

किसान

नहीं हुआ है अभी सवेरा,
पूरब की लाली पहचान,
चिड़ियों के जगने से पहले,
खाट छोड़ उठ गया किसान।

खिला-पिलाकर बैलों को ले,
करने चला खेत पर काम,
नहीं कभी त्योहार न छुट्टी,
उसको नहीं कभी आराम।

गरम-गरम लू चलती सन-सन,
धरती जलती तवे समान,
तब भी करता काम खेत पर,
बिना किए आराम किसान।

बादल गरज रहे गड़-गड़-गड़,
बिजली चमक रही चम-चम,
मूसलाधार बरसता पानी,
ज़रा न रुकता लेता दम।

हाथ-पाँव ठिठुरे जाते हैं,
घर से बाहर निकले कौन,
फिर भी आग जला, खेतों की,
रखवाली करता वह मौन।

है किसान को चैन कहाँ,
वह करता रहता हरदम काम,
सोचा नहीं कभी भी उसने,
घर पर रह करना आराम।

—*सत्यनारायण लाल*

बातचीत के लिए

1. क्या आपके परिवार में कोई किसान है? वे दिन में क्या-क्या काम करते हैं?
2. क्या आप कभी खेत में गए हैं? वहाँ क्या-क्या दिखाई देता है?
3. आपको कौन-सा काम करना सबसे अच्छा लगता है?
4. लू चलने का पता आपको कैसे लगता है?
5. चिड़ियों को भगाने के लिए खेत में क्या लगाया जाता है? अपनी भाषा में उसका नाम बताइए?
6. आपको किसान की सबसे अच्छी बात क्या लगती है?

सोचिए और लिखिए

1. खेत में उगने वाली कुछ वस्तुओं के नाम लिखिए –

(i) .... (iv) ....

(ii) .... (v) ....

(iii) .... (vi) ....

2. ठंड से बचने के लिए आप किन-किन वस्तुओं का प्रयोग करते हैं? उनके नाम लिखिए –

....

....

....

© NCERT not to be republished

शब्दों का खेल

इस कविता में सन-सन, गड़-गड़-गड़ और चम-चम जैसे शब्द आए हैं। ऐसे ही अपनी पसंद के कुछ और शब्द बनाइए और कविता पूरी कीजिए –

हवा चलती सन-सन,
पत्ते उड़ते ....।
बादल गरजते गड़-गड़-गड़,
बिजली चमकती चम-चम।

बारिश होती ....,
ओले बरसते ....।
सब शांत हो जाता ....,
फिर सूरज चमकता ....!

आइए, कुछ बनाएँ

यह 'बाघ बचाओ' का पोस्टर है। बिंदुओं को मिलाकर पोस्टर को पूरा कीजिए और एक संदेश लिखिए –

© NCERT not to be republished

चित्रकारी और लेखन

कप्पू एक भूरे रंग का कुत्ता है जो एक खेत में रहता है। चित्र पूरा कीजिए और कप्पू की दिनचर्या के बारे में लिखिए–

1

2

3

4

5

6

1. कप्पू सुबह उठकर सबसे पहले ....
2. फिर वह किसान के साथ ....
3. थोड़ी देर बाद कप्पू ....
4. खाना खाने के बाद कप्पू कुछ देर के लिए ....
5. शाम को कप्पू ....
6. सोने से पहले कप्पू ....

और ऐसे ही कप्पू का दिन बीत जाता है! जाने कप्पू कल क्या करेगा!

मूली

नानाजी ने बगीचे में मूली बोयी।
मूली से नानाजी बोले,
“उगो-उगो मूली। मज़बूत बनो
और लंबी हो।”

उग आयी मोटी और लंबी मूली। नानाजी गए
उसे निकालने।
खींचते रहे, अपना पूरा ज़ोर लगाया,
मगर मूली को बाहर न ला पाए।

तो फिर नानी को आवाज़ लगायी।
नानी ने थामा नाना को, नाना ने
थामा मूली को।
दोनों ने पूरा ज़ोर लगाया। मगर
मूली को दोनों निकाल न पाए।

© NCERT not to be republished

तभी नानी ने नातिन को बुलाया। नातिन ने थामा नानी को, नानी ने थामा नाना को, नाना ने थामा मूली को, सबने मिलकर खींचा।

मिलकर पूरा ज़ोर लगाया।
मगर मूली को निकाल
न पाए।

तब नातिन ने अपने कुत्ते को बुलाया। कुत्ते ने नातिन को थामा, नातिन ने नानी को थामा, नानी ने नाना को थामा, नाना ने मूली को थामा, सभी ने मिलकर ज़ोर लगाया। आखिर मिलकर सबने मूली को बाहर निकाल ही डाला!

— स्नेहलता शुक्ला

बातचीत के लिए

1. मूली इतनी बड़ी कैसे हुई होगी?
2. नानाजी इतनी बड़ी मूली का क्या करेंगे?
3. मूली से क्या-क्या बनता है?
4. मूली से बनी कौन-सी चीज़ आपको पसंद है?

शब्दों का खेल

कहानी के इस वाक्य को पढ़िए –

कुत्ते ने नातिन को **थामा**, नातिन ने नानी को **थामा**, नानी ने नाना को **थामा**, नाना ने मूली को **थामा**, सभी ने मिलकर ज़ोर लगाया।

'थामा' शब्द का क्या अर्थ हो सकता है? ज़रा सोचिए! इस शब्द से कुछ वाक्य बनाकर अपनी कॉपी में लिखिए।

© NCERT not to be republished

सोचिए और बताइए

1. **नानाजी ने सभी गाँववालों को दावत पर बुलाया है। मूली के गरमागरम पराँठे और ठंडी-ठंडी लस्सी बनाने के लिए किन वस्तुओं की आवश्यकता होगी?**

मूली के गरमागरम पराँठे बनाने के लिए	ठंडी-ठंडी लस्सी बनाने के लिए
....	....
....	....
....	....

2. **दावत के बाद नानाजी और नानीजी रसोई की सफ़ाई कैसे करेंगे? बताइए।**

17

सुनें कहानी

बरसात और मेंढक

सोमारू और कमली जंगल घूमने गए। लौटते समय उन्हें ज़ोर की भूख लगी। उन्हें एक गाय दिखी। कमली ने गाय से कहा, “ज़रा-सा दूध दे दो तो भूख मिटे।” गाय बोली, “मेरे खाने को घास ही नहीं है। मुझे हरी-हरी घास खिलाओ तो मैं दूध दूँ।”

कमली और सोमारू चले घास लाने। पर घास तो सूखकर पीली हो गई थी। घास ने कहा, “मुझे पानी दो तो मैं खाने लायक बनूँ।”

कमली और सोमारू चले पानी लाने पर नदी तो सूखी हुई पड़ी थी। नदी ने कहा, “बरसात हो तो मुझे पानी मिले।”

कमली और सोमारू चले बादल लाने। पर बादल तो बिन बरसे टँगे थे।
बादल बोले, “मेंढक टर्र-टर्र बोले तब तो हम बरसें।”

कमली और सोमारू चले मेंढक के पास। मेंढक बोले, “हम बाहर निकलते हैं तो बच्चे हमें पत्थर मारते हैं।” दोनों बोले, “जो हुआ उसके लिए माफ़ करो। अब से तुम्हें कोई पत्थर नहीं मारेगा।”

मेंढक मान गए और टर्र-टर्र करने लगे। टर्र-टर्र सुनकर बादल आए और झूमकर बरसे। नदी में पानी बहने लगा।

कमली और सोमारू ने नदी से पानी लाकर घास को दिया। घास हरी हो गई। दोनों घास लेकर गाय के पास गए। गाय ने घास खाकर दूध दिया। कमली और सोमारू ने दूध पीकर अपने घर की राह ली।

—साभार, इकतारा

© NCERT not to be republished

बातचीत के लिए

1. आपको ये कहानी कैसी लगी?
2. मेंढक सोमारू और कमली की बात क्यों मान गया? क्या आप होते तो मान जाते?
3. कहानी से लिए इन वाक्यों को पढ़िए। क्या आपने कभी किसी मित्र के साथ ऐसा कुछ किया है जिससे उन्हें चोट लगी हो या बुरा लगा हो?

मेंढक बोले, "हम बाहर निकलते हैं तो बच्चे हमें पत्थर मारते हैं।"
दोनों बोले, "जो हुआ उसके लिए माफ़ करो। अब से तुम्हें कोई पत्थर नहीं मारेगा।"

शब्दों का खेल

'ढ', 'ड', 'ड़', और 'द' वाले शब्द बनाइए। फिर सभी शब्दों को ज़ोर से पढ़िए। क्या 'ढ', 'ड', 'ड़', और 'द' की ध्वनियाँ बोलने-सुनने में अलग लगती हैं?

'ढ' वाले शब्द	'ड' वाले शब्द	'ड़' वाले शब्द	'द' वाले शब्द
मेंढक	डमरू	घड़ी	बादाम
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

शिक्षण-संकेत – दूसरे प्रश्न पर सभी बच्चों को बोलने का अवसर दीजिए। कहानी के संदर्भ को बच्चों के जीवन से जोड़िए।

© NCERT not to be republished

चित्रकारी और लेखन

कमली और सोमारू ने घर जाकर क्या किया होगा? चित्र बनाइए और कहानी को आगे बढ़ाइए –

© NCERT not to be republished

आनंदमयी कविता

उठो उठो

पत्ती डोलीं,
चिड़ियाँ बोलीं,
हुआ सवेरा, उठो उठो!

छाई लाली,
अहा निराली
मिटा अँधेरा, उठो उठो!

आलस त्यागो,
प्यारे जागो,
आँखें खोलो, उठो उठो!

देखो झाँकी,
भारत माँ की,
जय जय बोलो, उठो उठो!

—सोहनलाल द्विवेदी

शिक्षण-संकेत – बच्चों के साथ इस कविता को हाव-भाव के साथ गाएँ। बच्चों से उनकी दिनचर्या के बारे में बातचीत कीजिए, जैसे— समय से सोना-उठना, दाँत साफ़ करना, स्नान करना, भोजन करना, पाठशाला जाना, घर के कामों में सहयोग करना आदि। सुबह के वातावरण और परिवार के सदस्यों की दिनचर्या के बारे में भी बातचीत की जा सकती है।

2024-25

इकाई 4: मित्रता

18

सुनें कहानी

शेर और चूहे की दोस्ती

शेर मतवाली चाल से चला जा रहा था।

अचानक उसे एक हल्की-सी चीख सुनाई दी।
एक चूहे की पूँछ उसके पंजे के नीचे
आ गई थी।

शेर ने अपना पैर हटाया, चूहा फुदककर झाड़ियों में चला गया।
एक दिन शिकारी ने शिकार पकड़ने के लिए जाल बिछाया।
उस जाल में शेर फँस गया। वह ज़ोर-ज़ोर से दहाड़ने लगा।
जंगल में रहने वाले हाथी, भालू, हिरण, खरगोश, लोमड़ी,

© not to be republished

बंदर और अजगर समेत सभी पशु-पक्षियों ने दहाड़ सुनी पर कोई भी शेर की सहायता को नहीं आया।

हाँ, चूहा ज़रूर भागा-भागा वहाँ आया। वह अपने पैने दाँतों से जल्दी-जल्दी जाल कुतरने लगा। कुछ ही पल में सारा जाल कट गया और शेर आज़ाद हो गया।

—जगदीश जोशी

शिक्षण-संकेत – बच्चों को कहानी पढ़कर सुनाइए और उसके बाद दिए गए चर्चा प्रश्नों के आधार पर बातचीत कीजिए। यहाँ चर्चा का उद्देश्य केवल इतना भर है कि बच्चे सोचें और बिना झिझके अपने विचारों की अभिव्यक्ति करें। किसी भी चर्चा प्रश्न का कोई एक सटीक उत्तर नहीं है। बच्चे जो भी उत्तर दें उन्हें धैर्यपूर्वक सुनिए और उन्हें बोलने के लिए प्रोत्साहित कीजिए। सभी बच्चों को बातचीत में भाग लेने के समान अवसर दिए जाने चाहिए। जहाँ तक संभव हो बच्चों को अपनी भाषा में बातचीत के लिए प्रोत्साहित कीजिए।

बातचीत के लिए

1. क्या आप एक-दूसरे की सहायता करते हैं? कैसे?
2. शेर के दाँत भी तो पैने होते हैं तो फिर उसने खुद ही जाल क्यों नहीं कुतर डाला?

शब्दों का खेल

1. याद कीजिए कि कहानी में किसने क्या किया और नीचे दिए गए वाक्यों को पूरा कीजिए –

शेर
चूहा
शिकारी

.... मतवाली चाल से चला जा रहा था।
.... ने अपना पैर हटाया।
.... ने शिकार पकड़ने के लिए जाल बिछाया।
.... भागा-भागा वहाँ आया।

2. इस कहानी से हमने जाना कि चूहा अपने मित्र शेर को बचाने के लिए जाल कुतर सकता है। बताइए कि दिए गए जानवर अपने मित्रों के लिए क्या-क्या कर सकते हैं –

चूहा — जाल कुतर सकता है
बिल्ली — ....
बंदर — ....
मछली — ....
चिड़िया — ....
शेर — ....

शिक्षण-संकेत – इस गतिविधि का उद्देश्य है कि बच्चे स्वयं से अनुमान करें कि अलग-अलग जानवर क्या कर सकते हैं। बच्चे जो भी उत्तर दें उन पर बातचीत कीजिए कि उन्हें ऐसा किस कारण से लगता है।

© NCERT not to be republished

2024-25

3. आपके सबसे अच्छे मित्र का नाम क्या है? आप उसके साथ क्या-क्या करते हैं?

....

....

....

....

4. 'मित्र' शब्द में 'त्र' आया है। नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं जिनमें 'त्र' आया है। उन शब्दों को छाँटकर नीचे लिखिए –

पत्र, दोस्त, पात्र, कमल, त्रिकोण, त्रिशूल, मक्खी, अचार, वस्त्र

(i) .... (ii) .... (iii) ....

(iv) .... (v) ....

शिक्षण-संकेत – बच्चों को अभी औपचारिक रूप से 'त्र' नहीं सिखाया गया है। अगर वे कोई शब्द नहीं सोच पा रहे हैं तो उनकी सहायता कीजिए। सीधे शब्द बताने की जगह उन्हें संकेत देना बेहतर रहेगा।

© NCERT not to be republished

पहेली

बिना पंख ही उड़ जाती,
बाँध गले में डोर।
खींचो तो ऊपर चढ़ जाती,
रहे हाथ में छोर।
....

एक थाल मोती से भरा,
सिर के ऊपर औंधा धरा।
जैसे-जैसे थाल फिरे,
मोती उससे एक न गिरे।
....

चार पाँव पर चल न पाऊँ,
बिना हिलाए हिल न पाऊँ।
फिर भी सबको दूँ आराम,
झटपट बोलो मेरा नाम।
....

— साभार, जयप्रकाश भारती, एन.सी.ई.आर.टी.

खेल-खेल में

ठंडी जगहों पर याक ही हमारा सच्चा मित्र है। आज वह अपने घर का रास्ता भूल गया है। उसे उसके घर पहुँचने में सहायता कीजिए–

© NCERT not to be republished

मिलकर पढ़िए

राजू और मीना दोनों मित्र हैं और साथ में बस से विद्यालय जाते हैं। एक दिन, बस से विद्यालय जाते समय एक बड़ा लड़का उन दोनों को चिढ़ाने लगा। वे दोनों डर गए और रोने लगे। उन्हें असुरक्षित लगा।

असुरक्षित

जब हमारे आस-पास कोई खतरा हो या जब कोई हमें नुकसान या चोट पहुँचाने का प्रयत्न करे, तब हम अपने को असुरक्षित महसूस करते हैं।

सुरक्षित

जब हमारे आस-पास कोई खतरा न हो या जब कोई हमें नुकसान या चोट न पहुँचाए, तब हम अपने को सुरक्षित महसूस करते हैं।

यहाँ पर कुछ उदाहरण दिए गए हैं। आपको राजू और मीना को यह बताने में सहायता करनी है कि कौन-सा उदाहरण सुरक्षित है और कौन-सा असुरक्षित।

सुरक्षित के लिए (✓) का चिह्न लगाइए और असुरक्षित के लिए (✗) का चिह्न लगाइए –

1. आपके पिताजी आपके साथ खेल रहे हैं। ( )
2. आपका मित्र आपको मारता है। ( )
3. बाज़ार जाते समय आपकी माँ के हाथ से आपका हाथ छूट जाता है। ( )

© NCERT not to be republished

चित्र और बातचीत

खेल-कूद

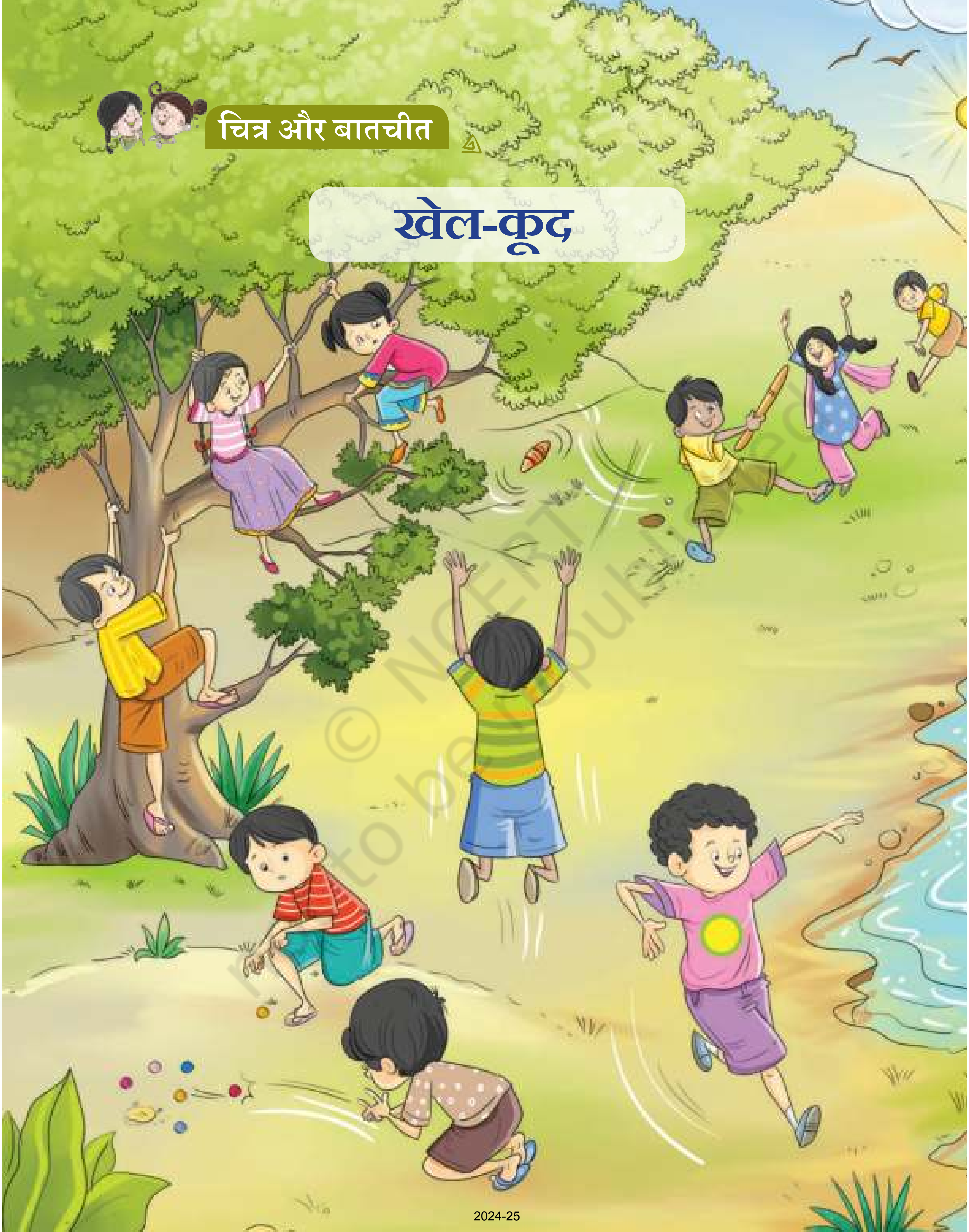

© NCERT not to be republished

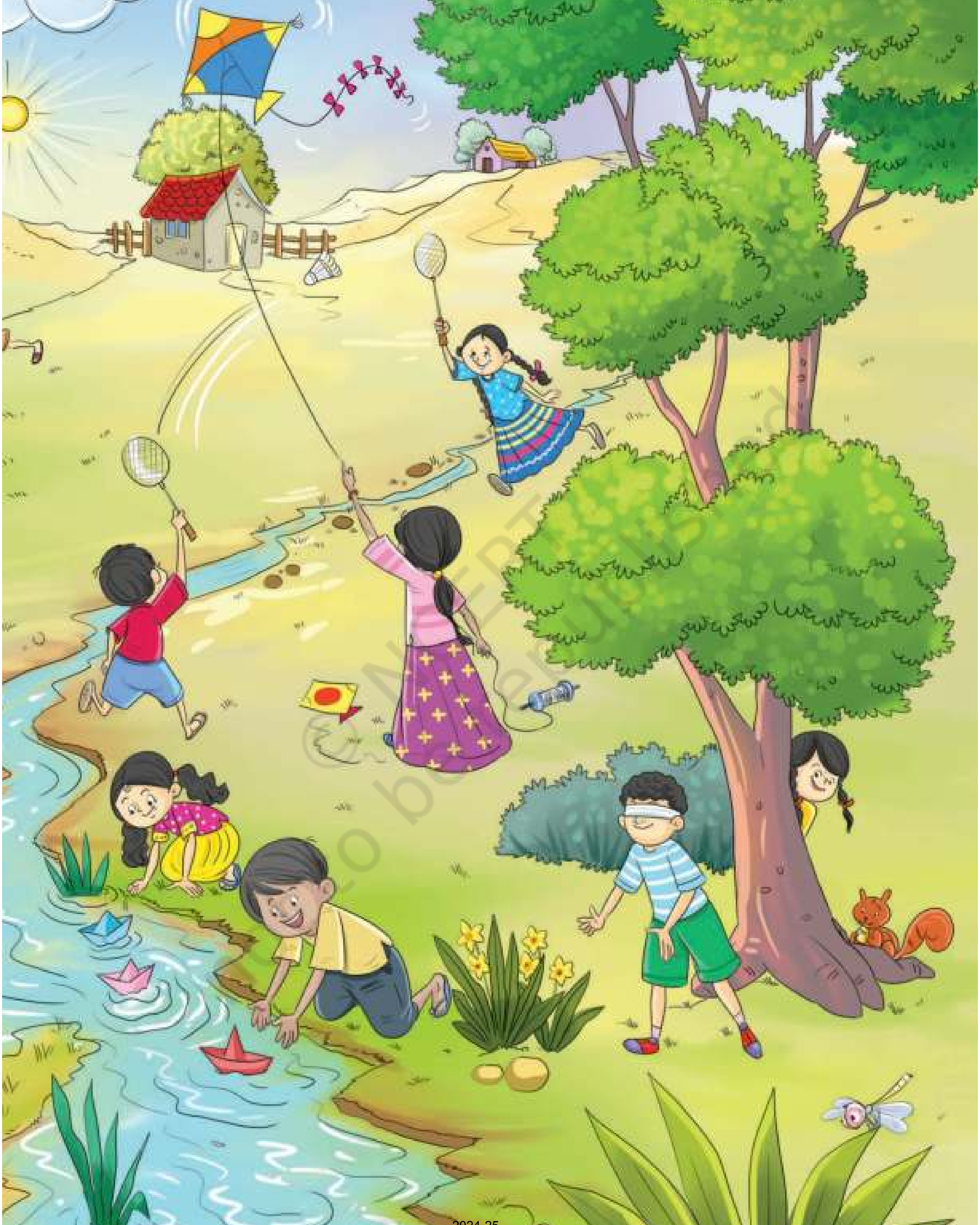

बातचीत के लिए

1. चित्र में कितने बच्चे दिख रहे हैं?
2. इस चित्र में बच्चे कौन-कौन से खेल खेलते हुए दिखाई दे रहे हैं?
3. इन खेलों के अलावा और कौन-से खेल आपने खेले हैं? उनके नाम और खेलने का तरीका बताइए।

शब्दों का खेल

चित्र में बहुत से खेल दिखाई दे रहे हैं। कुछ खेलों को अकेले खेला जाता है, कुछ को दो लोगों के जोड़े में और कुछ को खेलने के लिए बड़े समूह की आवश्यकता होती है।

1. चित्र को देखकर बताइए कि कौन-कौन से खेल खेलने के लिए कितने लोगों की आवश्यकता होती है –

	खेल	खेलने वालों की संख्या
अकेले खेले जाने वाले —	....	....
दो के जोड़े में खेले जाने वाले —	....	....
समूह में खेले जाने वाले —	....	....

2. आप मित्रों के साथ कौन-सा खेल खेलना पसंद करते हैं, उस खेल को कैसे खेलते हैं? लिखिए –

....

....

....

© NCERT not to be republished

19

मिलकर पढ़िए

आउट

छुट्टी का दिन था। जीत और बबली सुबह से खेल रहे थे। उन्होंने कई सारे खेल खेले।

दोनों ने रस्सी कूदी।

फिर छुपन-छुपाई खेली।

उसके बाद गिल्ली-डंडा खेला।

not to be republished © NCERT

बबली ने क्रिकेट खेलने के लिए कहा। जीत गेंद फेंकने के लिए तैयार हो गया।

जीत ने गेंद फेंकी। बबली ने ज़ोर से बल्ला घुमाया। गेंद मोहित के आँगन में चली गई।

मोहित के घर ताला लगा हुआ था। जीत और बबली का खेल रुक गया। बबली बोली कि उसे गेंद बनानी आती है। उसने जीत से कपड़े, कागज़ और पन्नी लाने को कहा। वह खुद भी ये सब ढूँढ़ने लगी। दोनों ने खूब सारी कतरनें और पन्नियाँ इकट्ठी कर लीं। बबली सुतली का टुकड़ा भी ले आई।

© NCERT not to be republished

बबली ने उन सबको मिलाकर एक
गोला बनाया।
गोले को सुतली से कस दिया।
दोनों की पसंद की गेंद बन गई।

खेल फिर से शुरू हो गया। इस बार बबली ने
गेंद उठाई। जीत ने बल्ला उठाया।
बबली ने गेंद फेंकी।
जीत ने ज़ोर से बल्ला
घुमाया। गेंद खुलकर
हवा में फैल गई।

बबली ने उछलकर एक कपड़ा पकड़ लिया। बबली उछल-उछलकर
आउट-आउट चिल्लाने लगी।
वह हाथ में कपड़ा लेकर
आउट-आउट कहते
हुए दौड़ी।

— साभार, बरखा क्रमिक पुस्तकमाला, एन.सी.ई.आर.टी.

© NCERT not to be republished

बातचीत के लिए

बातचीत के बाद इन प्रश्नों के उत्तर अपनी कॉपी में लिखिए –

1. जीत और बबली ने कौन-कौन से खेल खेले?
2. आप कौन-कौन से खेल खेलते हैं और किसके साथ खेलते हैं?
3. बबली ने गेंद बनाने में कौन-कौन सी वस्तुओं का उपयोग किया?
4. अगर आप अंपायर होते तो क्या जीत को आउट देते?

शब्दों का खेल

1. कहानी की घटनाओं को देखिए। उन्हें सही क्रम से लगाने के लिए अंकों को शब्दों में लिखिए –

© NCERT not to be republished

2. नीचे दिए गए खेलों के बारे में जानकारी इकट्ठी कीजिए और लिखिए –

खेल का नाम	आप किस नाम से जानते हैं?
कबड्डी	
छुपन-छुपाई	
पिट्ठू	
गिल्ली-डंडा	
कंचा	

खोजें-जानें

अखबार में से खोजकर अपनी पसंद के किन्हीं दो खिलाड़ियों के चित्र काटकर नीचे दी गई जगह पर चिपकाइए। घर में किसी बड़े व्यक्ति से इन खिलाड़ियों के बारे में पूछकर आइए और कक्षा में इन खिलाड़ियों के बारे में बताइए –

© NCERT not to be republished

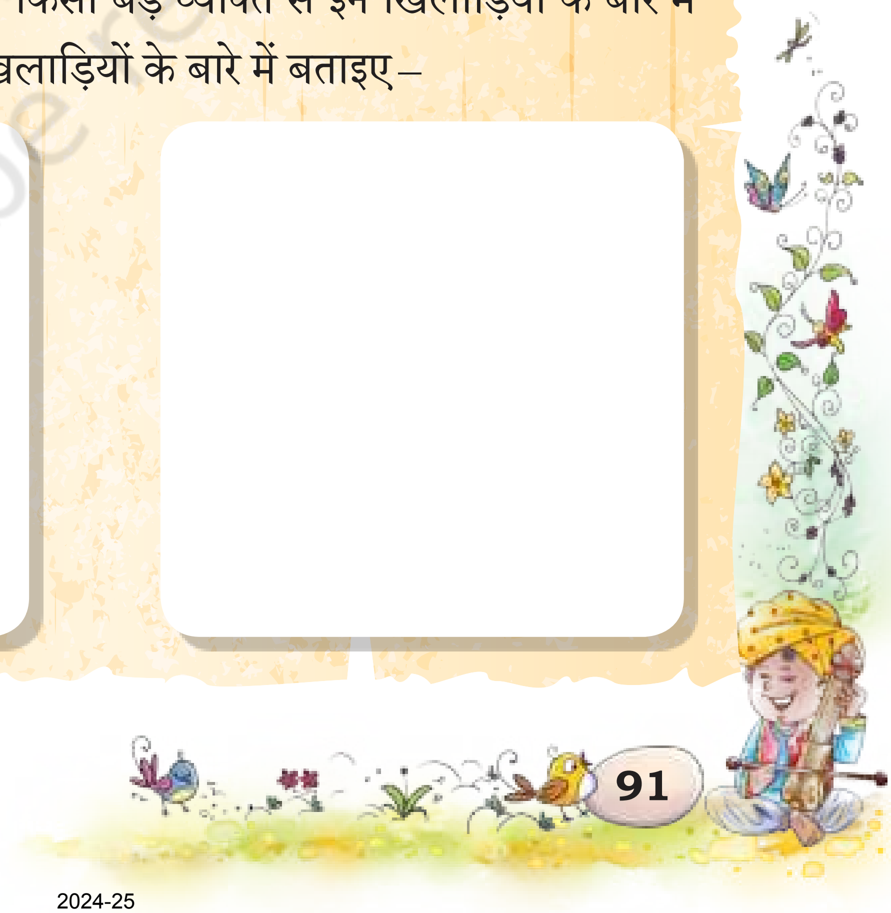

2024-25

खेल गीत

पोषम पा भई पोषम पा,
सा रे गा मा सा रे गा
आओ मिलकर खेलें खेल
छुपन-छुपाई छुक-छुक रेल
हँसना है मुस्काना है
फूलों-सा खिल जाना है

—साभार, एकलव्य

खेलों के नाम को उनके लिए आवश्यक वस्तुओं से मिलाइए–

बैडमिंटन

गिल्ली-डंडा

कंचा

क्रिकेट 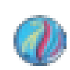

फुटबॉल 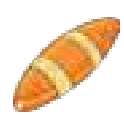

शिक्षण-संकेत – बच्चों को खेल गीत पढ़कर सुनाइए और उसके बाद अपने साथ गाने को कहिए। अगर पर्याप्त स्थान हो तो बच्चों को यह खेल भी खेलने दे सकते हैं। यह सुनिश्चित करें कि खेल में सभी बच्चों को भाग लेने के समान अवसर मिलें।

© NCERT not to be republished

मिलकर पढ़िए

खेल सन्ध्या

सन्ध्या को हम खेलने जाते,
मित्रों संग आनन्द मनाते।
कभी दौड़ना और उछलना,
कभी गेंद के खेल खेलना।
कभी कबड्डी, खो-खो खेलें,
गुट्टे, आँख-मिचौनी खेलें।
गिल्ली-डंडा सबको भाता,
सतोलिया भी मज़ा दिलाता।
या फिर पेड़ों पर जा चढ़ना,
या हँस हँस के बातें करना।
जब अंधेरा होने लगता,
सबको कुछ डर लगने लगता।
तब हम घर को वापस आते,
कल खेलेंगे यह कह जाते।

—*राकेश चन्द्र*

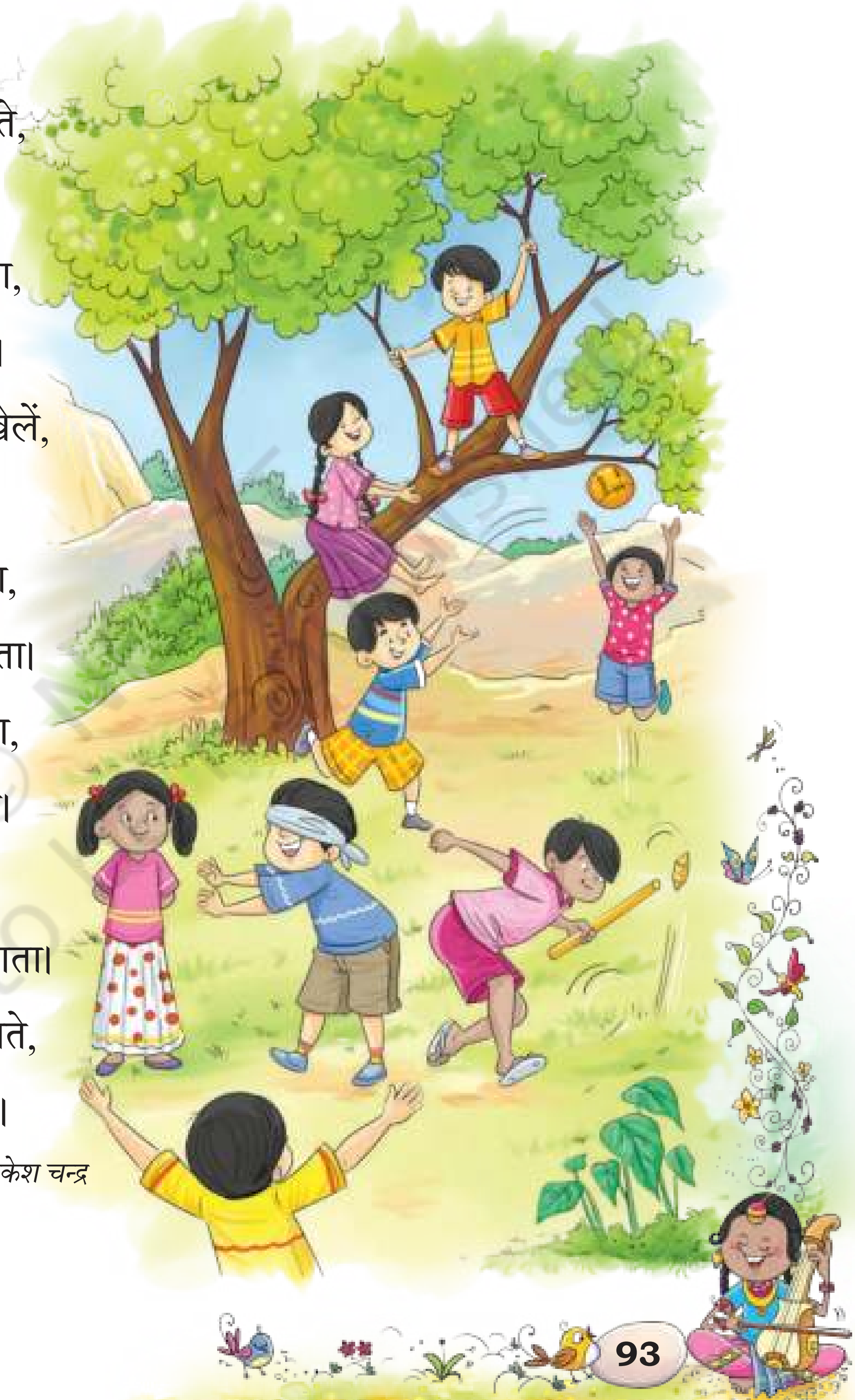

चित्र और बातचीत

मित्रों के साथ

शिक्षण-संकेत – बच्चों से चित्र में दर्शाए गए कामों— नृत्य करना, तबला बजाना, ताली बजाते हुए उत्साहवर्धन करना, आनंदित होना आदि के बारे में बातचीत कीजिए। बच्चों को उनके स्थानीय नृत्य, गीत, वाद्य यंत्रों के बारे में बताने के लिए प्रोत्साहित कीजिए। बच्चों की भाषा में लोकगीतों को गाने के लिए, मिलकर लोक नृत्य करने के लिए और लोक वाद्य यंत्रों को कक्षा में बजाने के लिए आमंत्रित कीजिए। इससे बच्चों की स्थानीय संस्कृति को बढ़ावा मिलेगा।

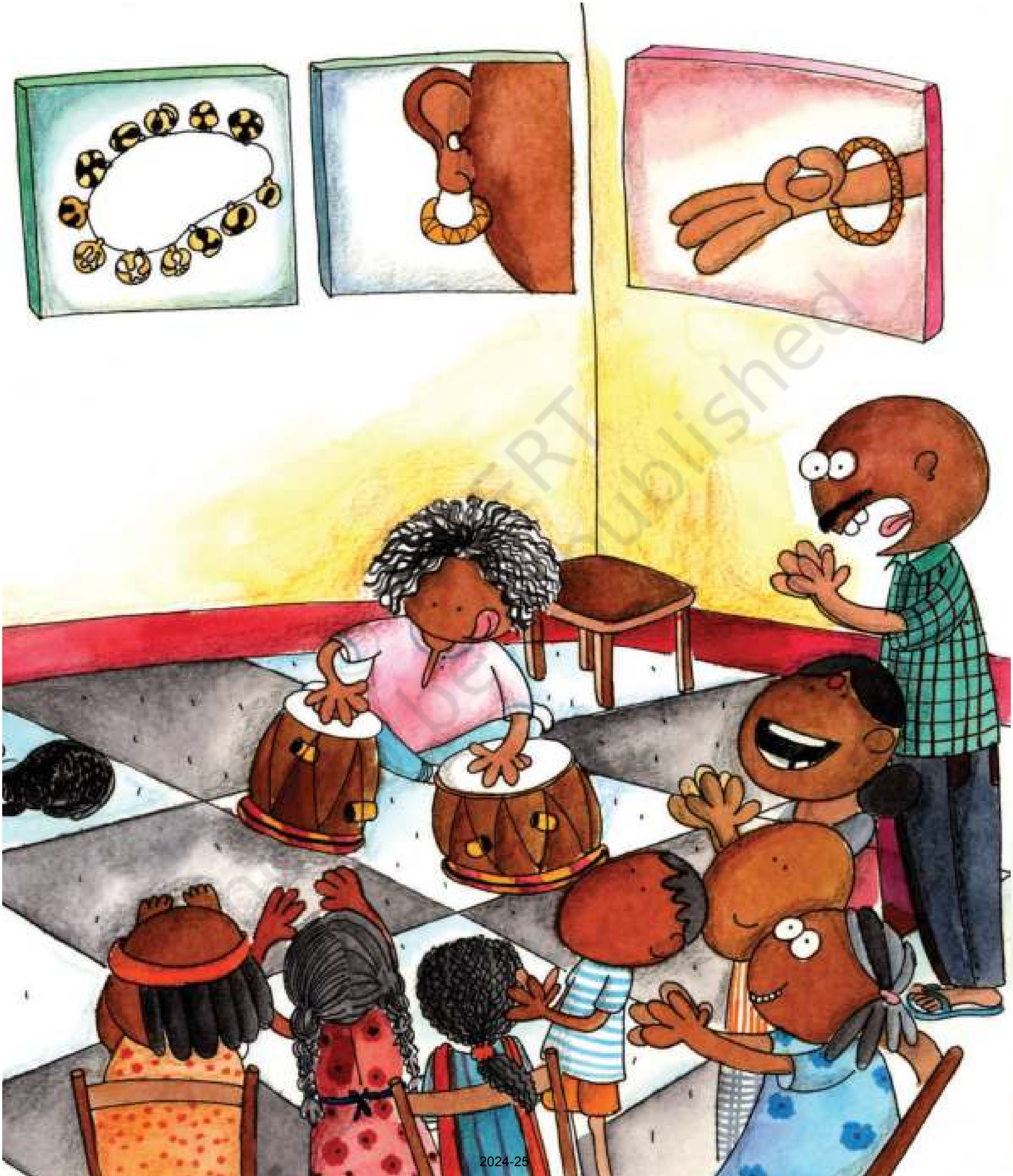

20

मिलकर पढ़िए

0222CH20

छुपन-छुपाई

एक दिन सब छुपन-छुपाई खेल रहे थे। उस दिन जीत की बारी थी। जीत सौ तक गिनकर सबको ढूँढ़ने निकला।

© NCERT not to be republished

2024-25

मोहित दरवाज़े के पीछे मिल गया।

जीत सबको कमरे में ढूँढ़ने लगा। बबली अलमारी के पीछे मिल गई।

© NCERT not to be republished

मारिया पलंग के नीचे मिल गई। उसके बाद जीत आँगन की तरफ़ गया।

सिमरन दादी के पीछे मिल गई। जीत नाज़िया को आँगन में ढूँढ़ने लगा।

जीत ने नाज़िया को चादर के पीछे ढूँढ़ा।

फिर जीत नाज़िया को ढूँढ़ने के लिए बाहर आया। वह पेड़ के नीचे खड़ा होकर सोचने लगा।

नाज़िया ने ऊपर से कूदकर उसे धप्पा दिया।

जीत दुबारा गिनती गिनने चल दिया।

— साभार, बरखा क्रमिक पुस्तकमाला, एन.सी.ई.आर.टी.

बातचीत के लिए

1. आप अपने घर में कहाँ-कहाँ छिप सकते हैं?
2. अगर खेलते हुए आपको चोट लग जाए तो आप क्या करेंगे?
3. अगर आप खेल में हार जाते हैं तो क्या करते हैं?

नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी कॉपी में लिखिए –

1. जीत ने कितने बच्चों को ढूँढ़ लिया?
2. कौन-कौन कहाँ मिल गया?
3. छुपन-छुपाई में धप्पा कब बोलते हैं?

छुपन-छुपाई

1. कौन किसके पीछे छिप सकता है और कैसे?
2. कौन किसी के भी पीछे नहीं छिप सकता और क्यों?

© NCERT not to be republished

मेरी कहानी

आपने 'छुपन-छुपाई' कहानी पढ़ी। अब आप अपनी कहानी लिखने का प्रयास कीजिए–

आप इस तरह से शुरुआत कर सकते हैं।

मैं अपने मित्रों के साथ .... खेलता हूँ/

खेलती हूँ। ....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

© NCERT not to be republished

शिक्षण-संकेत – बच्चों के साथ तरह-तरह के खेलों और उनकी पसंद के खेलों के बारे में बातचीत कीजिए। उनके अनुभव के आधार पर उन्हें इस कहानी को लिखने के लिए प्रोत्साहित कीजिए। उन्हें अपनी कहानी पढ़कर सुनाने का अवसर अवश्य दीजिए।

शब्दों का खेल

शब्द अंत्याक्षरी

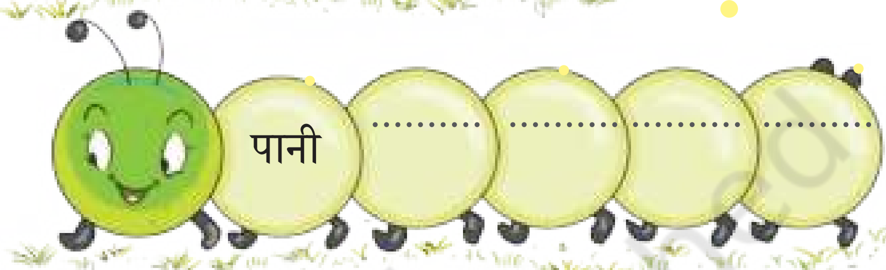

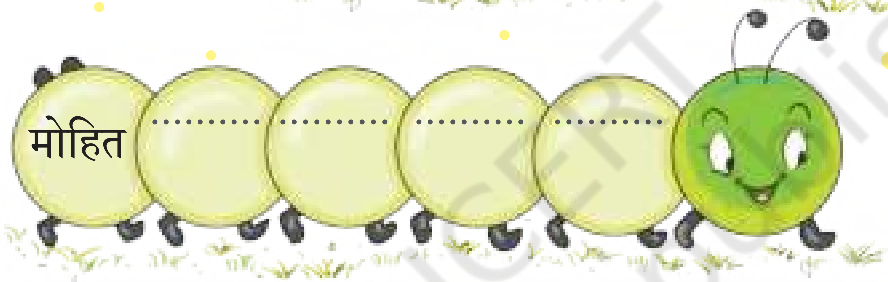

सोचिए और लिखिए

नीचे दिए गए खिलाड़ियों को पहचानकर उनके नाम लिखिए –

....

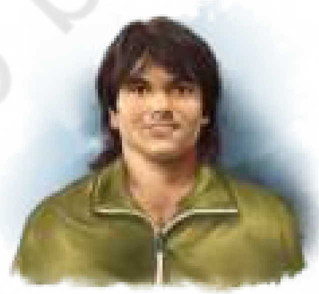

....

....

शिक्षण-संकेत – शब्द अंत्याक्षरी में बच्चे संज्ञा, विशेषण, क्रियापद भी बता सकते हैं। ये शब्द उनकी मातृभाषा से भी हो सकते हैं। खिलाड़ियों की पहचान करने में बच्चों की सहायता करें।

© NCERT not to be republished

21

आनंदमयी कविता

हाथी साइकिल चला रहा था

हाथी साइकिल चला रहा था,
पीछे चींटी बैठी थी,
झूम रहा था हवा में हाथी,
चींटी शान से ऐंठी थी।

तभी चढ़ाई सीधी आई,
लगे हाँफने हाथी दद्दा,
चरर-मरर-चूँ रुकी साइकिल,
लगा सरकने पीछे चक्का।

चींटी चट कूदी साइकिल से,
बोली-मत घबराना दद्दा,
आप पाँव पैडल पर मारो,
मैं हूँ न, देती हूँ धक्का!

—*श्याम सुशील*

© NCERT not to be republished

बातचीत के लिए

आइए, इस कविता पर एक कहानी बनाएँ। दिए गए खाली स्थान को भरकर कहानी पूरी कीजिए –

हाथी .... चला रहा था, उसके पीछे .... बैठी थी। हाथी मज़े से .... था और चींटी .... थी। आगे सीधी .... आई और साइकिल चलाते-चलाते हाथी .... लगा। साइकिल .... की आवाज़ करती हुई रुक गई और उसका .... सरकने लगा। हाथी की सहायता करने के लिए चींटी चट से .... कूदी और उसने हाथी को कहा कि .... आप बिलकुल भी मत ....। आप बस पैडल पर अपने .... मारो, मैं हूँ न, मैं .... धक्का।

मेरी कहानी

इस कविता में भी एक कहानी छुपी है, आप उस कहानी को आगे बढ़ाइए –

चींटी ने साइकिल को ज़ोर से धक्का दिया। पर साइकिल आगे ही नहीं बढ़ रही थी।

....

....

....

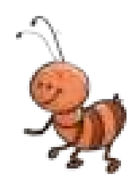

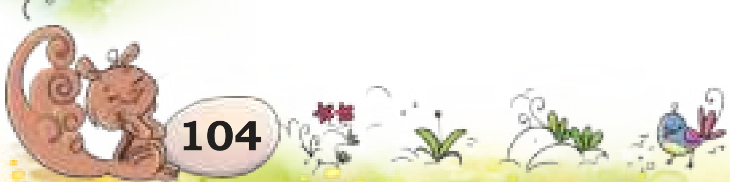

© NCERT not to be republished

कहानी लिखिए

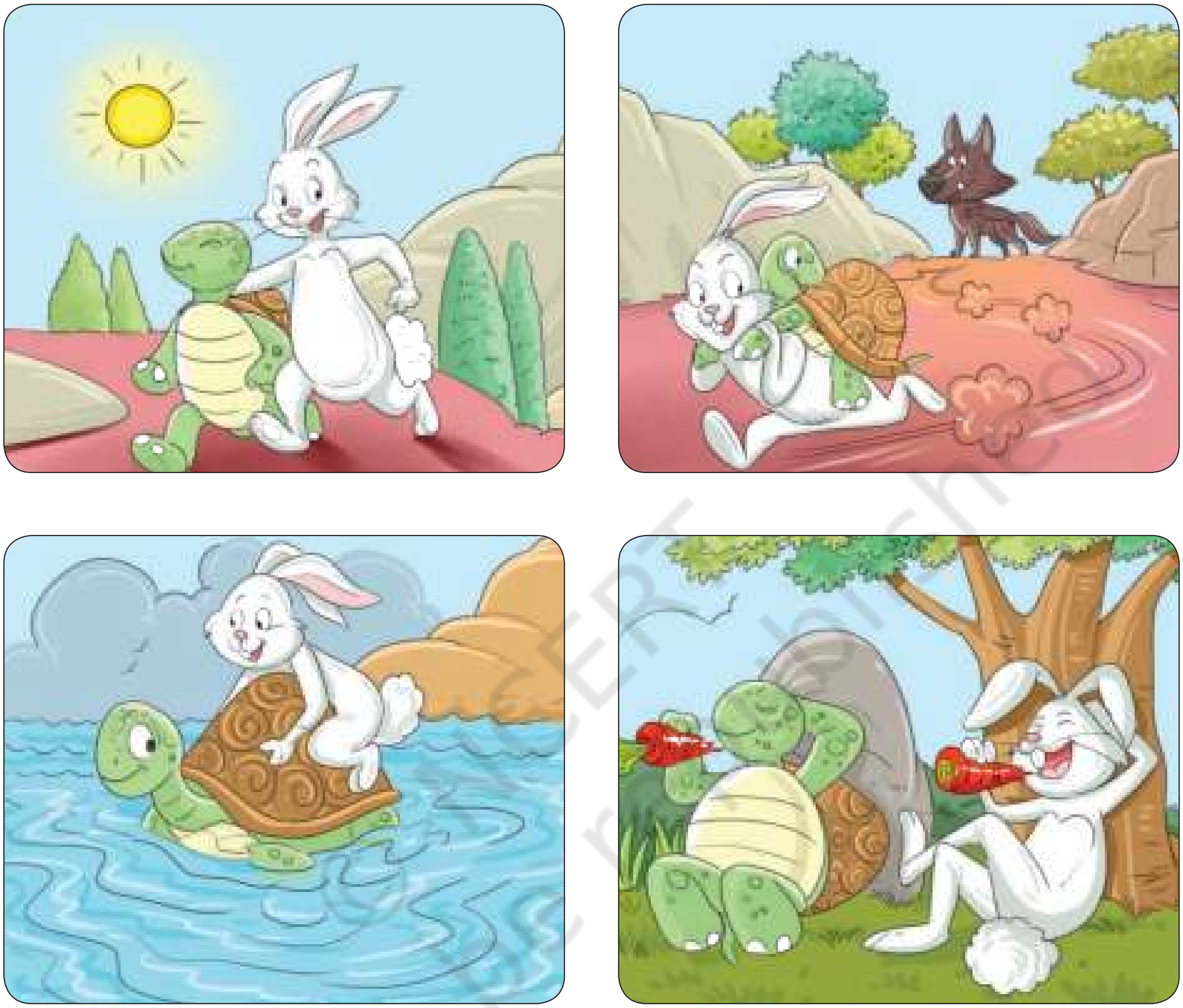

ऊपर दिए गए चित्रों में एक कहानी छुपी है। छुपी कहानी को अपने शब्दों में लिखिए।

> शिक्षण-संकेत – सभी बच्चे कहानी लिखने का प्रयास करेंगे। यह स्वतंत्र लेखन का शुरुआती समय है इसलिए बच्चे वर्तनी, वाक्य-विन्यास की काफ़ी गलतियाँ कर सकते हैं। शुरुआत में उनकी गलतियों को नज़रअंदाज़ करना ठीक होगा। फिर उनसे बात करके उन्हें स्वयं गलतियाँ ठीक करने को कह सकते हैं। बच्चों से यह भी अपेक्षित नहीं है कि वे किसी परिचित/ पहले से सुनी कहानी को हूबहू लिख दें। वे इसमें अपनी कल्पना से कुछ जोड़ सकते हैं या पूरी कहानी ही बदल सकते हैं। यहाँ आवश्यक बात यह है कि बच्चे स्वयं से कल्पना करें और उसे लिखने का प्रयास करें।

डरो मत!

नरेंद्र को चंपक का पेड़ बहुत पसंद था। चंपक के पेड़ पर लटककर झूलना उन्हें और भी पसंद था। चंपक का यह पेड़ उनके मित्र के घर लगा था।

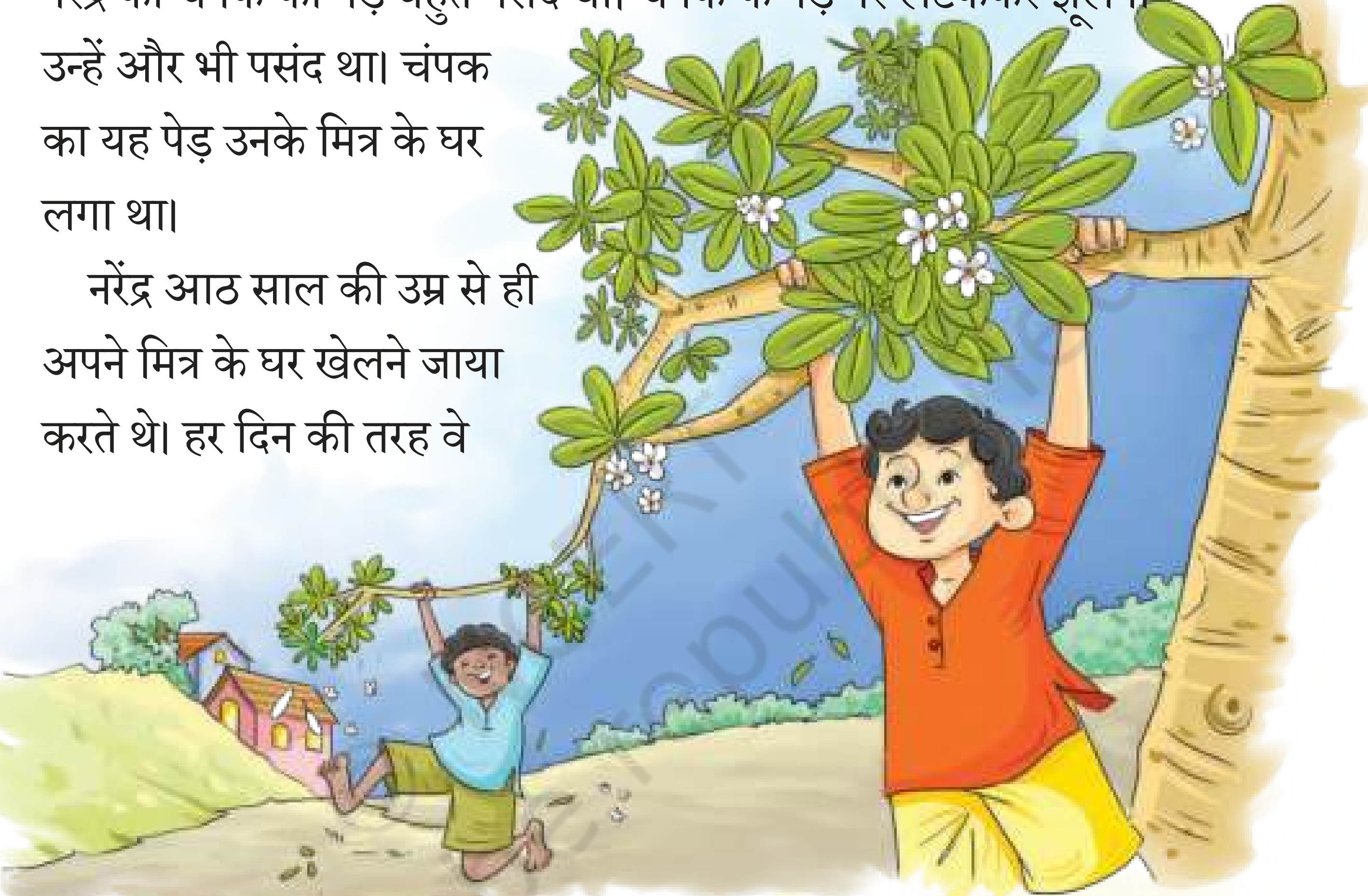

नरेंद्र आठ साल की उम्र से ही अपने मित्र के घर खेलने जाया करते थे। हर दिन की तरह वे चंपक के पेड़ पर झूल रहे थे। तभी उनके मित्र के दादाजी वहाँ आए और बोले – " नरेंद्र, पेड़ से उतरो। दुबारा इस पेड़ पर मत चढ़ना।"

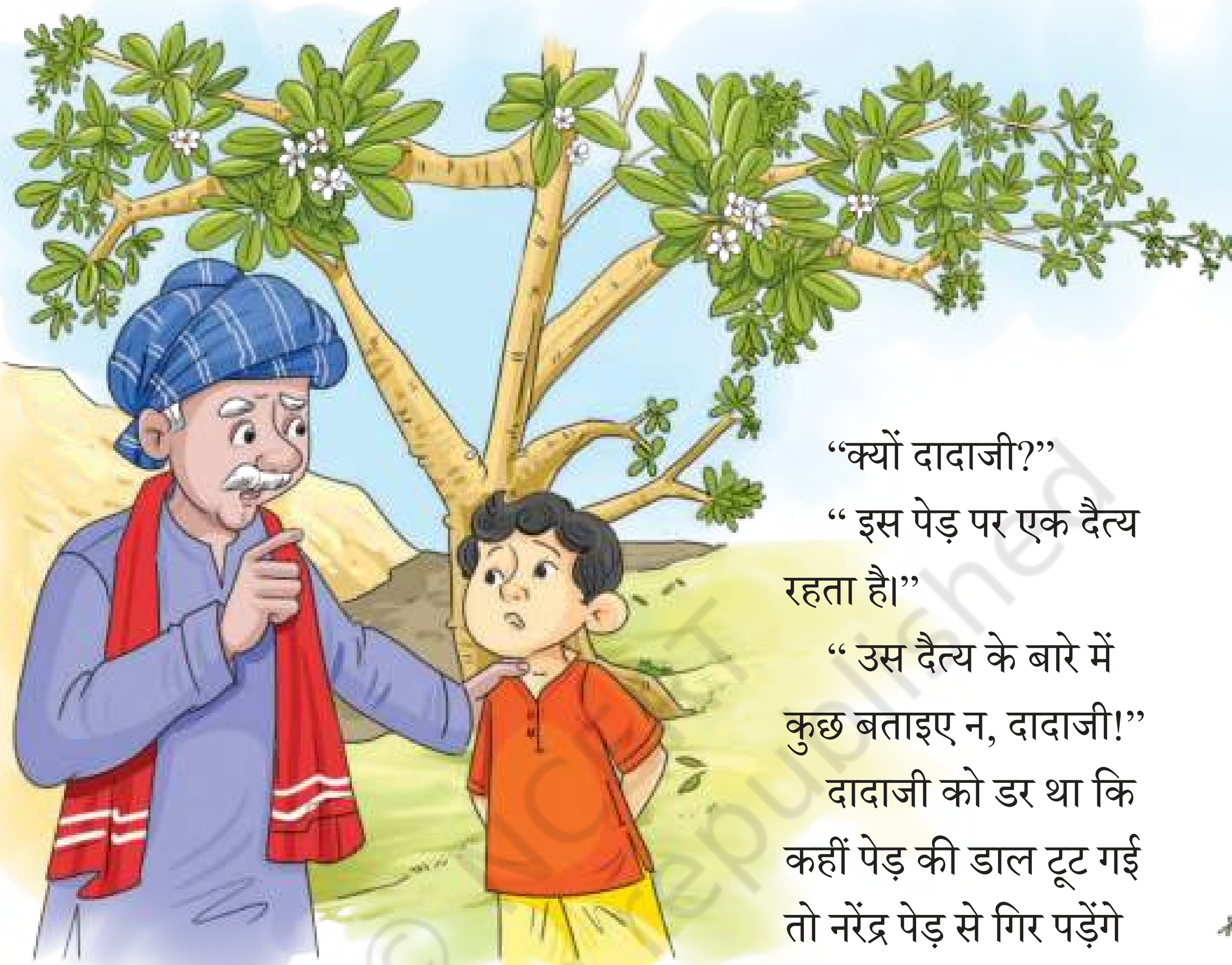

"क्यों दादाजी?"

"इस पेड़ पर एक दैत्य रहता है।"

"उस दैत्य के बारे में कुछ बताइए न, दादाजी!"

दादाजी को डर था कि कहीं पेड़ की डाल टूट गई तो नरेंद्र पेड़ से गिर पड़ेंगे और उन्हें चोट लग जाएगी।

दादाजी ने बताया, "वह दैत्य बहुत डरावना है।"

दादाजी की बात सुनकर नरेंद्र को अचरज हुआ। वे बोले, "दादाजी दैत्य के बारे में और बताइए न!"

"वह पेड़ पर चढ़ने वालों की गर्दन तोड़ देता है।"

नरेंद्र दादाजी की सारी बातें ध्यान से सुन आगे बढ़ गए। यह देख दादाजी मुस्कुराए और वे भी आगे बढ़ गए। उन्हें लगा कि बालक दैत्य की बात सुनकर डर गया है। अब वह पेड़ पर नहीं चढ़ेगा।

© NCERT not to be republished

लेकिन दादाजी जैसे ही कुछ आगे बढ़े, नरेंद्र फिर से पेड़ पर चढ़ गए और डाल पर झूलने लगे।

यह देख उनका मित्र जोर से चीखा, " नरेंद्र, तुमने दादाजी की बात नहीं सुनी? वह दैत्य तुम्हारी गर्दन तोड़ देगा।"

नरेंद्र ने हँसकर कहा, "तुम भी कितने भोले हो! अगर दादाजी की बात सच होती तो मेरी गर्दन टूट चुकी होती। लेकिन ऐसा हुआ क्या?"

"नहीं तो।"

"यही तो! किसी ने तुमसे कुछ कहा है, उस पर यकीन मत करो। खुद सोचो। इसलिए डरो मत!"

आगे चलकर यही बालक नरेंद्र स्वामी विवेकानंद के नाम से प्रसिद्ध हुए।

स्वामी विवेकानंद बचपन से ही निडर और समझदार थे।

—आस्तिक सिन्हा

© NCERT not to be republished

22

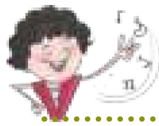

आनंदमयी कविता

चार दिशाएँ

उगता सूरज जिधर सामने
उधर खड़े हो मुँह करके तुम
ठीक सामने पूरब होता
और पीठ पीछे है पश्चिम
बायीं ओर दिशा उत्तर की
दायीं ओर तुम्हारे दक्षिण
चार दिशाएँ होती हैं यों
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण।

—साभार, यू.पी. बोर्ड एवं
एस.सी.ई.आर.टी., यू.पी.

© NCERT not to be republished

बातचीत के लिए

1. आप दिशा का अनुमान कैसे लगाते हैं?
2. नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। इन शब्दों से अपनी-अपनी कहानी बनाइए और कक्षा में सुनाइए।

आकाश	ओले	बादल	जंगल	मिलकर	जानवर	शेर
हाथी	लोमड़ी	डर	सुबह	खुशी-खुशी	नाचना	पहाड़

खेल-खेल में

एक गोले में बैठकर इस गतिविधि को कीजिए–

1. आपके दाईं ओर कौन-कौन से मित्र बैठे हैं?
2. आपके बाईं ओर कौन-कौन से मित्र बैठे हैं?
3. बाईं ओर से आप किस नंबर पर हैं?
4. दाईं ओर से आप किस नंबर पर हैं?

आइए, कुछ बनाएँ

छोटे समूहों में चारों दिशाओं के नाम लिखे हुए कार्ड्स बनाइए और दीवारों पर सही जगह लगाइए। चारों दिशाओं के लिए कुछ चित्र भी बनाइए।

© NCERT not to be republished

चंदा मामा

लो रात हो गई।
देखो, आकाश में चारों तरफ़ कितना अँधेरा है!
अहा! ये छत पर कैसा सुंदर प्रकाश!
तो ये चंदा मामा हैं। आओ चंदा मामा!
अरे, ये क्या! बादल जी आप नहीं आइए।
चंदा मामा रूठ जाएँगे। बादल जी आप जाइए ना!
मैं चंदा मामा को देख भी नहीं पा रहा।
"माफ़ करना मुझे, मैं तो दो मिनट चंदा से गपशप कर रहा
था। लो मैं अभी चला! अच्छा, नमस्ते, फिर मिलेंगे!"
हाँ, अब ठीक है। देखो, चंदा मामा मुस्करा रहे हैं।
आओ चंदा मामा, गोल-गोल चेहरे वाले चंदा मामा, आओ ना!

— आकिको हायाशी; हिंदी अनुवाद — मंजुला माथुर

चित्रकारी और लेखन

'चंदा मामा' कहानी को चित्रों की सहायता से फिर से बताइए। कुछ वाक्य भी लिखिए—

© NCERT
not to be republished

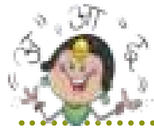

शब्दों का खेल

अक्षरों को क्रम में रखते हुए शब्द बनाइए –

त	रा		→	....
ल	द	बा	→	....
स्ते	म	न	→	....
स्क	मु	रा	→	....
शप	ग	प	→	....
अं	रा	धे	→	....

खोजें-जानें

रोज़ रात में चाँद को देखिए और चाँद का आकार बनाइए।

शिक्षण-संकेत – बच्चों को यह गतिविधि एक महीने तक करने के लिए प्रोत्साहित कीजिए। चाँद के घटते-बढ़ते आकार के बारे में भी चर्चा कीजिए।

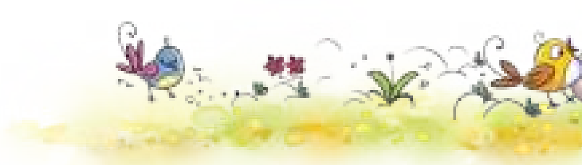

© NCERT not to be republished

24

आनंदमयी कविता

गिरे ताल में चंदा मामा

गिरे ताल में चंदा मामा,
सबने देखा सबने देखा,
फँसे जाल में चंदा मामा,
सबने देखा सबने देखा।
सबने देखा एक अचंभा,
मछुआरे ने जाल समेटा,
कहीं नहीं थे चंदा मामा,
कहाँ गए जी चंदा मामा।

—राजेश जोशी

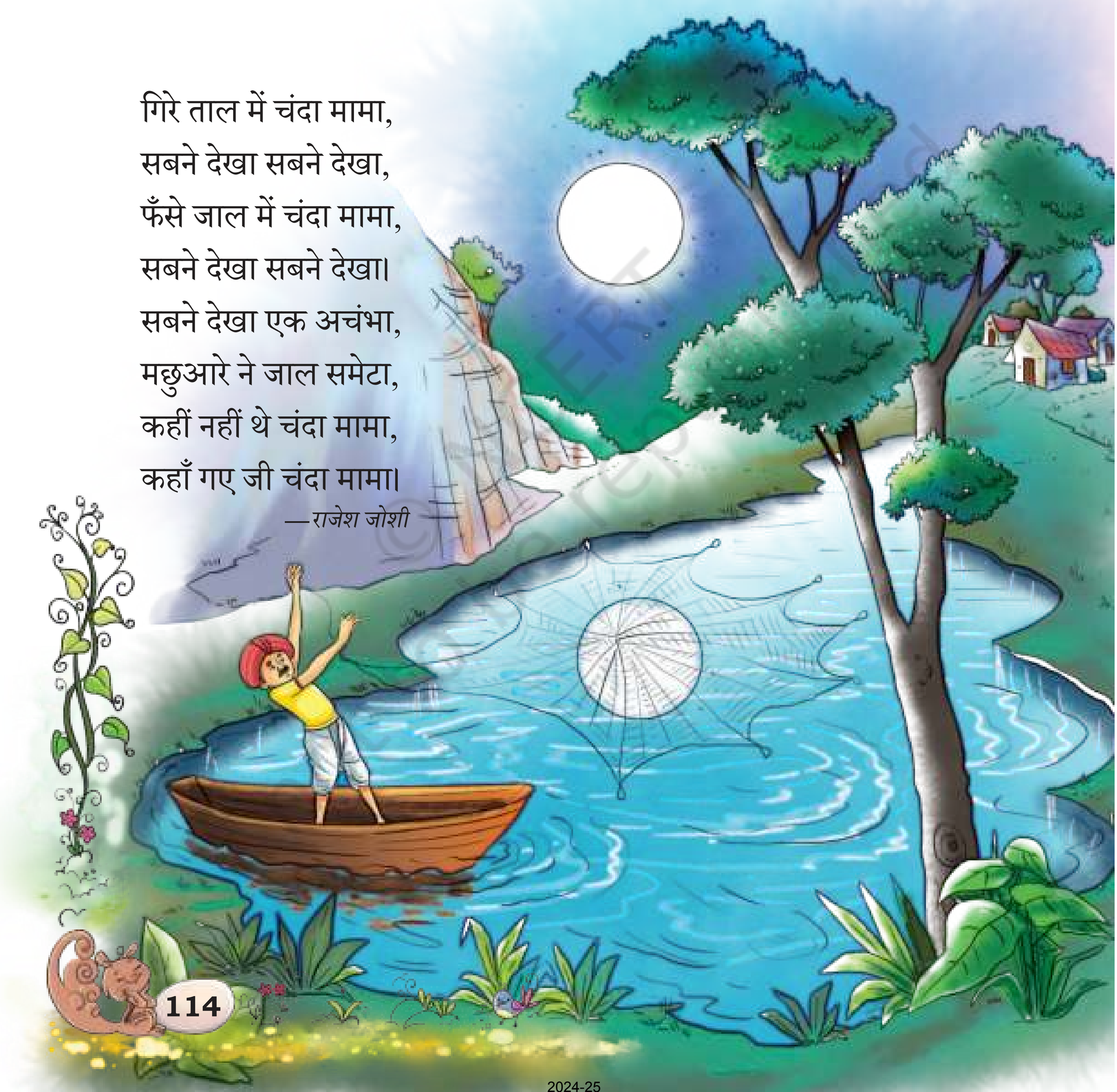

शब्दों का खेल

1. **कविता में 'अचंभा' शब्द आया है। कविता पढ़कर अनुमान लगाइए कि इस शब्द का अर्थ क्या हो सकता है?**
2. **नीचे दिए हुए किस वाक्य में 'अचंभा' शब्द का सही प्रयोग हुआ है?**
   - यह देखकर अचंभा हुआ कि सूरज प्रकाश देता है।
   - यह देखकर अचंभा हुआ कि चाँद रात में दिखता है।
   - यह देखकर अचंभा हुआ कि आधे मैदान में बारिश हुई और आधा मैदान सूखा था।
3. **इस कविता में चंदा मामा की जगह पर सूरज दादा कहकर इस कविता को पढ़िए। अपनी नई कविता को कॉपी में लिखिए।**

मिलकर पढ़िए

चाँद की रोटी,
पानी में आई,
मछली फिर भी,
खा न पाई।

— मोहम्मद साजिद खान

सोचिए और लिखिए –

1. चाँद की रोटी किसे कहा गया है?
2. मछली चाँद की रोटी क्यों नहीं खा पाई होगी?

शिक्षण-संकेत – बच्चे 'अचंभा' का जो भी अर्थ बताएँ, उस पर बच्चों से बातचीत कीजिए।

© NCERT not to be republished

25

मिलकर पढ़िए

सबसे बड़ा छाता

बारिश! झमा-झम बारिश!
लगातार बारिश!
छत पर झमा-झम। घर में टप-टप।
और आँगन में... छप-छपाक।
गीला हो गया बिस्तर,
अम्मा की साड़ी,
और दादी का कंबल।

गीला और सर्द
हो गया पूरा शहर।
लेकिन मैं, मेरे पास है छाता।
छाते के भीतर मैं और सलीम।
बिलकुल सूखे और गरम।

मैंने छाते में टिल्लू को भी बुलाया।
अब टिल्लू बिलकुल सूखा।
मैं और सलीम कुछ गीले-गीले से।

© NCERT not to be republished

मैंने दयाल चाचू से बड़ा
छाता माँग लिया।
अब सब छाते के अंदर।
फिर लता और मोनू भी आ गए।
बड़ा छाता पड़ गया छोटा।

दयाल चाचू से और बड़ा छाता
ले आए।
अब सब छाते के अंदर।
शलीन और सनत भी आ गए।
और बड़ा छाता पड़ गया छोटा।

दयाल चाचू से बहुत बड़ा
छाता ले आए।
अब सब छाते के अंदर।
सोनू, हामिद, हरमीत सब
के सब आ गए।
बहुत बड़ा छाता भी पड़
गया छोटा।

दयाल चाचू बहुत बड़े छाते से बहुत-बहुत बड़ा छाता दो।
दयाल चाचू ने कहा— इससे बड़ा छाता तो बनता ही नहीं।
बड़ा होकर मैं दुनिया का सबसे बड़ा छाता बनाऊँगा।
आसमान जितना बड़ा! जो बारिश में पूरे शहर को छुपा लेगा।
टिल्लू, सलीम, अम्मा, चाचू, राकेश, हामिद, हरमीत, शलीन
और सनत। सब होंगे छाते के भीतर। सूखे और गरम।
बारिश! झमा-झम बारिश!
घर में टप-टप।
और आँगन में... छप-छपाक।

—मनोज कुमार

(प्रकाशक: रूम टू रीड इंडिया ट्रस्ट)

© NCERT not to be republished

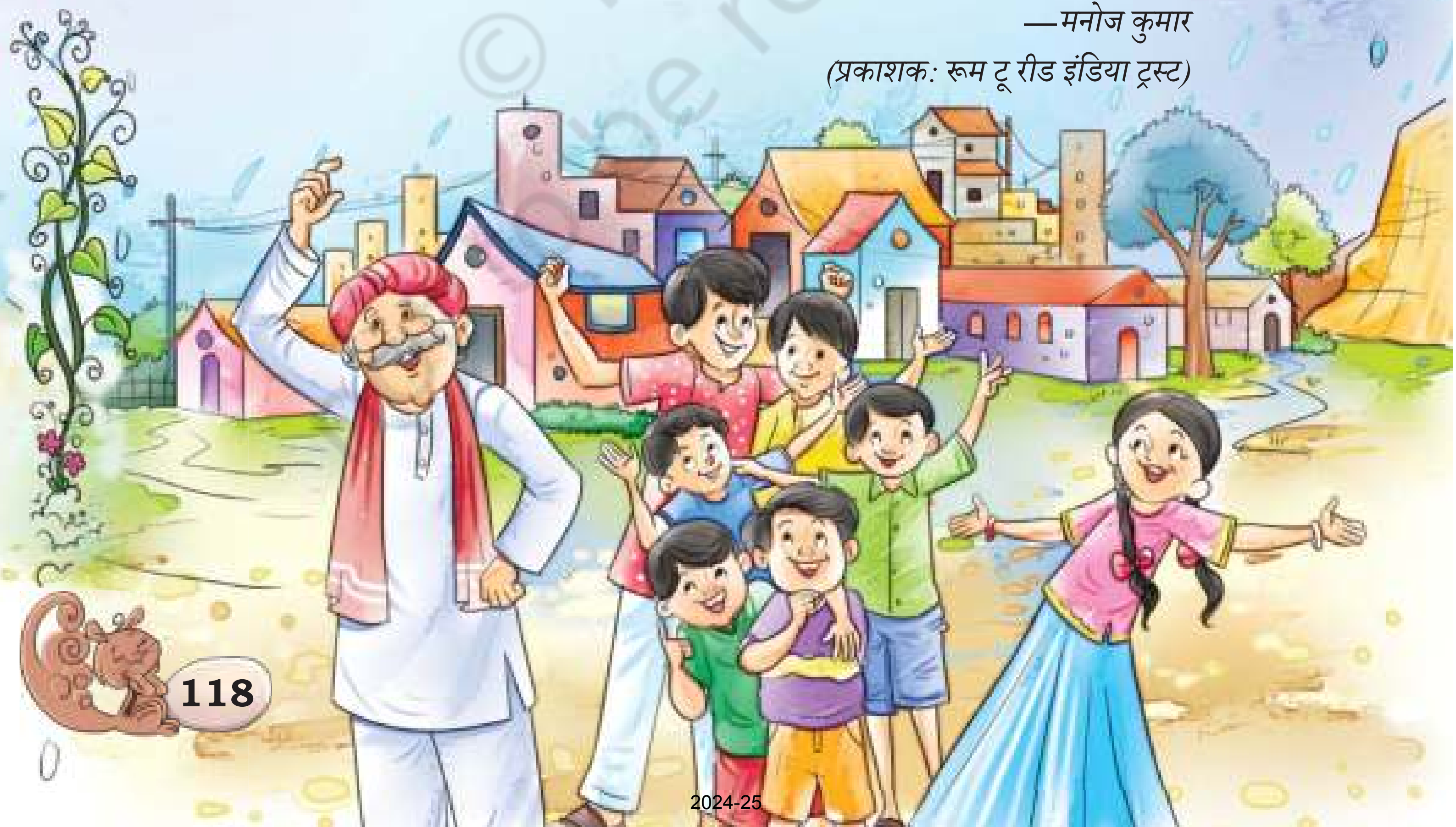

बातचीत के लिए

1. बारिश से जुड़े अपने अनुभव बताइए।
2. आप बड़े होकर क्या बनाना चाहेंगे?
3. क्या सचमुच कोई इतना बड़ा छाता बना सकता है कि पूरी दुनिया के बच्चे उसमें आ जाएँ?
4. छाते में ऐसा क्या होता है कि हम बारिश में भी गीले नहीं होते?

नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी कॉपी में लिखिए–

1. हर बार छाता क्यों छोटा पड़ता था?
2. हर बार बड़ा छाता कौन देते थे?
3. इस कहानी में आए सभी बच्चों के नाम लिखिए।
4. बारिश में क्या-क्या गीला हो गया?

खेल-खेल में

वर्षा की बूँदें धरती पर गिरती हैं तो कैसी ध्वनि सुनाई देती है? इस तरह करके देखिए–।

1. आँखें बंद कीजिए और बाईं हथेली खोलकर रखिए।
2. दाएँ हाथ की तर्जनी से बाईं हथेली पर बजाकर देखिए।
3. फिर से दो उँगलियों से बजाकर देखिए।
4. फिर से तीन उँगलियों से बजाकर देखिए।
5. फिर से चार उँगलियों से बजाकर देखिए।

© NCERT not to be republished

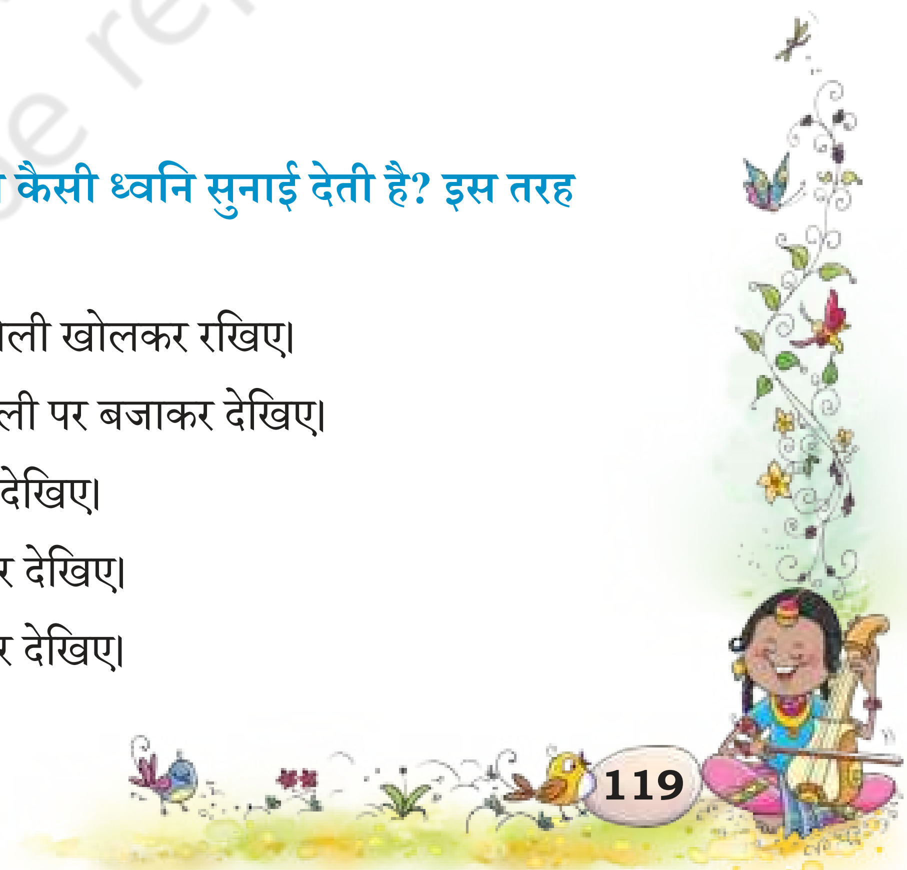

शब्दों का खेल

हर बार बड़ा छाता छोटा पड़ जाता था।

बड़ा और **छोटा** इन दोनों शब्दों के अर्थ एक-दूसरे से विपरीत हैं। जैसे दिन और रात।

नीचे दी गई तालिका से दिए गए शब्दों के विपरीत अर्थ वाले शब्द ढूँढ़कर लिखिए –

नी	इ	दो	दि	न	सो
से	चे	उ	जा	ला	ना
अ	च	बा	एँ	पा	जै
सो	ना	ल	सू	खा	स
बा	ह	र	अ	ने	क

ऊपर .... दाएँ ....

अंदर .... रात ....

एक .... दूर ....

अँधेरा .... गीला ....

पढ़िए, समझिए और लिखिए

1. दिन में सूरज, ... में तारे दिखते हैं।
2. .... बोलें, झूठ नहीं।
3. ऊपर आकाश और .... धरती है।

© NCERT not to be republished

नीचे दिए गए शब्दों की सहायता से पाँच से छह वाक्य लिखिए –

बारिश झम-झम छाता मित्र सहायता
दोपहर घर स्कूल छुट्टी

मैं स्कूल से घर आ रही थी / रहा था। ....

....

....

....

....

....

....

पहेली

तोते का प्यारा खाना है,
लेकिन मेरी सी-सी है,
इसका उत्तर दे सकते हो,
यह तो बात ज़रा-सी है।
....

चलती ही रहती है हरदम,
दिन हो, चाहे रात,
टिक-टिक-टिक बोला करती,
कहती है कुछ बात।
....

— श्रीप्रसाद

© NCERT not to be republished

26

आनंदमयी कविता

बादल

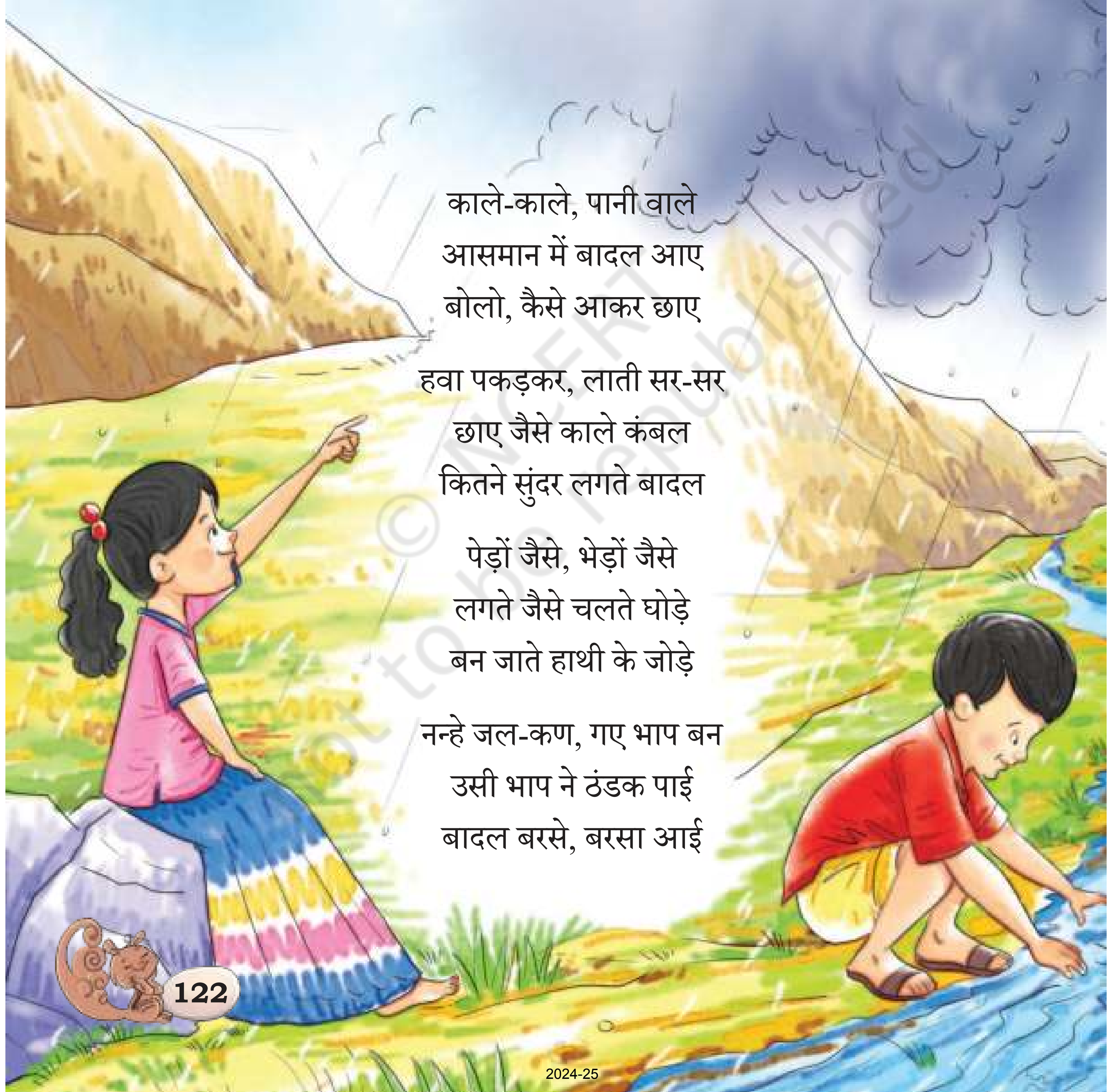

काले-काले, पानी वाले
आसमान में बादल आए
बोलो, कैसे आकर छाए

हवा पकड़कर, लाती सर-सर
छाए जैसे काले कंबल
कितने सुंदर लगते बादल

पेड़ों जैसे, भेड़ों जैसे
लगते जैसे चलते घोड़े
बन जाते हाथी के जोड़े

नन्हे जल-कण, गए भाप बन
उसी भाप ने ठंडक पाई
बादल बरसे, बरसा आई

© NCERT not to be republished

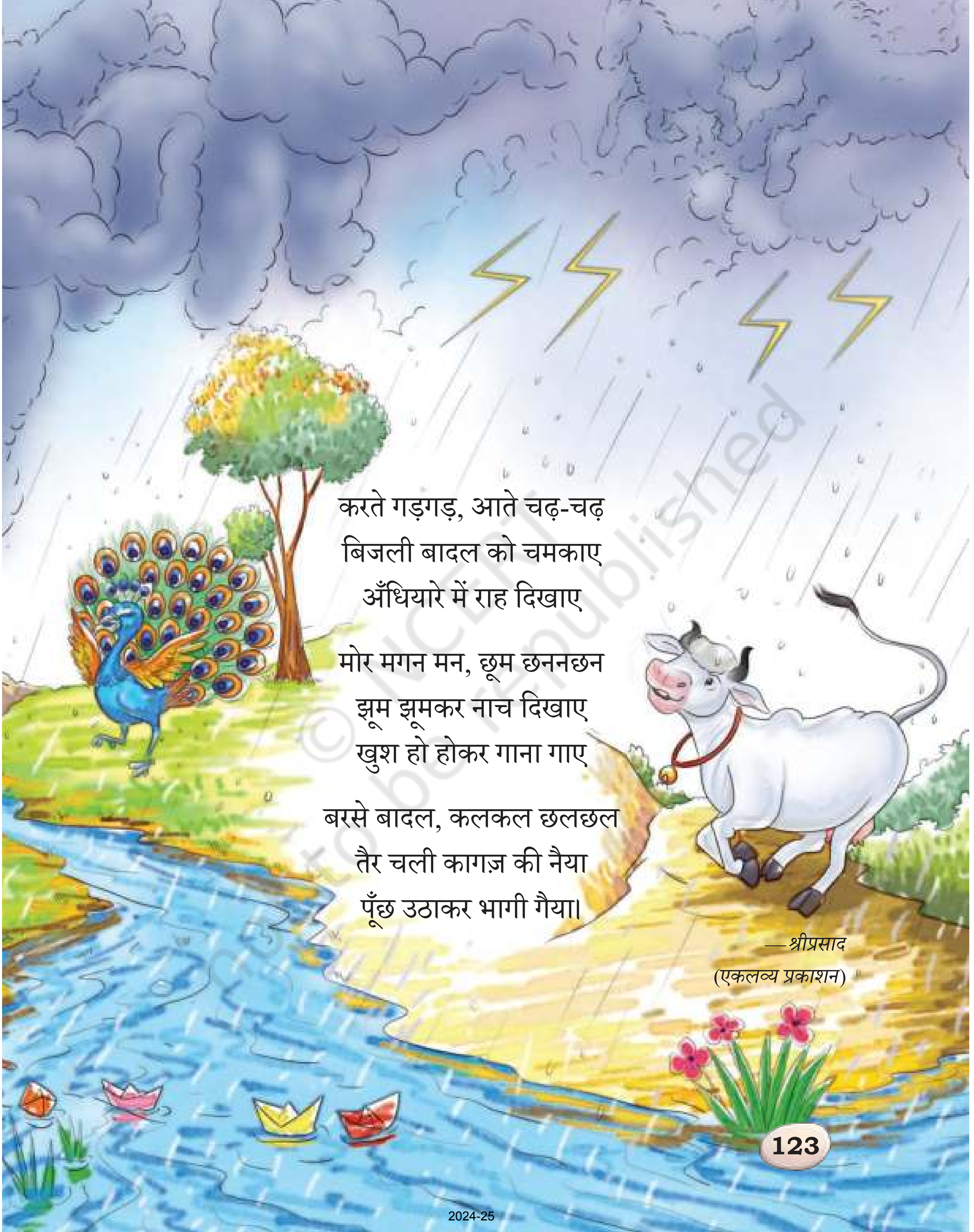

करते गड़गड़, आते चढ़-चढ़
बिजली बादल को चमकाए
अँधियारे में राह दिखाए

मोर मगन मन, छूम छननछन
झूम झूमकर नाच दिखाए
खुश हो होकर गाना गाए

बरसे बादल, कलकल छलछल
तैर चली कागज़ की नैया
पूँछ उठाकर भागी गैया।

—श्रीप्रसाद
(एकलव्य प्रकाशन)

© NCERT not to be republished

बातचीत के लिए

1. बारिश आने से पहले कैसा मौसम होता है?
2. बारिश कैसे होती है?
3. आपको बारिश के मौसम की सबसे अच्छी बात क्या लगती है?
4. क्या बारिश से कभी कोई परेशानी भी होती है?

कविता के आधार पर उत्तर लिखिए –

1. बादल कैसे बरसते हैं? ....
2. मोर कैसे नाचते हैं? ....
3. हवा कैसे चलती है? ....

चित्रकारी और लेखन

जब आसमान में बादल हों, आसमान को ध्यान से देखिए। आपको कौन-कौन से आकार दिखाई देते हैं? इन बादलों के आकारों के चित्र अपनी कॉपी में बनाइए। आसमान और बादलों के बारे में कुछ वाक्य भी लिखिए।

खोजें-जानें

समाचार पत्र में मौसम की जानकारी अपने मित्रों के साथ मिलकर पढ़िए।

शिक्षण-संकेत – समाचार पत्र पढ़ने में बच्चों की सहायता कीजिए। यह गतिविधि नियमित रूप से करवाएँ।

© NCERT not to be republished

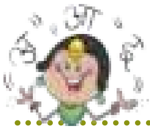

शब्दों का खेल

1. ‘बादल’ शब्द सुनने पर आपको बिजली, मोर आदि की तरह अन्य कौन से शब्द याद आते हैं? इन शब्दों को लिखिए और आपके शब्द ‘बादल’ शब्द से कैसे जुड़ते हैं, सभी को बताइए–

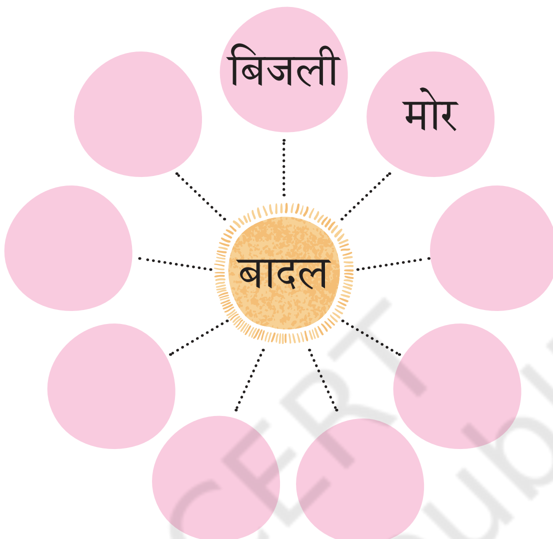

2. मिलान कीजिए और नए शब्द बनाइए–

मोर	मुखी	मोरपंख
रात	बहार	
सूरज	पंख	
नील	जामुन	
गुलाब	पत्र	
समाचार	गाय	
सदा	रानी	

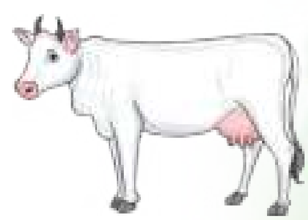

शिक्षण-संकेत – शब्दों को पढ़ने में और शब्द बनाने में बच्चों की सहायता कीजिए।

© NCERT not to be republished

3. कविता में देखकर सही शब्द चुनकर लिखिए –

(i) हवा .... लाती सर-सर।

(ii) नन्हें जल-कण गए .... बन।

(iii) .... मगन मन, ... छननछन।

(iv) बरसे .... कलकल .... ।

(v) तैर चली .... की नैया .... उठाकर .... गैया।

4. इन शब्दों को पढ़िए। बच्चों और वस्तुओं के नामों को अलग-अलग लिखिए –

टिल्लू शक्कर मुन्ना गन्ना लड्डू मक्खन मुन्नी
रग्घू हल्दी मुन्नू भुट्टा बस्ता पप्पू

बच्चों के नाम	वस्तुओं के नाम
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

शिक्षण-संकेत – आधे वर्णों की ध्वनियों को समझने में बच्चों की सहायता कीजिए।

5. नीचे दिए गए चित्रों का मिलान सही शब्द से कीजिए –

जल

वृक्ष

मेघ

पृथ्वी

लेखन

चित्र देखिए और दिए गए शब्दों से रिक्त स्थानों को भरिए –

पानी, बादल, भाप, बूँदें, गरमी

1. सूरज के प्रकाश से .... बढ़ती है।
2. गरमी पानी को .... बनाती है।
3. भाप ऊपर जाकर .... बनाती है।
4. बादल नन्हीं-नन्हीं .... बरसाते हैं।
5. नदी-नालों में .... भर जाता है।

© NCERT not to be republished

पहेली

1. काली भूरी नीली है,
लाल गुलाबी पीली है,
बरखा से यही बचाती है,
धूप नहीं आ पाती है।
रहती है सिर के ऊपर,
फैली रहती है तन कर,
सुंदर सी है, जानो तुम,
अपने सिर पर तानो तुम।

2. ऊपर देखो उड़ा जा रहा,
मुड़ा जा रहा अब ये,
लेकिन वापस भी आएगा,
मगर न जानें कब ये।
आसमान में उड़ जाता है,
डैने कितने भारी,
क्या चिड़िया है,
अरे नहीं, यह काफ़ी बड़ी सवारी।

—श्रीप्रसाद

© NCERT not to be republished

खोजें-जानें

कक्षा में अपने शिक्षक की सहायता से समाचार पत्र में बारिश / आसमान / चाँद / तारे आदि से संबंधित कोई समाचार पढ़िए।

चित्रकारी और लेखन

नीचे दिए गए चित्र में रंग भरिए। चित्र के आधार पर पाँच से छह वाक्य लिखिए–

....

....

....

....

....

....

शिक्षण-संकेत – इस तरह की गतिविधियाँ बच्चों से नियमित रूप से करवाएँ।

© NCERT not to be republished

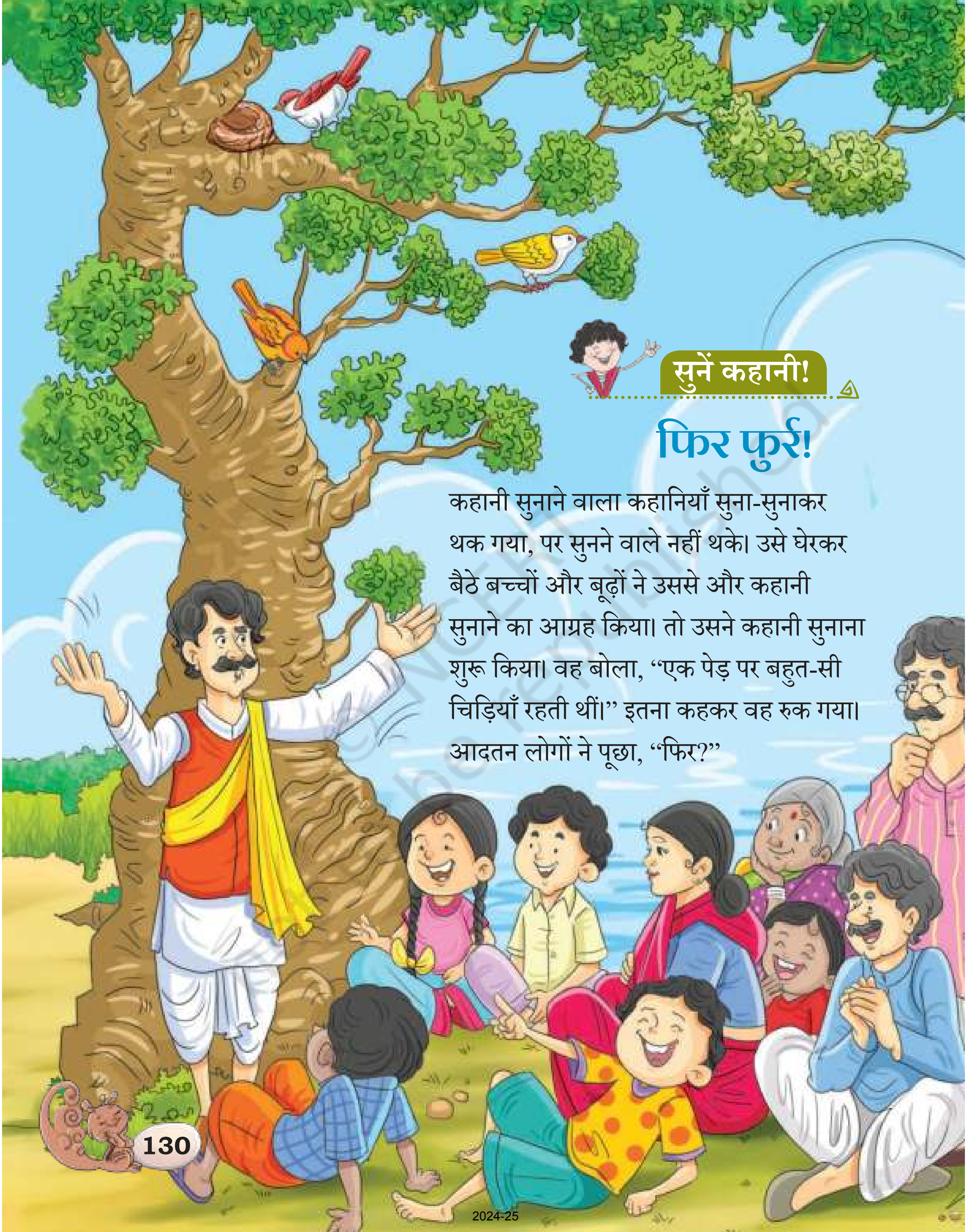

सुनें कहानी!

फिर फुर्र!

कहानी सुनाने वाला कहानियाँ सुना-सुनाकर थक गया, पर सुनने वाले नहीं थके। उसे घेरकर बैठे बच्चों और बूढ़ों ने उससे और कहानी सुनाने का आग्रह किया। तो उसने कहानी सुनाना शुरू किया। वह बोला, “एक पेड़ पर बहुत-सी चिड़ियाँ रहती थीं।” इतना कहकर वह रुक गया। आदतन लोगों ने पूछा, “फिर?”

कहानी सुनाने वाले ने कहा, “एक चिड़िया पेड़ से उड़ी – फुर्र!”

“फिर?”

“फिर एक चिड़िया पेड़ से उड़ी – फुर्र!”

“फिर?”

“फिर एक चिड़िया पेड़ से उड़ी – फुर्र!”

“फिर?”

“फुर्र!”

बहुत देर तक यही चलता रहा। “फिर?” “फुर्र!” “फिर?” “फुर्र!” “फिर?” “फुर्र!” से लोग थक गए।

अंतत: एक बच्चे ने पूछा, “यह कब तक चलेगा?”

कहानी सुनाने वाले ने कहा, “जब तक सारी चिड़ियाँ उड़ नहीं जाती!”

— साभार, मराठी लोककथा, एनबीटी

© NCERT not to be republished

रंग भरिए

दिए गए चित्र में मनचाहे रंग भरिए –

© NCERT not to be republished